॥ श्रीजिनाय नमः ॥

न्यामत-विलास

अंक १३

अनाथ-रुदन

(१)

चाल—रघुवर कौशल्या के लाल । मुनिकी यज्ञ रचाने वाले ॥

सुनियों भारत के सरदार म्हारी धीर बंधाने वाले ।
धीर बंधाने वाले । म्हारी धीर बंधाने वाले ॥ टेक ॥
देखो इस भारत के बीच । कैसी होगई किरया नीच ।
बैठे हाथ दानका खींच । लाखों द्रव्य रखाने वाले ॥ १ ॥
भूकों की नहीं सुनते टेर । उनको लालच ने लिया घेर ।
करते दया धरम में देर । धन को व्यर्थ लुटाने वाले ॥ २ ॥
बन गये मुसलमान ईसाई । लाखों ने है जान गंवाई ।
होते कोई नहीं सहाई । म्हारे प्राण बचाने वाले ॥ ३ ॥
आये अब तुमरे दरबार । न्यामत दिल में दया बिचार ।
करो अनाथों का उद्धार । दया का भाव दिखाने वाले ॥ ४ ॥

(२)

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

दान दीजे मदद कीजे धरम तरुवर हरा होगा ।
ग़रीबों का भला होगा तुम्हारा भी भला होगा ॥ टेक ॥
यह करयुग है वह मूरख हैं जो कहते हैं इसे कलियुग ।
जो कोई जैसा करता है फल उसका बरमला होगा ॥ १ ॥
सताता है ग़रीबों को दुखाता है किसी का दिल ।
देख लेना किसी दिन दार पै वहभी चढ़ा होगा ॥ २ ॥
दया करते हैं औरों पै वही सुख चैन पाते हैं ।
जो ज़ालिम खुदग़रज होगा नहीं फूला फला होगा ॥ ३ ॥
खिलाता है जो औरों को उसीका दिल खिला होगा ।
जो छीले और के दिल को उसीका दिल छिला होगा ॥४॥
अनाथोंको जो दुख होगा नहीं तुमको भी सुख होगा ।
अगर यह आह मारेंगे शहर जङ्गल जला होगा ॥ ५ ॥
यतीमों की, अनाथों की, ग़रीबों की खबर लेना ।
कहै न्यामत तुम्हें इसका किसी दिन फल मिला होगा ॥ ६ ॥

---

(३)

चाल—दिये दुख यह फ़लक ने भारे । चले छोड़ के राज बिचारे ॥

दिये दुख यह करम ने भारे,
फिरें घर घर दीन बिचारे ॥ टेक ॥

(३)

हा ! लाखों हिन्दू भाई ।
बने मुसलमान ईसाई जी ॥
हैं फूटे भाग हमारे । फिरें० ॥ १ ॥
यह पापी पेट हमारा ।
जो तजकर धर्म पियारा जी ॥
हुवे यहुदी और निसारे । फिरें० ॥ २ ॥
कहो किस के ढिंग हम जावें ।
अरु किसको विपत सुनावें जी ॥
चलें ग़म के जिगर पर आरे । फिरें० ॥ ३ ॥
टुक करुणा चित्त में कीजे ।
कौड़ी पैसा जोहो सो दीजे जी ॥
हम मांगत हाथ पसारे । फिरें० ॥ ४ ॥
नहीं लोगे सुध हमारी ।
हो करम धरम की ख्वारी जी ॥
और जावेंगे प्राण हमारे । फिरें० ॥ ५ ॥
दीनन को देना पैसा ।
नहीं और धरम कोई ऐसा जी ॥
कहे न्यामत साफ पुकारे । फिरें० ॥ ६ ॥

---

(४)

चाल—यह कैसे बाल हैं बिखरे, यह सूरत क्यों बनी ग़म की ॥

अनाथों की मदद करना कराना ही मुनासिब है ।

भूक से प्राण भूकों के बचाना ही मुनासिब है ॥ टेक ॥
भूर और बागबाड़ी में लुटाना धन नहीं अच्छा ।
दान देकर अनाथालय बनाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
बने हैं सैंकड़ों भाई मुसलमान और ईसाई ।
धरम उनका तुम्हें यारों बचाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
कौड़ी पैसा जो कुछ चाहो सो देदीजे कृपा कीजे ।
धर्म के काम में धन को लगाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
दया जब से तजी तुमने दशा बिगड़ी है भारत की ।
दया दुखियों पै अब करना कराना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥
तरक्की का ज़माना है नहीं है वक्त सोने का ।
कहे न्यामत ख्वाब से सर उठाना ही मुनासिब है ॥ ५ ॥

---

(५)

चाल—है बहारे बाग दुनिया चन्द रोज़ ॥

पाप में धन का लगाना छोड़दो ।
छोड़दो बहरे प्रभु तुम छोड़दो ॥ टेक ॥
कुछ यतीमों की मदद मिल कीजिये ।
सख्त दिल करना कराना छोड़दो ॥ पापमें० ॥ १ ॥
दुख अनाथों को दिया तुम ने दिया ।
अब यतीमों का सताना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ २ ॥
धन लुटा कङ्गाल भारत को किया ।

व्यर्थ व्यय करना कराना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ३ ॥
देश की चीज़ों से प्रीती कीजिये ।
दूसरे देशों का बाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ४ ॥
चुर्ट तम्बाकू ने भारत खो दिया ।
भंग चरस पीना पिलाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ५ ॥
अब परसपर में प्रीती कीजिये ।
दूसरों के सिर भिड़ाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ६ ॥
फ़ैसले आपस में मिल करके करो ।
लड़ अदालत बीच जाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ७ ॥
नाच भारत को नचाया खूब सा ।
रण्डी भड़वों का नचाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ८ ॥
लुट चुकी सारी बहार अब हिन्द की ।
बाग़बाड़ी का लुटाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ ९ ॥
न्यायमत उपकार औरों का करो ।
खुदग़रज़ बनना बनाना छोड़दो ॥ पाप में० ॥ १० ॥

---

(६)

चाल—पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

सरदार क़ौम जैन तुम्हें जय जिनेन्द्र हो ।
जय जय जिनेन्द्र हो तुम्हें जय जय जिनेन्द्र हो ॥ टेक ॥
जिन धर्म की बिगड़ी हुई हालत दिखायेंगे ।
बतलायेंगे उपाय भी जय जय जिनेन्द्र हो ॥ सर० ॥ १ ॥

गर उन्नति चाहो तो अनाथों का पक्ष लो ।
और उनकी मदद कीजिये जयजय जिनेन्द्र हो सर० ॥२॥
बन जायेंगे अनाथ ही पण्डित वो लेक्चरार ।
नय्या उभार देंगे यही जय जय जिनेन्द्र हो । सर० । ३ ।
विद्या के बिना उन्नति ख्वाबो ख़याल है ।
कालेज को खोल दीजिये जयजय जिनेन्द्र हो सर० ॥४ ।
जागो विचारो वक्त यह सोने का नहीं है ।
न्यामत कहे पुकारे उठो जय जय जिनेन्द्र हो ॥ सर० ५ ॥

---

(७)

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥

सुनो तुम जैन सरदारो
जरा दिल में दया धारो ।
हमारी ओर भी साहब
निहारोगे तो क्या होगा ॥ टेक ॥
दान देकर संवारे हैं
हजारों काम औरों के ।
दशा बिगड़ी हमारी भी
संवारोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥
यतीमों की पड़ी बेड़ी
है आकर शोक-सागर में ।
दया करके जरा उसको

उभारोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥
दया जिन मत की है मशहूर
हर मुल्कों में शहरों में ।
अनाथों पर दया साहिब
बिचारोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
तरक्क़ी जैन मत चाहो
अनाथों की मदद कीजे ।
बिपत न्यामत यतीमों की
निवारोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥

———o———

(८)

चाल—इलाजे दर्दे दिल तुम से मसीहा हो नहीं सकता ॥
अनाथों का रुदन सुनिये
ज़रा दिल में दया धरके ।
ध्यान करके ग़ौर करके
कलेजे को थाम करके ॥ टेक ॥
उमर बाली गई लाली
यह बदहाली न को वाली ।
मुसीबत कर्म ने डाली
क़हतसाली नाम धरके ॥ १ ॥
गया क़ारूं खज़ाने छोड़
खाली हाथ दुनिया से ।

जगत में यश ज़रा लीजे
कोई यश का काम करके ॥ २ ॥
धरम को छोड़ जीते हैं
समझ लीजे वह मुरदा हैं
वह ज़िन्दा हैं मरे हैं जो
कोई अच्छा काम करके ॥ ३ ॥
सदा रहना नहीं जग में
किसी दिन यां से जाना है ।
बुरा गुम नाम जाना है
चलो जग में नाम करके ॥ ४ ॥
अनाथों की मदद कीजे
दोऊ जग में सुयश लीजे ।
दयाही धर्म है न्यामत
कहै तख़्त अज़ बाम करके ॥ ५ ॥

---

(९)

चाल—अब तुम बिन लक्ष्मन भय्या नय्या डूब चली मेरी ॥

नहीं सुनता कोई पुकार हमारी
कहा करें भगवान ॥ टेक ॥
कहां हरिश्चंद्र से दानी
बेच दई तारा सी राणी ॥
बेच दिया रोहतास

आप जा बसे हैं बीच मसान ॥ १ ॥
विशुनुकुमार मुनी सुखकारी
दया धरम की बात विचारी ।
धरकर बावन रूप मुनी का
संघ बचाया आन ॥ २ ॥
बड़े बड़े धन्नाड कहावें
बे मतलब धन व्यर्थ लुटावें ।
कोई कहः धरम की बात
नहीं वह सुनते देकर कान ॥ ३ ॥
सुनो अनाथालय सरदारो
मत अपनी हिम्मत को हारो ।
कहै न्यामत हिम्मत रक्खो
सुनेंगे कबतक नहीं धनवान ॥ ४ ॥

---

(१०)

चाल—फ़लक से अय शहे आलम । ग़ज़ब टूटा ग़ज़ब टूटा ॥

अनाथालय का यह जलसा
मुबारिक हो मुबारिक हो ।
जैन दल को अपील इसका
मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ टेक ॥
अनाथों की विपत खोना
धरम उपदेश का होना ।

दान के बीज का बोना
मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ १ ॥
कामधेनू कल्पतरुवर
कहा चिन्तामणी क्या है ।
अनाथालय ! अनाथालय !!
मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ २ ॥
दान ही सार जग में है
मगर किस को दान दीजे ।
अनाथों को ! अनाथों को !!
मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ३ ॥
घड़ी धन आज की यह है
सजन संगत धरम चरचा
कहै न्यामत आज का दिन
मुबारिक हो मुबारिक हो ॥ ४ ॥

---

(११)

चाल—बूंटी लाने का कैसा बहाना हुआ । बूंटी लाने का० ॥

कैसे कर्मों का ज़ाहिर में आना हुआ । कैसे कर्मों का०
सारा यकदम बिगाना ज़माना हुआ । कैसे कर्मों० ॥ टेक ॥
मुए जननी वो भ्रात, रहा कोई न साथ,
दुखी दिन और रात, पिता तीरे अजल का
निशाना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ १ ॥

हुवे ऐसे अभाग, छोड़ा अपनों ने राग,
दिया सबही ने त्याग, भाव करुणा का दिल से
रवाना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ २ ॥
ऐसी हालत है आज, दाने २ मोहताज,
कीजे कौन इलाज, हाल आकर यहां पै
सुनाना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ ३ ॥
अच्छे कुल के हैं बाल, काहे करते सवाल,
जो न आता वबाल, अब तो घर घर अलख
का जगाना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ ४ ॥
वक्त विद्या अनुकूल, जासके ना स्कूल,
रहे नादान फूल, बालापन का जमाना
वीराना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ ५ ॥
थे ये कर्मों के लेख, दुख पाये अनेक,
टरे टारा न एक, क़हतसाली का नाहक़
बहाना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ ६ ॥
होके भूके बेचैन, प्यारा प्राणों से जैन,
तज धारा करिसचेन, हाय लाखों को दुरगत
में जाना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ ७ ॥
सही जाय न पीर, होके आतुर अधीर,
आये आपु के तीर, यह समझ के कि अब तो
ठिकाना हुआ। कैसे कर्मों का० ॥ ८ ॥
कहां पगपग निधान, राजा कर्ण महान,
जग सेठ सुजान, जिनका दान से स्वर्ग

ठिकाना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ ९ ॥

हरिश्चंद्र दातार, बेची तारा सी नार,

रोहतास कुमार, दान देने में यकता ज़माना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ १० ॥

उनके कुलमें अबार, लिया तुमने औतार,

दान दीजे संवार, जो हिसार में यतीमख़ाना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ ११ ॥

कौड़ी पैसा जो हो, करके करुणा सो दो,

दूजा धरम न को, है ये भगवत का शासन बखाना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ १२ ॥

म्हारी जावेगी जान, होगी धर्म की हान,

घट जावेगी कान, दान देने में गर कुछ बहाना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ १३ ॥

कहै न्यामत बिचार, दान है जग में सार,

दोनों भव का सिंगार, इसका फल स्वर्ग शिव सबका माना हुआ । कैसे कर्मों का० ॥ १४ ॥

इति अनाथरुदन समाप्त ॥

नोटिस

न्यामतविलासके २० अंक निम्न लिखित तय्यार हो चुके हैं मगर अभी तक वह ही अंक छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है॥

अंक	नाम	मूल्य	
		शास्त्री	उर्दू
१	न्यामत विलास सूची॥		
२	मंगला चरण.		
३	गायन शिक्षा.		
४	चौवीस जिनराज जयमाल.		
५	पंचकल्याणक नाटक		
६	अरिहंत गुण माला.		
७	जैनभजन मुक्तावली................	=)	-)
८	गजल भजन एकादशी.............	-)	०
९	स्त्रीगान जैनभजन पच्चीसी	-)॥	०
१०	कलयुग लीला भजनावली.............	-)॥	-)॥
११	कुन्ती नाटक................................	=)	०
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	॥=)	।=)
१३	अनाथ रुदन................................	-)	
१४	जैन कालिज भजनावली-		
१५	रामचरित्र भजन मंजरी-		
१६	गजल बैराग माला-		
१७	ईश्वर सरूप दर्पण-		
१८	जैन भजन शतक........................	।)	०
१९	थ्येट्रीकल जैन भजन मन्जरी.......	=)	=)
२०	मैना सुन्दरी नाटक........................	१॥)	

JAIN RELIGIOUS TRACT SERIES NO. 19

न्यामत बिलास-अंक १९

NIAMAT-VILAS, 19.

अटपीकह जैन भजन मंजरी

प्रणेता

न्यामत सिंह जैनी

सैक्रेटरी 'डिस्टरिक्ट बोर्ड' हिसार

श्रीवीर निर्वाण सम्वत २४४१

चौथीवार २००० कापी (सन् १९१५) मूल्य =)

पं० घासीराम त्रिपाठी के देशोपकारक प्रेस लखनऊ में छपी





श्रीजिनेन्द्रायनमः

न्यामत विलास अंक १९

थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी

१

चाल--[नाटक] क़िममत सबपर लाती आफ़त ॥

तू हितकारी नाथ जगतका महिमा तेरी अपरमपार ॥
सबके हितु तुम सब जीवनको शिव मग दरसाया सुखकार ॥
सूरज चंदर इंदर सुर नर गावें सब तेरा उपकार ॥
खंडन कर पाखंड जगतके दिखलाया सतका ब्यवहार ॥
सब भ्रम मिटा दिया-सतासत दिखा दिया ॥
मोह तम हटा दिया-रसते लगा दिया ।
तेरे नाम को रटें-मिथ्यातसे हटें ॥
पापों से हम छुटें-न्यामत करम कटें ॥ तू० ॥

२

चाल-(क़व्वाली) हुवा सुत राम जशरथके बहादुर हो तो ऐसाहो ॥

न द्वेषी हो न रागी हो सदानन्द बीतरागी हो ॥
वह सब बिषयोंका त्यागी हो जो ईश्वर हो तो ऐसाहो ॥१॥
न खुद घट घटमें जाता हो मगर घट घटका ज्ञाता हो ॥
वह सत उपदेश दाता हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥२॥

न करता हो न हरता हो नहीं अवतार धरताहो ॥
मारता हो न मरता हो जो ईश्वरहो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
ज्ञानके नूरसे पुर नूर हो जिसका नहीं सानी ॥
सरासर नूर नूरानी जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
न क्रोधी हो न कामी हो न दुश्मन हो न हामी हो ॥
वह सारे जगका स्वामी हो जो ईश्वर होतो ऐसाहो ॥५॥
वह ज़ाते पाक हो दुनियाके झगड़ों से मुबर्रा हो ॥
आलिमुल गैव हो वेऐब ईश्वर हो तो ऐसाहो ॥ ६ ॥
दयामय हो शान्त रस हो परम वैराग मुद्रा हो ॥
न जाविर हो न क़ाहिर हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥७॥
निरंजन निर्विकारी हो निजानन्द रस विहारी हो ॥
सदा कल्याणकारी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ८ ॥
न जग जंजाल रचता हो करम फलका न दाता हो ॥
वह सब बातोंका ज्ञाता हो जो ईश्वर होतो ऐसाहो ॥९॥
वह सच्चिदानन्द रूपी हो ज्ञान मय शिव सरूपी हो ॥
आप कल्याण रूपी हो जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥१०॥
जिस ईश्वरके ध्यान सेती बने ईश्वर कहे न्यामत ॥
वही ईश्वर हमारा है जो ईश्वर हो तो ऐसा हो ॥ ११ ॥

३

चाल-(क़व्वाली) इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

जगत करता नहीं ईश्वर अगर होवे तो मैं जानूं ॥
सेर सू भी फ़र्क़ इसमें अगर होवे तो मैं जानूं ॥ १ ॥

ज़रा इंसाफ़ करके चार मेरी बात सुन लीजे ॥
जो करताका तुम्हें विश्वास फिर होवे तो मैं जानूं ॥ २ ॥
जो ईश्वर सर्व व्यापी है तो हरकत कर नहीं सकता ॥
कभी आकाश मुतहर्रिक अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ३ ॥
बिना हरकत किये हरगिज़ नहीं कोइ काम हो सकता ॥
कोई आकरके जितलावे अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ४ ॥
जगत साकार और ईश्वर निराकार आप मानें हैं ॥
कोई साकार नीराकारसे होवे तो मैं जानूं ॥ ५ ॥
ख़िलाफ़ होता नहीं कोई अमर क़ानून कुदरतके ॥
कोई सौ हुज्जतें लावे अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ६ ॥
हज़ारों बन गये बे बाप मां इनसान कहते हो ॥
नहीं कोई सबूत इसका अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ७ ॥
मनुश मां बापसे पैदा हो यह क़ानून कुदरत है ॥
ग़लत हुवा आपका मसला जो सच होवे तोमैं जानूं॥८॥
चाहे लन्दन फरांस इटली रूस जरमनमें फिर आवो ॥
ख़िलाफ़ इसके नहीं होगा अगर होवे तो मैं जानूं ॥ ९ ॥
वह ईश्वर सच्चिदानन्द है वह ज्ञाता और द्रिष्टा है ॥
न करता है न हरता है अगर होवे तो मैं जानूं ॥ १० ॥
बिना समझे जगत करताका लोगों को हुवा धोका ॥
न्याय पढ़ देखिये धोका न दूर होवे तो मैं जानूं ॥ ११ ॥
कहे न्यामत न्याय परमानसे तहक़ीक़ कर लीजे ॥
जगत करतामें को परमान गर होवे तो मैं जानूं ॥ १२ ॥

४

चाल-(नाटक) दिले नादांको हम समझाए जाएंगे ॥

हमतो जिनवानी सबको सुनाए जाएंगे ॥
मानो न मानो यह मंशा तुम्हारी ॥
न समझानेसे हमतो बाज़ आएंगे ॥ हम० ॥
है यह जिनवानी जो पाखंड का सब नाश करे ॥
झूटे मसलों को हटा सत्य का परकाश करे ॥
सिदक़ दिलसे जो कोई सुन्नेकी अरदास करे ।
करमों को काटके मुक्ती में वह जा बास करे ॥
फिर न दुनियाके झगड़ोंमें रगड़ोंमें लौट आएंगे ॥हम०॥१॥
न्याय परमानसे तत्वोंको दिखाया इसने ॥
जग अनादि है स्वयम सिद्ध जिताया इसने ॥
भ्रम करताका था न्यामतको, हटाया इसने ।
करता हरता है यही जीव बताया इसने ।
सदा इसकेही धनवाद गुणवाद गाए जाएंगे ॥हम०॥२॥

५

चाल-(नाटक) सुनले बीबी बातें मेरी कान लगाकर तू झट पट ॥

सुनलो ज्ञानी अब जिनवानी कान लगाकर तुम झटपट॥टेक॥
राग द्वेष कोई नहीं जामें--सत उपदेश भरा है तामें ॥
कारण शिव लजानेको । सुनलो० ॥ १ ॥
जगमें पाखंड का फैला तम--जिन बानी है सूरज के सम ।
भ्रमतम दूर हटानेको । सुनलो० ॥ २ ॥

जो तुम सच्ची मुक्ती चाहो–जिनबानीपर निश्चय लावो ॥
छोड़ो झूट बहाने को । सुनलो० ॥ ३ ॥
नय परमानको आगे रखके । न्यामत इसको निरख परखके ॥
देखो भरम मिटानेको । सुनलो० ॥ ४ ॥

६

चाल– (नाटक) तेरी छलबल है न्यारी तेरी कलबल है प्यारी ॥

तेरी बानी है प्यारी-सबहीको हितकारी ॥
कीजो कीजो प्रभू सबका उद्धार ॥
है वह सब सुखकारी-दुखहारी भवटारी ॥
करदेती है भव सागरसे पार ॥
हैं वह सारे नादान-करते नहीं जो तेरा ध्यान ॥
हित मित बैना सुनावो भगवान ॥
सप्त तत्वोंकी बात-होवे करमोंका घात--मिटे सारा मिथ्यात ॥
दोनों जगमें-एक छिनमें-एक पलमें ॥ तेरी० ॥

७

चाल–वह जो असलियत तेरी पहले थी तुझे यादहो कि न यादहो

विषे भोगमें तूने अय जीया कैसे जीको अपने लगादिया ॥
तेरा ज्ञान सूर्य्य समान था कैसे बादलों में छुपादिया ॥ १ ॥
तू तो सच्चिदानन्द रूप है तेरा ब्रह्मरूप सरूपहै ॥
जड़रूप भोग बिलासमें तूने आपनेको भुलादिया ॥ २ ॥
यह भोग शत्रु समान हैं छल कपटमें परधानहैं ॥
तेरे यार बनके तू देखले तुझे चारों गतमें रुलादिया ॥ ३ ॥

कुमताने अय न्यामत तुझे जग जालमें है फँसादिया ॥
दामन सुमत सी नारका तेरे करसे इसने छुड़ादिया ॥४॥

८

चाल--(नाटक) क़िसमत सबपर लाती आफत ॥

क्यों करतेहो निशदिन रगड़ा झगड़ा ओपसमें तकरार ॥
विगड़ जायगा देश तुम्हारा धन सम्पत सारा घरबार ॥
निर्बल होजावोगे और होजावोगे फ़रमांबरदार ॥
बल शक्ती सबकी घटजागी क्या राजा क्या साहूकार ॥
अंक तीन (३) के हैं दो-मुख जोड़के लिखो ॥
तरेसठ (६३) रक़मपढ़ो-बल इस कदर बढ़ो ॥
जब प्रेम हटगया-और मूंह उलटगया ॥
तब बल पलट गया-छत्तीस (३६) घट रहा ॥ १ ॥
ना इतफ़ाक़ीका फल ऐसा जैसा नौ (९) का कोठा यार ॥
लिखते लिखते अंक दाहना घट जावे इक अंश हरबार ॥
नौ (९) अट्ठारह (१८) सत्ताईस (२७) छत्तिस (३६)
पैंतालीस (४५) चंउवन (५४) धार ॥
घटगया एक एक अंश देखलो नौ (९) आठ (८) सत (७)-
छै (६) पंच (५) और चार (४) ॥
इतफ़ाक़ कीजिये-ग्यारा (११) को लीजिये ॥
लिख देख लीजिये-और ग़ौर कीजिये ॥
एक अंश बढ़ गया-बढ़ता चलागया ॥
न्यामत यह कह रहा मिलकर रहो सदा ॥ २ ॥

९

चाल--(क़व्वाली) सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे

सांच प्रघटे झूट बिघटे न्याय तलवार ऐसी है ॥
कोई आ देखले जिनराजकी सरकार ऐसी है ॥ १ ॥
फ़िलोसफ़ी करमकी है अटल दुनिया में अय यारो ॥
कुयुक्ती सारी कटजावे न्यायकी धार ऐसी है ॥ २ ॥
स्याद्वादांगका नेज़ा अगर मैदां में आ चमके ॥
नहीं ठैरे कोई पाखंड उसकी मार ऐसी है ॥ ३ ॥
जगत करता नहीं कोई यह नादानों का मसला है ॥
जीव करता करम हरता कही सरकार ऐसी है ॥ ४ ॥
यक़ीं सादिक़ इलम सादिक़ अमल सादिक़ यह तीनों मिल ॥
सड़क शिवकी बनी ज्रूं रेल यह हमवार ऐसी है ॥५॥
सुनो तत्वार्थ है सच्चा कलाम ईश्वरका दुनियामें ॥
निरख देखो कहे न्यामत सरे बाज़ार ऐसी है ॥ ६ ॥

१०

चाल-(क़व्वाली) इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

सांचके सामने तक़रीर झूठी चल नहीं सकती ॥
मिला देखो सांचमें झूट हरगिज़ मिल नहीं सकती ॥ १ ॥
हितोपदेशी बीतरागी आलिमुलग़ैब ईश्वर है ॥
सरूप उसका यही इसमें कुयुक्ती चल नहीं सकती ॥ २ ॥
न हरता है न करता है नहीं स्रिष्टीका रचिता है ॥
ग़लत करताका मसला इससे मुक्ती मिल नहीं सकती ॥३॥

वेदका भाष रचकर आपने करता किया क़ायम ॥
मगर करतामें कोई भी तो युक्ती चल नहीं सकती॥४॥
तुम्हारे नाम से वेदों को था बदनाम होजाना ॥
तुम्हारा दोष क्या टालेसे होनी टल नहीं सकती ॥ ५ ॥
बहकाया आज तक तो आपने भारतके लोगों को ॥
मगर समझो तुम्हारी दाल अब तो गल नहीं सकती ॥ ६ ॥
यह मुमकिन है कि फंस जावें तुम्हारे जालमें मूरख ॥
हमारे सामने तक़रीर झूटी चल नहीं सकती ॥ ७ ॥
बहका करके यूं औरों को भला फल क्या उठावोगे ॥
यह मसला है, बुराई जगमें हरगिज़ फल नहीं सकती॥८॥
न्याय परमान से तहक़ीक़ करलेना मुनासिब है ॥
न्यायमत न्यायके आगे किसीकी चल नहीं सकती ॥९॥

११

चाल--(नाटक) सदा नहीं रहनेका मेरी जान हुसनपर यूंही अकड़ताहै ॥

नहीं करताका कोई परमाण झूटपर यूंही झगड़तेहो ॥ टेक ॥
झूटी युक्ती करते हो और इतने अकड़तेहो ॥
नाहक़ लड़तेहो बीच वेदोंको रगड़तेहो ॥
सिद्ध नहीं होता है करतार ॥ झूट पर० ॥ १ ॥
कहतेहो बिन किये नहीं कोई चीज़ बने ज़िनहार ॥
तो बतलावो उस करताका कौन बने करतार ॥
तुम्हारा पक्ष मिटा अब यार । झूट पर० ॥ २ ॥
अगर कहो करता होने में है उनमान प्रमाण ॥

बिन प्रत्यक्ष अनुमान न होवे यही नयायकी आन ॥
नयायको पढ़ देखो एक बार ॥ झूठ पर० ॥ ३ ॥
बिना बाप मांके पैदा नहीं होता है इनसान ॥
कैसे हज़ारों बने, बिना मां बाप कहो परमाण ॥
हुवा झूठा सत्यार्थ तुम्हार । झूठ पर० ॥ ४ ॥
करता कार्य का जिस जिस में होता है सम्बन्ध ॥
वहां अन्वे व्यतिरेक सदा होता है सुनो मतीमन्द ॥
सिद्ध ईश्वर में करो तो यार । झूठ पर० ॥ ५ ॥
है ईश्वर सच्चिदानन्द और ज़ात पाक बे ऐब ॥
ना वह करता ना वह हरता है वह आलिमुल ग़ैब ॥
उसीका ध्यान करो सुखकार ॥ झूठ पर० ॥ ६ ॥
जो वह बनावे नाश करे, हो राग द्वेष में लीन ॥
बीतरागकी ज़ातको तुम क्यों करते हो मलीन ॥
नहीं है यह सत्यार्थ बिचार ॥ झूठ पर० ॥ ७ ॥
जगत अनादी स्वयम सिद्ध है ना कोई करतार ॥
यह मसला है अटल इसीको दिल मेंलीजे धार ॥
कहे न्यामत तुमसे हरबार ॥ झूठ पर० ॥ ८ ॥

१२

चाल ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

जहालतका सुनो यारो अजब अन्धेर छाया है ।
पढ़े लिक्खों की आखोंपे ग़ज़ब चशमा चढ़ाया है ॥ १ ॥
मुक़द्दस वेद कह कहकर मचाया शोर दुनिया में ।

जो देखा आप स्वामीका नहीं कुछ सार पाया है ॥२॥
न सत उपदेश है उसमें नहीं साइंस है उसमें ।
असलमें वेदकी बातों को उलटा कर दिखाया है ॥ ३॥
इबारतमें ही जब उसके नहीं है सिलसला कोई ॥
तो क्यों उसको कलाम ईश्वर बता धोका दिलायाहै॥४॥
रेल और तार कहनेसे नहीं वेदोंकी इज्ज़त है ॥
जो सच पूछो तो तुमने वेदको बट्टा लगाया है ॥५॥
यजुर वेद अध्याये चौबीस (२४) तेईस (२३) मंत्रको देखो॥
कबूतर खाना खासा तुमने वेदोंको बनाया है ॥ ६ ॥
भला कहो तो मुरगों से मिलेगा किस तरह ईश्वर ॥
दरख़तोंके लिये उल्लू कहो तो क्यों बताया है ॥ ७ ॥
नीलकंठ और कबूतर मोर से क्या आपका मतलब।
बतावो तो नया साइंस क्या तुमने चलाया है ॥ ८ ॥
बदलके अर्थको वेदोंके जो ढांचा बनाया है।
कहे न्यामत नहीं ठैरेगा यह अब भेद पाया है ॥ ९॥

१३

चाल--सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

हुक्म हमको पिताका अब बजाना ही मुनासिब है ॥
अवधको छोड़कर जंगलमें जाना ही मुनासिब है ॥ १ ॥
नहीं है रोसका मौक़ा सुनो लछमन मेरे भाई।
मात केकई के आगे सर झुकाना ही मुनासिब है ॥२॥
अवधके तख्तपर अब तो नहीं बैठूंगा मैं हरगिज़।

ताज मेरा भरतके सर सजाना ही मुनासिब है ॥ ३ ॥
धनुष तुमने जो चिल्लेपे चढ़ाया है बिना समझे ।
धनुषको चापसे उलटा हटाना ही मुनासिब है ॥ ४ ॥
राजके वास्ते भाई न भाईसे लड़ेंगे हम ॥
बचन राजाका अब हमको निभाना ही मुनासिब है॥५॥
हुआ भारत सभी ग़ारत पड़ी जो फूट आपसमें ।
कहे न्यामत फूट को अब मिटाना ही मुनासिब है ॥६॥

१४

चाल--कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली मोहे पीके द्वारे पहोंचा देती ।

अरे रावण तू धमकी दिखाता किसे ।
मुझे मरनेका खौफो खतर ही नहीं ॥
मुझे मारेगा क्या अपनी खैर मना ॥
तुझे होनीकी अपने खबर ही नहीं ॥ १ ॥
क्या तू सौनेकी लंका का मान करे ।
मेरे आगे यह मिट्टीका घर ही नहीं ॥
मेरे मनका समेरू हिलेगा नहीं ।
मेरे मनमें किसी का भी डर ही नहीं ॥ २ ॥
तूने सहस अट्ठारा जो रानी बरी ।
हाय उनपे भी तुझको सबर ही नहीं ।
पर तिरयापे तूने जो ध्यान किया ।
क्या निगोदो नरकका खतर ही नहीं ॥ ३ ॥
आवें इन्द्र नरिन्द्र जो मिलके सभी ।

क्या मजाल ज़ो शीलको मेरे हते ।
तेरी हस्ती है क्या सिवा राम पिया ॥
मेरी नजरों में कोई वशरही नहीं ॥ ४ ॥
क्यों ना जीत स्वयंवर तू लाया मुझे ।
मेरी चाह थी मनमें जो तेरे बसी ॥
था तू कौन शहर मुझे दे तो बता ।
क्या स्वयंवर की पहोंची खबर ही नहीं ॥ ५ ॥
हुवा सोतो हुवा अब मान कहा ।
मुझे रामपे जलदी से दे तू पठा ।
कहे न्यामत वगरना तू देखेगा यह ॥
तेरे सरकी क़सम तेरा सर ही नहीं ॥ ६ ॥

१५

चाल–सखी सावन वहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

हमारी क़ौमकी बेड़ी पड़ी वहरे जहालत में ।
ज़रा तुम खोलकर कालिज लंघादोगे तो क्या होगा ॥१॥
सिरफ़ छे लाख की हमको ज़रूरत है सुनो साहिव ।
खोलकर जी ज़रूरत को मिटादोगे तो क्या होगा ॥ २ ॥
वड़े दानी दयाधारी जैन मशहूर दुनिया में ।
यहांपर भी दया अपनी दिखादोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
पचास हज़ार तो मौजूद हैं इस फंड कालिजमें ।
वह साढ़ेपांच लाख वाक़ी दिलादोगे तो क्या होगा॥४॥
साल उन्नीस सौ और चार यह कैसा मुवारक है ॥

इसीमें नीम कालिजकी रखादोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥
अंबाले की सभामें आज कालिजका रेज्नोल्यूशन ।
हुवा है पेश, मंजूरी करा दोगे तो क्या होगा ॥ ६ ॥
बिना कालिज तरक्की जैनका ज़रया नहीं कोई ।
अगर होतो कहे न्यामत जितादोगेतो क्या होगा ॥ ७ ॥

१६

चाल--(चतर मुकट) चंदा तू लेजा संदेस हमारारे ॥

माता तू सुनले बात हमारी री ॥ टेक ॥
अरी कौन किसीका बाप है कौन भ्रात और मात ।
जितने नाते जगतके सब स्वारथकी बात ॥
जगतमें कोई नहीं हितकारी री ॥ माता० ॥ १ ॥
नहीं किसीका दोष है नहीं तुम्हारा दोष ।
अरी दोष हमारे करमका अब राखो संतोष ॥
करमकी टरे नहीं गती टारी री । माता० ॥ २ ॥
अब आज्ञा देदो मुझे जाती हूं गिरनार ।
कर कंगण तारो मेरे तारो हार संगार ॥
न्यायमत जिन दिक्षा सुखकारी री ॥ माता० ॥ ३ ॥

१७

चाल ॥ लगी लो जान जानां से तो जानाही मुनासिब है ॥

गये गिरनेम मुझको भी तो जाना ही मुनासिब है ।
लगी है प्रीत जिनजीसे निभाना ही मुनासिब है ॥१॥
बैरागी मन बदन सारी हाथ मय्यूरकी पींची ॥

भेस मेरा अरजकांका बनाना ही मुनासिब है ॥ २ ॥
मांग मेरी नहीं भरना शीलको दाग़ लगता है ॥
केशका लोचकर जोगन बनाना ही मुनासिब है ॥३॥
किसीका कौन है जग में सभी स्वारथके साथी हैं ॥
मेरेसे अब तुम्हें चितको हटाना ही मुनासिब है ॥४॥
विषे और भोगकी बातें मेरे मनको नहीं भातीं ॥
मुझे वैरागकी बातें सुनाना ही मुनासिब है ॥ ५ ॥
उतारो सब मेरा गहना हार बेसर कटी बैना ॥
शील सिंगार तनमन में सजाना ही मुनासिब है॥६॥
कहे राजल सुनो माता मुझे गिरनार जाने दे
क़दम वैरागमें न्यामत बढ़ाना ही मुनासिब है ॥७॥

१८

चाल--हुवा सुत राम जसरथके बहादुर हो तो ऐसाहो ॥

वसू के लाल गिरधारी जो चातुर हो तो ऐसा हो ॥
हरा जा कंस राजाको बहादुर हो तो ऐसा हो ॥ १ ॥
हते मल युद्ध कर बन में उखाड़ा थंब इक छिनमें ॥
उठाया शैल उंगरीपे दिलावर हो तो ऐसा हो ॥२॥
उधर सिशुपालको मारा कि लाए रुक्मनी तारा ॥
इधर जरासिंध भी हारा बहादुर हो तो ऐसा हो ॥ ३ ॥
महाभारत किया भारतमें जीता दुष्ट कोरों को ॥
पदम हारा धात खंडमें बहादुर हो तो ऐसा हो ॥ ४ ॥
यह अब शिव मग बताने को लेंगे अवतार तिर्थंकर ॥
नमें न्यामत चरण जुगमें दिलावर हो तो ऐसा हो ॥ ५ ॥

१९

चाल--उमराव थारी बोली प्यारी लागे महाराज ॥

महावीर थारी बानी नीकी लागे महाराज ॥
महाराज थारी बानी नीकी लागे महाराज ॥ टेक ॥
जिन बानी के सुनतही मिटे मोह संताप ॥
अशुभ करम सब दूर हों दूर होएं सब पाप ॥ थारी० ॥ १ ॥
भील जटायू वान्दरे और अंजनसे चोर ॥
न्यामत जिन बानी सुनी सुगत गए अघ तोर ॥ थारी० ॥ २ ॥

२०

चाल ॥ सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

अरे चेतन उठो उठकर चलो दरबार अपनेको ।
बुलाकर ज्ञान को जलदी करो दरबार अपने को ॥१॥
मगर यह याद रख लीजो कुमतका संग मत कीजो ॥
वगरना फिर इसी हालतमें तुम पावोगे अपनेको ॥ २ ॥
श्री अरिहन्त हैं सच्चे सुनो सरकार दुनिया में ॥
सदा सरको झुकाते तुम रहो सरकार अपने को ॥ ३ ॥
हुकम जो कुछ दिया सरकारने तत्वार्थ शासनमें ।
करो पाबन्द उन अहकामका हरबार अपने को ॥४॥
कहा अपना समझ करके कोई परको नहीं कहता ।
कोई कहताहै तो कहता है न्यामत यार अपने को ॥ ५ ॥

२१

चाल--जिसने एक बार तुझे माहेजबीं देख लिया ॥

जैसा जो करताहै भरताहै यहीं देख लिया ।

करम का टाला नहीं टलता है फल देख लिया ॥ १ ॥
वदसे वद, नेक से नेकी का समर मिलता है ।
आज जो जैसा किया वैसा ही कल देख लिया ॥ २ ॥
हरके सीताको जो रावणने कुमत ठानी थी ॥
आप मारा गया हरने के वदल देख लिया ॥ ३ ॥
न्यायमत जो कोई कलपाता है जी औरों का ॥
याद रक्खो वह भी पाता है न कल देख लिया ॥ ४ ॥

२२

चाल· अमोलक धरम रतन प्यारे ॥

नींदसे जागो मतवारे । वक्त जाता है चला प्यारे ॥ टेक ॥
विन कालेज के उन्नती प्यारे होनी है दुशवार ।
कमर बांधके खोलदो प्यारे विद्याका भंडार ॥
दिगम्वर स्वताम्वर सारे ॥ नींद० ॥ १ ॥
एक दिन छेहों खंड में था जिनमतका परकाश ॥
आज अविद्या छा गई प्यारे रह गई चौदा लाख ॥
आंख खोलो अव तो प्यारे । नींद० ॥ २ ॥
मुसलमान सिख आरया और ईसाई सारे ।
पीछेसे आगे हुवे खोले कालेज भारे ।
रहे पीछे जिनमतवारे । नींद० ॥ ३ ॥
वद रसमों को छोड़दो प्यारे चलो जैन मरजाद ।
फजूल खरची त्यागके करो कालेज की इमदाद ॥ ।
कहे न्यामत सुनलो सारे ॥ नींद० ॥ ४ ॥

२३

चाल--सखी सावन बहार आई झुलाए जिसका जी चाहे ॥

नक़ारा धर्मका बजता है आए जिसका जी चाहे ॥
सदाक़त जैनमतकी आज़माए जिसका जी चाहे ॥ १ ॥
खुला दरबार है अब फैसला करलो सतासतका।
शकूकेतबा जो होवें मिटाए जिसका जी चाहे ॥ २ ॥
जो बे बुनियाद युक्ती हो वह हरगिज़ चल नहीं सकती ॥
मुक़ाबिल सेठ मेवाराम आए जिसकाजी चाहे ॥ ३ ॥
न पर खंडनसे मतलब है न मंडन मुद्दआ अपना।
सतासत निरणय करते हैं कराए जिसका जी चाहे ॥४॥
दलीलों से तजरबों से करेंगे फ़ैसला सबका।
कहे न्यामत किसी मतवाला आए जिसकाजी चाहे ॥५॥

२४

चाल--है बहारे बाग दुनिया चंद रोज़ ॥

यक बयक उलटा ज़माना होगया ॥
काल पंचमका बहाना होगया ॥ १ ॥
सतासत निरणय कोई करता नहीं ॥
पक्षका यागे ज़माना होगया ॥ २ ॥
शील संजम हाय भारतसे गया।
न्योग का करना कराना होगया ॥ ३ ॥
बाप करता है नमस्ते पुत्रको।
कहिये क्या उलटा ज़माना होगया ॥ ४ ॥

नाम प्रीती हिन्दसे जाता रहा ।
भाई से भाई बिगाना होगया ॥ ५ ॥
रंग ढंग सब देश अपने का तजा ।
दूसरे देशोंका बाना होगया ॥ ६ ॥
न्यायमत अब ख्वाब ग़फ़लत से उठो ।
सोते सोते तो ज़माना होगया ॥ ७ ॥

२५

चाल--(नाटक) पियाआए ना अरी हमसे सहाढुख जाय ना ॥

तुम आवोना ज़रा आके धरम सुनजावोना ॥
तेरे प्यारे--भ्रम सारे-नियारे होवें । तुम० ॥
जैनवानी सुधासम जान के नित पान करो।
स्याद्वादांगसे सच झूठकी पहिचान करो ॥
मुख महावीर हिमाचल से यह निकली गंगा ।
कर्म मल धोने को न्यामत सदा अशनान करो ॥
कहीं जावो ना-दुख पावो ना--घबराओ ना ॥
ज़रा आके धरम सुन जावो ना ॥ तुम० ॥

२६

चाल--(गजल) एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले ॥

फैला हुवा है सारे दुनियामें ज्ञान तेरा । टेक ।
हिंसा को है हटाया-दया मय धरम बताया ॥
ममनून हो रहा है--इन्सां हैवान तेरा ॥ फैला० ॥ १ ॥
रागी नहीं तू द्वेषी-तू है हितोपदेशी ॥

मुनीजन लगा रहे हैं--हिर्दै में ध्यान तेरा ॥ फैला० । २ ।
परमाण नय दिखाया--सतका पता लगाया ॥
धनबाद गा रहे हैं-सब एक जुबान तेरा ॥ फैला० ॥ ३ ॥
तू शुद्ध सरूप वाला--रस्ते लगाने वाला ॥
न्यामत अदा न हमसे--होगा अहसान तेरा ॥ फैला० ॥ ४ ॥

२७

चाल--(नाटक) सुनिये सुनिये सरकार ॥

अय जिया अबतो जाग--सप्त विषयन को तयाग ॥
प्यारे सातों से भाग--इन से यारी न कर ॥ १ ॥
छोड़ो चोरी की बात--जूवे बाजोंका साथ ॥
तजो जीवन का घात--दया दिलमें तो कर ॥ २ ॥
पर नारीको जान--माता भगनी समान ॥
लखो होके अयान--नहीं खोटी नज़र ॥ ३ ॥
जो हो गणिका में लीन--बल बीरज हो क्षीन ॥
होवे निर्धन वे दीन--सड़े नरकों में पड़ ॥ ४ ॥
मास मद्राका पान-बुरा है जगमें जान ।
यांमें पाप महान--नहीं अच्छा समर ॥ ५ ॥
न्यायमत कर विचार--तजो सातों अबार ॥
वरना होवोगे ख्वार --है यह सच्ची खबर ॥ ६ ॥

२८

चाल -रावणने शक्ती मारी हर के तान तान तान ॥

क्रोधासुर मारो प्रीति बरछी तान तान तान । टेक ।

दिग स्वेताम्बर का रगड़ा--जबसे है पड़गया झगड़ा ॥
ढंग जैन धरमका बिगड़ा--होगई हान हान हान ॥१॥
तजदो दौ दिग स्वेताम्बर-यह है झूठा आडम्बर ॥
बैठो पहन जैनमत अम्बर-एक ही थान थान थान॥२॥
अब प्रसपर प्रीत बिचारो-सब मनका रोस निवारो ॥
वातशल अंग दिलमें धारो-तजकर मान मान मान ॥३॥
मत खींचा तानी लावो-सब आपस में मिल जावो ॥
कालेज भारी खुलवावो-जल्दी आन आन आन॥४॥
एकही चोबीस तिर्थंकर-एक तत्व एक ही मंतर ॥
क्या सीतम्बर दीसम्बर-पड़गई कान कान कान ॥५॥
देखो मुसललान ईसाई-क्या सिख क्या आरज भाई ॥
खोले कालेज, दिखलाई-अपनी शान शान शान ॥६॥
जो जिनकालेज खुलजावे-सच्चा मारग दरसावे ॥
न्यामत मिथ्या तम जावे-चमके भान भान भान॥७॥

२९

चाल (नाटक) ऐसे दुक्से पेरे गैरे मैंने लाखा देखे भाले ॥

सेवें तेरा दरबार मुनी ज्ञानी ध्यानी सारे ॥
स्वर्गों माहीं इन्दर सारे-भू मंडलके प्राणी सारे ॥
क्या सूरज क्या चन्दर तारे ॥ तेरा० ॥
तुम से अपना दुख जितलाने को जो आते हैं जो आते हैं ॥
वह तेरे दर से सुगती मुक्ती पाते हैं वह पाते हैं ॥
आवो आवो जल्दी आवो-मतना इसमें देर लगावो ॥

श्री जिन आगे सीस झुकावो ॥ देखो देखो एक दम ॥
होवे मिथ्याभाव कम-आवे मन मांही सम-बढ़े संजम समदम॥
अजी आवो आवो देखो भालो ।शिव नगरी को जानेवाले ॥

३०

चाल--(नाटक) आहा प्यारा दिन है न्यारा शहज़ादी की शादी का ॥

आहा प्यारा दिन है न्यारा वक्त मिला आज़ादी का ॥
भव जन सब जन मिलकर बैठे दिनहै मुबारक बादीका॥१।
महा सभा क़ायम सदा रहे दायम आवें हम झननन झूम ॥
बादे बहारी आके पुकारी सननन नन नन सूम ॥ २ ॥
अनाथ आश्रम ऐशोसियशन मिच रही धननन धूम ॥
कालेज आश्रमके चन्दे की हो रही छननन छूम ॥ ३ ॥
पंडत जन घन घोर घटा घिर आई घननन घूम ॥
जिन बानी अमृत रस बरसे छननन नन नन छूम ॥ ४ ॥
फज़ूल खरची और बद रसमी हनी हननन हूम ॥
क्रोधा सुर को मारा प्रीति राईफल धननन धूम ॥ ५ ॥
जिन गुण गावें पाप नसावें नाचें छननन छूम ॥
बीन बांसुरी ताल मंजीरे बज रहे सननन सूम ॥ ६ ॥
सुरासुर आवें फूल बरसावें झननन नन नन झूम ॥
न्यामत प्यारी बादे बहारी चल रही सननन सूम ॥ ७ ॥

३१

चाल--कोई चातुर ऐसी सखी ना मिली मोहे पीके द्वारे पहोंचा देती ॥

कैसे प्राणी के प्राणों का घात करे।

तेरे दिलमें दयाका असर ही नहीं ॥
जो तू हरनों का बन में शिकार करे।
क्या निगोदो नरक का खतरही नहीं ॥ १ ॥
जैनबानी सुनो ज़रा ग़ौर करो।
जान औरों की अपनी सी ध्यान धरो ॥
ज़रा रहम करो अपने दिल में डरो।
प्यारे जुल्म का अच्छा समरही नहीं ॥ २ ॥
भोले बनके पखेरू हैं डरते फिरें।
मारे डरके तुम्हारे से दूर रहें ॥
वह तुम्हारा न कोई बिगारकरें ॥
उनका बन के सिवा कोई घरही नहीं ॥ ३ ॥
त्रिण घास चरें अपना पेटभरें ॥
धन देश तुम्हारा न कोई हरें ॥
प्यारे बच्चों से अपने प्रीति करें ॥
उनके दिल में तो कोई भी शर ही नहीं ॥ ४ ॥
कामी लोगों ने इसको रवा है किया ॥
झूटा अपनी तरफ़से है मसला गढ़ा ॥
वरना पुराण क़ुरान में जीवों के मारन का ॥
आता कहीं भी ज़िकरही नहीं ॥ ५ ॥
दया मय है धरम सत जानो सही।
जिनराजने है यही बात कही ॥
सुनो न्यामत, बिना दया धर्म कभी।
प्यारे होगा मुक्त में गुज़र ही नहीं ॥ ६ ॥

३२

चाल-(नाटक) काहे कलपावे जलावे जानी जान तोरी जाऐं हम सब वारियां

काहे दुख पावे भरमावे प्यारे मान मोरी आवो निज द्वारेरे।टेक।

काशी मदीने में दर दर न फिर प्यारे—

करता है नाहक़ तू औरों की याद ॥

अपने में अपनेही जोबन को देखो जी—

तुझको मिले तेरे दिलकी मुराद ॥ १ ॥

ज्ञान तूही प्यारे ज्ञाता तूही—

तूही ज्ञे अपने दिलमें तू करतो विचार ॥

अपना ध्यान धरो ध्यान ध्याता बनो—

नहीं औरके ध्यानसे पहोंचेंगे पार ॥ २ ॥

वेद पुरान क़ुरान पढ़े—

लखा अपना सरूप न आंख पसार ॥

किसकी खातिर होता फिरे है तू ख्वार—

कहे न्यामत है पर सब घर बार ॥ ३ ॥

इति श्री थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी समाप्तम्

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू न्यामत सिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार

हिसार [पंजाब]

B. NIAMAT SINGH JAINI,
SECRETARY DISTRICT BOARD
HISSAR (PUNJAB)

नोटिस ॥

न्यामत विलास के प्रथम भाग के निम्मिन लिखित २० अंक (हिस्से) तय्यार किये गये हैं। मगर अभी तक सिर्फ़ वह ही हिस्से छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है ॥

अंक	नाम	मूल्य	
		शास्त्री	उर्दू
१	भूमिका ॥		
२	मंगला चरण.		
३	गायन शिक्षा.		
४	चौबीस जिनराज जयमाल.		
५	पंचकल्याणक नाटक		
६	अरिहंत गुण माला.		
७	जैनभजन मुक्तावली....	=)	
८	राजल भजन एकादशी	-)	
९	स्त्रीगान जैनभजन पचीसी	-)॥	
१०	कलयुग लीला भजना वली	-)॥	-)॥
११	कुन्ती नाटक	=)	
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	॥=)	।=)
१३	अनाथ रुदन	-)	
१४	जैन कालिज भजनावली.		
१५	रामचरित्र भजन मंजरी.		
१६	राजल बैराग माला.		
१७	ईश्वर सरूप दर्पण.		
१८	जैन भजन शतक	।)	
१९	थ्येट्रीकल जैन भजन मंजरी	=)	=)
२०	मैना सुन्दरी नाटक	१॥)	

पुस्तक मिलने का पता—

न्यामतसिंह जैन सैक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड मु० हिसार (पंजाब)

JAIN RELIGIOUS TRACT SERIES NO. 18.

न्यामत बिलास-अंक १८

NIAMAT-VILAS, 18

जैन भजन शतक

प्रणेता

न्यामत सिंह जैनी

सैक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड, हिसार

पं० घासीराम के देशोपकारक प्रेस लखनऊ में छपी

श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४४०

चौथीबार १००० कापी] सन १९१४ [मूल्य ।)

श्री जिनेन्द्रायनमः

न्यामत बिलास अंक १८ ॥

जैन भजन शतक

(अर्थात् जैनपद बाटिका)

प्रथम बाटिका

१

तर्ज ॥ रघुवर कौशल्याके लालमुनीकी यज्ञरचाने वाले ॥



भगवन् गरुदेवीके लाल मुकतकी राह बतानेवाले । राह बतानेवाले सबका भर्म मिटानेवाले । भगवन० । टेक । लीना अवधपुरी औतार । छागयो जगमें आनन्द कार ॥ बोले सुरनर जय जय कार । सारे जिन गुण गाने वाले ॥ ॥ भगवन० ॥ १ ॥ जगमें था अज्ञान महान । तुमने दिया सबोंको ज्ञान ॥ करके मिथ्यामतको भान । केवल ज्ञान उपानेवाले ॥ भगवन० ॥ २ ॥ तुमने दिया धरम उपदेश ।

जामें राग द्वेप नहीं लेश ॥ तुम सतब्रह्मा विश्नु महेश । शिव मारग दरसानेवाले ॥ भगवन० ॥ ३ ॥ जग जीवन पे करुणा धार । तुमने दिया मंत्र नोकार ॥ जिससे होगये भवदध पार । लाखों निश्चे लाने वाले ॥ भगवन० ॥ ४ ॥ वैरीकरम बड़े बल बीर । देते सब जीवोंको पीर ॥ न्यामत हो रहा अधम अधीर । तुमहीं धीर बंधानेवाले ॥ भगवन० ५ ।



२

तर्ज ॥ अमोलक मनुष्य जनम प्यारे ॥

दया दिलमें धारो प्यारे । दया बिन वृथा जतन सारे ॥ टेक ॥ दया धरम का मूल है प्यारे कहते वेद पुराण । कहीं जीव का मारना नहीं आता बीच कुराण ॥ किसी को पढ़ देखो प्यारे ॥ दया० ॥ १ ॥ सुबुकतगींको रहम था एक हरनी पे आया । रहमदिलीसे राज जाय गढ़ ग़ज़नीका पाया ॥ दया का फल देखो प्यारे ॥ दया० ॥ २ ॥ दान शील तप भावना प्यारे संजम ज्ञान विचार । एक दया बिन जानयो प्यारे हैं निरफल बेकार ॥ नीर बिन जूं सरवर प्यारे ॥ दया० ॥ ३ ॥ प्राण सबों के जानयो प्यारे अपने प्राण समान । प्राण हतेगा औरके प्यारे होगी तेरीहान ॥ सहेगा दुख लाखों प्यारे ॥ दया० ॥ ४ ॥ दया करत संसार सुख प्यारे दया देत निरवाण । न्यामत दया न छोड़यो चाहे छूट जांय सब प्राण ॥ दया दुख सागर से तारे ॥ दया० ॥ ५ ॥

३

तर्ज़ ॥ पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

जब हंस तेरे तनका कहीं उड़के जायगा । अयदिल बता तो किससे तू नाता रखायगा ॥ टेक ॥ यह भाई बन्ध जो तुझे करते हैं आज प्यार । जब आन बने कोई नहीं काम आयगा ॥ जब० ॥ १ ॥ यह याद रख कि सब हैं तेरेजीते जीके यार । आखिर तु अकेलाही मरन दुख उठायगा ॥ जब० ॥ २ ॥ सब मिलके जलादेंगे तुझे जाके आगमें ॥ एक छिनके छिन में तेरा पता भी न पायगा ॥ जब० ॥ ३ ॥ कर घात आठ करमोंका निज शत्रू जानकर । वे नाश किये इनके तू मुक्ती न पायगा ॥ जब० ॥ ४ ॥ औसर यही है जो तुझे करना है आज कर । फिर क्या करेगा काल जो मुंह बाके आयगा ॥ जब० ॥ ५ ॥ अय न्यामत उठचेत क्यों मिथ्यात में पड़ा । जिन धर्म तेरे हाथ यह मुशकिल से आयगा ॥ जब० ॥ ६ ॥



४

तर्ज़ नाटक ॥ सुनले बीबी बातें मेरी कान लगाकर तू झट पट ॥

क्या सोते हो मोह नींद में रेल मौतकी आती है । लाइन किलयर आ पहोंचा है घंटी शब्द सुनाती है ॥ टेक ॥ नेक चलन का टिकट खरीदो । कहां जाना है गृह से कहदो ॥

पलैट फोर्म पर जलदी आवो । टिकट अब काटी जाती है ॥ क्या सोते० ॥ १ ॥ धरम सार सामान उठावो । शिवपुर की बिल्टी करवावो ॥ न्यामत मतना देर लगावो । गाड़ी छोड़ी जाती है ॥ क्या सोते० ॥ २ ॥



५

तर्ज ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दीया न जागा मोल ॥

हुवा जनम जनममें ख्वार कुमत तेरी बातोंमें आके । टेक हुवा जैन धरम से विमुख स्वर्ग और शिवपद का दाता ॥ सहे दुक्ख अनंती वार तेरे वश नरकों में जाके ॥ हुवा० ॥ १ ॥ जिन वानि नहीं सुनी कुगत का सब डर मिट जाता । खोया विषय भोग सागरमें नरभव चिंतामनी पाके। हुवा०॥२॥ न्यामत प्रीत करी सुमतासे छोड़ मेरा दामन । आक धतूरे नहीं खावे कोई अमृत फल खाके ॥ हुवा० ॥ ३ ॥



६

तर्ज ॥ नाटक ॥ प्यारी काहे सर धुने कलपा न जिया ॥

स्वामि तू है हितकारि सबका जगमें । तोरे बिन कौन बतलावे साचि वाणि । स्वामि तू है हित० । टेक । तू ही है सबको सुखदाई नगरि नगरि में तोरी प्रभुताई । आवो आवो स्वामि ॥ शिवमगको दरसावो स्वामि । तेरा ज्ञानहे महान तुझ समान है

नहीं आन भगवान । उपकारि दुखहारि ॥ सुखकारि । जग तारि ॥ तू है हितकारि सब का जगमें । स्वामि० ॥ १ ॥



७

तर्ज ॥ इन्दरसभा ॥ अरे लालदेव इसतरफ जल्द आ ॥

अरे प्यारे सुन तू जरा देके कान । कि जिनबानिसे जीव पाता है ज्ञान ॥ टेक ॥ मिटाती है शंसय यही जीव की । अगर कोई दे इसपे टुक अपना ध्यान ॥ अरे० ॥ १ ॥ नहीं ठैरे अनमत कोई सामने । करे जब यह परमाण नय का बयान ॥ अरे० ॥ २ ॥ दिखाती है निक्षेप सत भंगको । स्यादबाद इसका निराला निशान ॥ अरे० ॥ ३ ॥ बनावे यह परमातमा जीवको । जो निश्चे करे देवे शिव वेगुमान ॥ अरे० ॥ ४ ॥ प्रीक्षा से सिद्धी करे वस्तु की । बताती नहीं यूंहीं लाना ईमान ॥ अरे० ॥ ५ ॥ धरम अर्थ शिव काम चारो मिले । जो न्यामत कोई इसकोले ठीक जान । अरे० ।६।



८

तर्ज़ ॥ तोरि बाली सी उमर तिरछे नैना ॥

जिनबानी की कही तूने नहीं मानीं । नहीं मानी तूने अभिमानी ॥ जिनबानि की कही तूने नहीं मानी ॥ टेक ॥ लख चौरासि जून में भटका । दुक्ख सहे तूने अभिमानी ।

जिन बानि० ॥ १ ॥ जिनबानि को हिरदे धरये । जो तू है चेतन ज्ञानी ॥ जिनबानि० ॥ २ ॥ जनम जनम के पाप कटेंगे । न्यामत सुन बच सुखदानी ॥ जिनबानि० ॥ ३ ॥



९

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

सुनो जैन रिषी मुनीराज धरम उपदेश सुनाते हैं । भूले फिरते जीवों को मुकतकी राह बताते हैं ॥ टेक ॥ ना काहू से द्वेष राग चित में नहीं लाते हैं । तन धनकी ममता छोड़ ध्यान आपमें लगाते हैं ॥ सुनो० ॥ १ ॥ शत्रु मित्र एक सार नहीं कुछभेद रखाते हैं । आते हैं जो जो शरण सभी को पार लंघाते हैं ॥ सुनो० ॥ २ ॥ तिलतुश प्रिग्रह छोड़ दिगम्बर भेस बनाते हैं । इस बिन मुक्ति नहीं होय जीव को यूं दरसाते हैं ॥ सुनो०॥ ३ ॥ ग्रीषम बरषा सीत वेदना सारी उठाते हैं ॥ दो बीस प्रीसा सहें करम का नाश कराते हैं ॥ सुनो० ॥ ४ ॥ तीन काल सामायक कर निज आतम ध्याते हैं ॥ और सांझ सबेरे पर जीवन हित शास्त्र सुनाते हैं ॥ सुनो० ॥ ५ । मिथ्या मत को नाश शुद्ध सम्यक्त दिलाते हैं ॥ और मोह नींद में सोए पड़ों को आन जगाते हैं ॥ सुनो० ॥ ६ ॥ लख मोह अगन से तपत जीव करुणा मन लाते हैं ॥ कर जिन बानि उपदेश धरम अमृत बरसाते हैं ॥ सुनो० ॥ ७ ॥ जीव दयाका रूप तत्वका स्वरूप

दिखाते हैं ॥ जिसको जो संसे होय कहो सब भर्म मिटातेहैं सुनो० ॥ ८ ॥ अंजुल जलज्यूं आयू सदा दिन बीते जाते हैं ॥ न्यामत सुकृत करना सो करलो गुरु समझाते हैं ॥ सुनो० ॥ ० ॥



१०

तर्ज़ ॥ किस विधि कीने करम चकचूर । उत्तम छिमापे जिया चम्भा म्हाने आवे ॥ किस० ॥

जागो मुसाफिर प्यारे जाना है दूर ॥ राह विषे मतसोवो रे अनारि । जागो० । टेक । लख विषयन सुख मन बोरायो ॥ मोह विषे में हुआ चकचूर । सम्यक दर्शन ज्ञान गठरिया लुट जावेगी देखो यहां पे ज़रूर । जागो० । १ । पांचों इन्द्री चोर अनादी संग रहैंहो न एक छिन दूर ॥ क्रोध लोभ माया मद चारों डारेंगे आंखो में करमोंकी धूर। जागो० ॥ २ ॥ यह संसार असार चलाचल दुक्ख कुलाचल से भरपूर । न्यामत तज आलश भज पारश काटो यह आठों करम करूर । जागो० । ३ ।



११

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्देदिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

देव अरिहंत गुर निरग्रन्थ अगम स्याद्वाद अपना ।

यही सत और असत सब आजमाए जिसका जी चाहे। टेक।
वना जिन धर्मका मंडल हितेशी देश हरियाना ॥
वजे हैं धर्म नक्कारा बजाए जिसका जी चाहे। देव०। १ ॥
कुमारगसे हटाशिवमग दिखाना काम है इसका।
फ़रक़ इसमें नहीं ईमान लाये जिसकाजी चाहे। देव०। २ ॥
धरम देश उन्नति करना यहीहे काम मरदोंका।
परोपकारीमें हाथ अपने दिखाये जिसकाजी चाहे। देव०। ३।
खड़ा झंडा निशांकितका पनाह लेते हैं जो आकर।
नहीं डरते किसीसे हैं डराए जिसका जी चाहे। देव० ।४॥
लगा है पोद उलफ़त का झुकी हैं शाख हमदरदी ॥
अजंव एकताई फल फूला है खाये जिसकाजी चाहे। देव०।५।
सभासद इसका हो सक्ता है हर जिन धर्म शरधानी ॥
खुला दरवार है यहां पे तो आए जिसकाजी चाहे। देव० ।६॥
इरादा है यह मंडल का करे उद्धार भारत का।
तमन्ना सवकी वरलाए सुनाए जिसकाजी चाहे। देव०।७॥
सरे बाज़ार पंडित जन धरम उपदेश देते हैं ॥
दिलों में जो शक्क होवें मिटाए जिसकाजी चाहे। देव०।८।
न पर खंडन से मतलव है न मंडन मुद्दआ अपना।
सतासत निर्नय करते हैं कराए जिसका जी चाहे। देव०।९।
धरम परभावना मंडल तनोमन धनसे करता है ॥
सरेमू भी फरक होवे दिखाये जिसकाजी चाहे। देव० ।१०॥
इस पंचम कालमें न्यामत पुकार हम सवसे कहते हैं ॥
पड़ा वेड़ा भंवरमें है वचाए जिसका जी चाहे। देव०।११।

१२

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

कर सकल बिभाव अभाव मिटादो विकलपता मनकी ॥ टेक ॥ आप लखे आपेमें आपा गत व्योहारन की ॥ तर्क बितर्क तजो इसकी और भेद बिज्ञानन की ॥ कर० ॥१ यह परमातम यह मम आतमबात बिभावन की ॥ हरो हरो बुधनय प्रमाण की और निक्षेपनकी ॥ कर० ॥ २ ॥ ज्ञान चरन की बिकलप छोड़ो छोड़ो दरशनकी ॥ न्यामत पुदगल हो पुदगल चेतन शक्ती चेतन की ॥ कर० ॥ ३ ॥



१३

तर्ज़ ॥ मेरी आहका तुम असर देख लेना । वह आयेंगे थांबे जिगर देख लेना ॥

करम का तुम अपने यह फल देख लेना ॥
करोगे जो कुछ आज कल देखलेना ॥ टेक ॥
बिषौंमें लगे रहते हो रात दिन पर ।
मिलेगा न सुख एक पल देख लेना ॥ करम० ॥ १ ॥
सताओगे जगमें जो तुम जी किसीका ॥
पड़ेगी न तुमको भी कल देख लेना ॥ करम० ॥ २ ॥
फिरोगे चहूं गत में हिंसा से न्यामत ॥
है कहना हमारा अटल देख लेना ॥ करम० ॥ ३ ॥

१४

तर्ज़ ॥ जमाना तेरा मुबतला होरहा है। तुझे भी खबर है कि क्या होरहा है ॥

अरे क्यों तुझको यह भी खबर है ॥
किधर तुझको जाना कहां तेरा घर है ॥ टेक ॥
मुसाफिर है दो चार दिनका यहांपे ।
न यह तेरा दर है न यह तेरा घर है। अरे० ॥ १ ॥
कहो कौन से रसते जाना है तुजको ॥
तेरे साथ में भी कोई राहबर है। अरे० ॥ २ ॥
है अफसोस न्यामत तू ग़ाफ़िल है इतना।
न यहां की खबर है नव्हां की ख़बर है। अरे०। ३ ॥



१५

तर्ज़ ॥ मेरी आह का तुम असर देख लेना। वह आएंगे थांबे जिगर देख लेना ॥

सिया हरनेका यह असर देख लेना ॥
कि तनसे जुदा अपना सर देख लेना ॥ टेक ॥
सती को चुराते हो वन में अकेली।
नफ़ा टोटा अपना मगर देख लेना ॥ सिया० ॥ १ ॥
मेरे हाथ लाना है बस ज़हर क़ातिल ॥
बुरा है मुझे बद नज़र देख लेना। सिया०। २।

अरे मानले कहना मेरा तू रावण ॥
वगरना नरक अपना घर देख लेना ॥ सिया० । ३ ।
बदी बीज बोवेगा जो कोई न्यामत ।
मुसीबतके उसमें समर देख लेना ॥ सिया० । ४ ।



१६

तर्ज ॥ सोरठ अधिक सरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

जय जय श्री अरिहंत आज हम पूजनको आए ॥ टेक ॥
काम सरा सब मोमनका जब तुम दरशन पाए ॥
मेघ सुधाके हो बरसे हम बहु आनन्द पाए । जय जय०॥ १ ॥
यही भई परतीत मेरेतुम देवन के देवा ॥
जनम जनमके अघ कटगए मेरेतुम दरशन पाए।जय जय०।२॥
नारद ब्रह्मा और सभी मिल तुमरे गुण गाए ॥
नरपत सुरपत नित तुम ध्यावें बंछितफल पाए । जय जय०।३ ॥
इन्द्र धनेन्द्र सभी मिल आए सिर चरणन नयाए ।
न्यामत जनम सुफल कर मानों तुमदरशन पाए। जय जय०।४।



१७

तर्ज ॥ इलाजे दर्दे दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

प्रभूकी भक्ति काफी है शिवा सुंदर मिलानेको । टेक ॥
छुड़ादामन कुमतसे जो तू शिव सुंदरको चाहे है ॥

तुझे आई है रे चेतन सखी सुमता बुलानेको ॥ प्रभू० १ ॥
जगामत मोह राजाको पड़ाहै ख्वाब ग़फ़लतमें ॥
वनाले ध्यान की नौका भवोदधी पार जानेको ॥ प्रभू० २ ॥
तुझे अय न्यायमत कोई अगर रहवर नहीं मिलता ॥
तो ले चल संग जिन वानी तुझे रस्ता बतानेको ॥ प्रभू० ३ ॥



१८

तर्ज़ ॥ खातीका खुवला रे तेरीमामी लंगूरे । चरखा तु घड़दे रांग लोरे खूवा पीढ़ी लाल गुलाल खातीका खुवला (यहगीत हरयाने में जमीदार गाते हैं)

ज्ञानीरा चेतना पर नारी त्यागोरे ॥ टेक ॥
या पर नारी देखतारे मरो धवल सेठ गँवार ॥
ज्ञानीरा चेतना पर नारी त्यागोरे ॥ १ ॥
या परनारी वांछतारे परी कीचक मार अपार ॥ ज्ञानीरा० २ ॥
या परनारी छुवतां रे गयो रावण नरक मंझार ॥ ज्ञानीरा० ३ ॥



१९

तर्ज ॥ जावो जावोजी शाम जहां रातरहे हमारे कैसे आये भोर भये ॥

ज्ञावो ज्ञावो जी चेतना कुमता नगरी ॥
सुमता घर आए भूल करी ॥ टेक ॥
कुमता घर काल अनाद रहे ॥ वह काम कियोजो कुमतकहे ॥

हमरी नहीं एक सुनी । जावो० ॥ १ ॥
मैं बार बार समझाय रही तुम नेक नहिं चितमाहीं धरी ॥
मन माना सोही करी । जावो० ॥ २ ॥
जब बिपत पड़ी सुमता सूझे । धनराज मिलें कुमता बूझे ॥
न्यामत नहीं बात भली । जावो० ॥ ३ ॥



२०

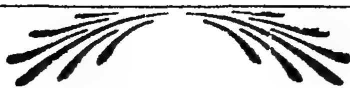
तर्ज़ ॥ सदा नहीं रहने का मेरी जान हुसनपर यूंहीं अकड़ते हो ॥

मिले तुमको भी नहीं आराम जो तुम औरों को सताते हो
। टेक ॥ दया धरम को छोड़ पाप में जिया लगाते हो ।
दुख देते हो औरों को खुद भी दुखपाते हो ।
क्योंहोकर चेतन चतुर सुजान । निपट मूरख बने जाते हो । मिले० । १
क्रोध लोभ मद मायाके बशमें आजाते हो ।
दया भावको त्याग प्राण प्राणी के गुमाते हो ।
तुम्हारा हो कैसे कल्यान । जीव औरोंका दुखाते हो । मिले० २
तप संजम और पूजा भक्ती ज्ञान ध्यान अशनान ।
जिनके हिरदे दया नहीं है सब झूठा तूफान ॥
निमाज और रोजा और इमान ।
यूंहीं करके दुखपाते हो ॥ मिले० ॥ ३ ॥
सबके जीव जान अपनी सम और करुणामन धार ।
बेद कुरान और पुरान सबों का समझो यही सार ।
दयाबिन नहीं होगा कल्यान जनम बिर्थाही गुमातेहो । मिले० ४

कर पूजा मंदिर में घड़ी घड़याल बजाते हो ।
जो दिल में नहीं दया यूंही पाखंड रचाते हो ।
प्रभूको है सबहीका ज्ञान । उसे क्या धोका दिलातेहो । मिले०५
हिंसाहीसे होता है दुनयामें दुख पाप ।
काल फूट और प्लेग समझलो हिंसा का परताप ॥
रसातल जाता हिंदुस्तान । दया चितमें नहीं लातेहो ।मिले०६
राग द्वेषका छोड़ न्यायमत तजदो हिंसकभाव ।
दयाधरम मनमें भजो सब क्या जोगी क्या राव ॥
दयासे हो सबकाकल्यान । जोभारतसुत कहलातेहो । मिले०७

इति प्रथम वाटिका समाप्तम् ॥




श्री जिनेन्द्रायनमः

द्वितीय वाटिका

२१

तर्ज ॥ यह कैसे बाल हैं विखरे यह क्या सूरत बनी ग़मकी ॥

तुम्हारा चंद मुख निरखे सुपद रुचि मुजको आई है ।
ज्ञान चमका परापर की मुजे पहिचान आई है ॥ टेक ॥
कला बढ़ती है दिन दिन कामकी रजनी बिलाई है ॥
अमृत अनंद सासनने शोक त्रिशना बुझाई है । तुम्हारा० ।१।
जो इष्टानिष्ट में मेरी कलपना थी निसाई है ।
मैंने निज साध्य को साधा उपाधी सब मिटाई है ॥ तुम्हारा० ।२।
धन्य दिन आज का न्यामत छवी जिन देख पाई है ।
सुधर गई आजसब बिगड़ी अचल ऋधहाथआई है।तुम्हारा०।३।



२२

तर्ज ॥ नाटक ॥ (इसपर थ्येटर में नाच होता है) ॥

अरिआवो शुभघड़ियां मनावोरी । मनावोरी मनावोरी ॥

अरीआवोशुभघड़ियांमनावोशुभ घड़ियां मनावोशुभघड़ियां मनावोरी ॥ टेक ॥ घर घरमें आनंद छाय रह्यो है। श्री जी पे वारो वनाय गुल कलियां वनाय गुल कलियां वनाय गुल कलियां मनावो री ॥ अरिआवो० ॥ १ ॥ गावो वजावो हाव भाव दिखावो । जय जय जिनेन्द्र सुनावो रल मिलियां सुनावो रल मिलियां सुनावो रल मिलियां मनावोरी ॥ अरिआवो० ॥ २ ॥ छम छम छम छम नाचनचावो । तालि वजावो वजावो मन भरियां । वजावो मनभरियां वजावो मन भरियां मनावोरी ॥ अरिआवो०३ ॥ मुक्ति चिदानन्द नाटक रचावो । करमोंकी धूल उड़ावो गलि गलियां ॥ उड़ाओ गलि गलियां उड़ावो गलि गलियां मनावोरी ॥ अरि आवो० । ४ अमृत परभावना दिया जैन वानी । पीवो पिलावो दिखाय छल वलियां । दिखाय छल वलियां । दिखाय छल वलियां मनावोरी ॥ अरी आवो० ॥ ५



२३

तर्ज ।' सोरट अधिक मरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

अरे हिंसा का है फल भारितेरे से सहा न जागा भार । टेक ॥
चोरी झूठ कुशील प्रग्रह हिंसा अंग विचार ।
इनसे दुरगत होवे नरक में पड़े अनंती वार ॥ अरे० ॥ १ ।
सव जीव जान अपनी सम और करुणा मन धार ।
जाकी हिंसा तू करे वहतु अपने आप निहार । अरे० । २

हों हिंसासे निरधन निरबल नित दुख सहैं अपार ।
न्यामत तज हिंसक भाव भावसे करले पर उपकार । अरे० ३



२४

तर्ज़ ॥ राजा हूं मैं कौमका और इन्दर मेरानाम
॥ चाल इन्दर सभा की ॥

चेतन आनंद रूपजी सुनो हमारी बात ॥ तू राजा तीहूं लोक का है जगमें विख्यात ॥ १ ॥ जिनबानी माता तेरी नित गहो चरण चित लाय ॥ पद जाके सेवैं सदा इन्द्र चन्द्र शिरनाय ॥ २ ॥ करुना सब पर कीजिए दिलमें दया विचार ॥ दया धरमका मूल है यह निश्चे उरधार ॥ ३ ॥ एक संवर दो निरजरा और शुभ आश्रव मिलचार ॥ यह चतुरंग सैना बनी जिसका वार न पार । ४ । समकित है सैनापती है मंत्री ज्ञान निहार । ज्ञान सुता सुमता सती है तेरी पटनार । ५ । गुण अनंत हैं कोशमें है कोशाधक्ष सुदान । अन्न औषध नित दीजिए अभय दान और ज्ञान । ६ । ज्ञान सुमतकी सीखमें रहना चतुर सुजान । यहही हितकारी तेरे सुखकारी दुख भान । ७ । सत्यारथ उपदेश यह दियो श्री जिनराज । न्यामत मन निश्चै करो मिले मुक्त का राज ॥ ८ ॥



२५

तर्ज ॥ लेता जाइयोरे सांवरया बीड़ी पान पानकी ॥

पीजो पीजोरे चेतनवा पानी छान छानके ॥ टेक ॥ ॥ निरख निरख कर पग धर चलना ॥ जैन बानी सत मान मान के ॥ पीजो० । १ । हित मित वचन कहो मेरे प्यारे करोध लोभमद भान भान के ॥ पीजो० ॥ २ ॥ निश भोजन भूले नहीं करना । जीव पड़ेंगे वामें आन आनके ॥ पीजो० । ३ । न्यामत हलन चलन जो करना । करना सुमत हिए ठान ठानके । पीजो० । ४ ।



२६

तर्ज ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

जीया घर में सुमत तेरे नार कुमत पर क्यों ललचाते हो । टेक ॥ कुमत सुता है मोह मोह की लाग लगाते हो ॥ एक विषे वासनाकार नारके धोकेमें आते हो । जीया० १ कल्पतरूको तोड़ पेड़ वम्बूल लगाते हो । कांच खंडले चिंतामनी सिंधूमें बगाते हो । जीया० । २ । सुमत सुहागन त्याग कुमतको घरमें बुलाते हो । न्यामत शिव मारग छोड़ कुमारगको क्यों जाते हो । जीया० । ३ ।



२७

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक सरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

सुन कुमत दुहागन नार मेरे घर अब क्यों आती है ।टेक ॥ काल अनंत चतुर गतमें जीको भरमाती है ॥ तू जो जो दुख देती है बात वह कही नहीं जाती है ॥सुन० ।१। तू कुलटा धोका देकर नरकों ले जाती है । फिर वह गत करती है तेरी जो पार बसाती है। सुन० । २ । न्यामत प्रीत तजी अब तेरी बू नहीं भाती है । चौथ चान्द सम मुख तेरा मुझे क्यों दिखलाती है । सुन० । ३ ।



२८

तर्ज ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

घर आवो सुमत बरनारतेरी सूरत मन भाती है ॥ टेक ॥ कुमत दुहाग दिया तुझ कारन जोतू चाहती है । पूनम चंद्र तेरा मुखहै क्यों नहीं दिखलाती है ॥ घर० ॥ १ ॥ मुनि जन इंद्रबली नारायण सब मन भाती है ।स्वर्ग चन्द्र सूरज तु अंतको शिवले जाती है ॥ घर० ॥ २ ॥ तुझको पा परमाद मोहकी थित घट जाती है। न्यामत प्रीति करी तेरसे अब नहीं जाती है ॥ घर० ॥ ३ ॥

२९

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

अरे यह क्या किया नादान तेरी क्या समझपे पड़गई धूल । टेक । आंब हेत तैं बाग़ लगायो बो दिये पेड़ बम्बूल । अरे फल चाखेगा रोवेगा क्या रहा है मनमें फूल ॥ अरे० १ हाथ सुमरनी बांह कतरनी निज पद को गया भूल । मिथ्या दरशन ज्ञान लीया रहा समकित से प्रतीकूल ॥ अरे० । २ । कंचन भाजन कीच उठाया भरी रजाई शूल । न्यामत सोदा ऐसा किया जामैं व्याज रहा नहीं मूल ॥ अरे० ॥ ३ ॥



३०

तर्ज ॥ जल कैसे भरूं नदिया गहरी ॥

अब कैसे करूं निन्दिया गहरी । निन्दिया गहरी निन्दिया गहरी ॥ अब० ॥ टेक ॥ नाद करूं सुनने नहीं पावे । हाथ गहूं परमत वैरी ॥ अब० ॥ १ ॥ चाल कुमत समझी नहीं जावे । सुध बुध आज गई मेरी ॥ अब०२ ॥ न्यामत सीख सुनो सुमता की । सब सुधेर बिगड़ी तेरी । अब० ॥ ३ ॥



३१

तर्ज़ ॥ आज आली श्रीमती जननी सुत जायोरी ॥

आज प्रभू समकित मेंमन आई जी ॥ टेक ॥ भूला

फिरा भव बन बन में तो । कबहुना सुधबुध आई जी । आज० ॥ १॥ आज सुनी जिनबानी मैंने । मिटगई विकल पताईजी ॥ आज० ॥ २ ॥ तुमहो महा उपकारी सबके । नींद अनादि हटाई जी ॥ आज० ॥ ३ ॥ जिनबानी बसयो उरमेरे । ज्ञान कला उर छाई जी ॥ आज० ॥ ४ ॥ भव भव में प्रभु दरशन दीजो । न्यामत यही चित लाईजी । आज०।५



३२

तर्ज़ ॥ सेवैं सब सुरनर मुनी तेरा द्वार ॥

सेऊं नित नित एक चित चरण चार । टेक । चारौं मंगल चारौं उत्तम । यह ही अशरण शरण चार ॥ सेऊं०। १ सिद्ध अरिहंत मुनी जिन सासन । सुमती सुगती नितकरन चार । सेऊं० ॥ २ ॥ सब मंगलमैं आदि मंगल ॥ सब जग जन अघ हरण चार ॥ सेऊं० । ३ ॥ न्यामत यह निश्चे मन लायो । जग में तारण तरण चार ॥ सेऊं० ॥ ४ ॥



३३

तर्ज़ ॥ कहांले जाऊं दिल दोनों जहांमें इसकी मुशकिल है ॥

तुम्हारे दर्श बिन स्वामी मुझे नहीं चैन पड़ती है ॥ छबी बैरागतेरी सामने आंखोंके फिरती है ॥ टेक ॥ निराभूषण बिगत दुशन पदम आसन मधुर भाषन । नजर नैनोंकी

नासाकी अनीपरसे गुज़रती है ॥ तुम्हारे० ॥ १ ॥ नहीं करमों का डर हमकोहै जब लग ध्यान चरणों में। तेरे दरशन से सुनते हैं करम रेखा बदरती है ॥ तुम्हारे० ॥ २ ॥ मिलेगर स्वर्गकी सम्पत अचंभा कौनहै इसमें। तुम्हें जो नैन भर देखे गती दुरगतकी टरती है ॥ तुम्हारे० । ३ । हजारों मूरते हम ने बहुत सा गौरकर देखी । शांत मूरत तुम्हारी सी नहीं नज़रों में चढ़ती है । तुम्हारे० । ४ । झुकाते हैं जो सर चरणों में उनके फूल वर माला । गलेमें सुन्दरी शिवनारके हाथोंसे पड़ती है। तुम्हारे० ॥ ५ ॥ जगत सरताज है जिनराज न्यामत को दरश दीजे । तुम्हारा क्या बिगड़ता है मेरी बिगड़ी संवरती है ॥ तुम्हारे० ॥ ६ ॥



३४

तर्ज़ ॥ आज आली श्रीमती जननी सुत जायोरी ॥

आज जिन चरण शरण मन लायो जी । टेक । तुम भव तारक कलमल हारक । मुनी जन गण गुण गायो जी ॥ आज० ॥ १ ॥ शिव मग नेता मोहे भूभृत भेता ॥ सब ज्ञय ज्ञान उपायो जी ॥ आज० ॥ २ । अब मैं नरभवका फल पाया । समकित मेरे मन आयो जी । आज० । ३ । जनम जनम भव त्रिश्ना भागी । किलविष कल्प निसायो जी । आज० । ४ । जिन जन भक्ती धरी चित तेरी । छिन में

आप अपनायो जी । आज० ॥ ५॥ न्यामत जिन सनमुख सुख देखा । विमुख भए दुख पायोजी । आज० । ६ ॥



३५

तर्ज़ ॥ एजी हम आए हैं दरशन काज मिटावो प्रभु वीथा हमारी जी ॥

एजी प्रभु भवजल पतित उधार तुम बिन कोई नहीं ऐसा जी । टेक । और देव सब रागी द्वेषी । कैसे उतारें पार । हमें है भारी अंदेशा जी । एजी० । १ । तारण तरण तुमही हम जानी । तेरेहि गुण उरधार । हरेंगे करम कलेशा जी ॥ एजी० ॥ २ ॥ जींव अनंत प्रभु तुम तारे ॥ अबके हमारी बार यही न्यामत को भरोसाजी । एजी० । ३ ।



३६

तर्ज़ ॥ यह कैसे बाल हैं बिखेर यह क्या सूरत बनी गम की ॥

अहो जग बंधु जग नायक अर्ज़ इतनी हमारी है ॥ कि करमों ने मेरी इस जगमें आ हुरमत बिगारी है । टेक । मैं इस भव बन में फिर हारा चतुर गत दुख सहे भारी । कहूं मैं अपने मूँह से क्या बिपत जानो हो तुम सारी । १ । करम बैरी मुझे हर आन मन माना सताते हैं । मनुष तिर्यंच सुर नारकमें अरहट जूं फिराते हैं ॥ २ लुटेरे सारी दुनया के ज्ञान धन हर लिया सारा । पाप पुन पांवोंमें बेड़ी लगा तन

बंध में डारा ॥ ३ ॥ सिंघ बानर सरप शूकर नवल सब तुमने तारे हैं ॥ ऊंच और नीच नहीं देखा शरण आए उभारे हैं । ४ । सुजश तेरा सुना तुमहो हितू सब के विना कारन ॥ शरण आकर गही न्यामत उतारो हे तरण तारण ॥ ५ ॥



३७

तर्ज़ ॥ हमारे प्रभु मुकत वरण गएरी । बाकी बात मोहे भाई जान जीवों की बचाईजी ॥ हमारे० ॥

आली आज सारे विघन हरण भएरी । सबका भरम मिटाया । शिव मग दरसाया । आली आज सारे विघन हरण भएरी टेक ॥

दोहा ॥

आए जिन जब गरभमें, माता पिछली रैन ॥
अक्समात स्वप्ने लखे, सोला सब सुख देन ॥

झड़ी ।

बात पीयाको सुनाई ॥ सुन फल हरपाई ॥
सारे नगर में रतन बरसन भएरी ॥ आली० । १ ।

दोहा ।

जनम भया जिन राजका, सुर नर खग हरपाय ॥
गिर सुमेरपे लेगए, जयजयकार कराय ॥

झड़ी ।

क्षीरो दधि भरलाए । भुज सहस बनाय ॥
कर न्हवन जिनेन्द्र के भवन गये री । आली० ॥२॥

दोहा ॥

छिन भुंगर संसार लख, छोड़ दिया परवार ॥
लोकांतक सुर आय के, करी अस्तुती सार ॥

झड़ी ।

राज पाट तज दियो । बीतराग चित कियो ॥
बन मांही दिक्षा जैन की धरण गयेरी ॥ आली० ॥३॥

दोहा ॥

घात घातिया करमको, लिनो केवल ज्ञान ॥
सकल ज्ञय ज्ञायक भए, सब दरशी भगवान ॥

झड़ी ।

सात तत्व षट दर्ब ॥ इनकी परयाय सर्ब ॥
प्रभू दीव्य ध्वनी मांहीं बरणन कियेरी ॥ आली० ॥ ४ ॥

दोहा ॥

नो करमन थित जब घटी, भए आप शिवरूप ॥
निरआकुल आनंदमय, अतुल शक्ति चिदरूप ॥

झड़ी ।

परमातम कहाये । मुनी जन गुण गाए ॥
लख न्यामत जिनेन्द्र के चरण गहेरी ॥ आली० ॥५॥

३८

तर्ज ॥ यह कैसे बाल हैं बिखरे यह क्या सूरत बनी गम की ॥

सुनो सिद्धार्थके नंदन सती त्रिशला उरानंदन । निरंजन जन जगत रंजन विपत अपनी सुनाऊं मैं ॥ टेक ॥ मेरा मन मोह मतवारा सेज मिथ्यात पग धारा ॥ पड़ा अज्ञान निद्रामें कहो क्योंकर जगाऊं मैं ॥ सुनो० ॥ १ । कुमत आशक्त रैन और दिन विषेमें खोदिया निज गुण । सुमत सुन्दर सुहागनको तजा क्योंकर मनाऊं मैं ॥ सुनो० ॥ २ ॥ क्रोध मदलोभ मायाका बनाया है कोट भारी । राग और द्वेष का पैहरा लगा जाने न पाऊं मैं ॥ ॥ सुनो० ॥३॥ तूही है देव देवनको करो वस इस मेरे मनको । लहे न्यामत जो निज गुणको चरणमें चित लगाऊं मैं ॥ सुनो० ॥ ४ ॥



३९

तर्ज़ ॥ काहेको चले गिरनारी विनती तो सुनायो ॥

तू हितकारि दुख हारि विनती तो सुनायो ॥ टेक ॥ बैरि करम महा दुखदाई । इनसे करो छुटकारी ॥ विनती० ।१ । क्रोध लोभ मदमाया चारो । दुखकारी अघभारी । विनती०।२॥ न्यामत शरण चरण तुमरीली । बेग करो उद्धारी । विनती०३

४०

तर्ज ॥ सुन सुनरी भावी भय्याको भेजूँ परदेश ॥
नहीं नहींरे देवर सेजोंकी शोभा उनके साथ ॥
(यह गीत अक्सर औरतें गाती हैं)

परदेसया में कौन चलेगा तेरे लार ॥ टेक ॥ चलेगी मेरी माता चलेगी मेरी नार । नहीं नहीं रे चेतन जावेंगी दर तक लार ॥ परदेसया० ॥ १ ॥ चलेगा मेरा भाई चलेगा मेरा यार । नहीं नहींरे चेतन फूंकेंगे अगन मंझार ॥ परदेसया० ॥ २ ॥ चलेगी मेरी माता की जाई मेरी लार । नहीं नहीं रे चेतन झूठा है सारा व्योहार ॥ परदेसया० ॥ ३ ॥ चलेगा मेरा बेटा पिता परवार । नहीं नहींरे चेतन मतलब का सारा संसार ॥ परदेसया० ॥ ४ ॥ चलेगी मेरी फौज चलेगा दरबार । नहीं नहीं रे चेतन जीते जी की है सरकार ॥ परदेसया० ॥ ५ ॥ चलेगा मेरा माल खज़ाना घरबार । नहीं नहींरे चेतन पड़ा रहेगा सब कार ॥ परदेसया० ॥ ६ ॥ चलेगी मेरी काया चलेगा मनसार । नहीं नहींरे न्यामत छोड़ेंगे तोहे मंझधार ॥ परदेसया० ॥ ७ ॥

इति द्वितीय वाटिका समाप्तम् ॥




श्री जिनेन्द्रायनमः

तृतीय बाटिका

४१

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्दादिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

अपूरब है तेरी महिमा कही हमसे नहीं जाती । तुमही सच्चे हितू सबके तुमही हरएक के साथी ॥ टेक ॥ पाप जब जगमें फैला था गरम बाजार हिंसाका । बिचारे दीन जीवों को कभी नहीं चैनथी आती । अपूरब० । १ । हजारों यज्ञ में लाखों हवन में जीव मरते थे । के जिसको देखकर भर आति थी हरएककी छाती । अपूरब० ॥ २ ॥ जगत कल्यान करनेको लिया औतार तब तुमने । सुरासुर चर अचर सबको तेरी बाणीथी मनभाती । अपूरब० ॥ ३ ॥ दयाका आपने उपदेश दुन्यामें दिया आके । वगरनै ज़ालिमोंके हाथसे दुन्या थी दुखपाती । अपूरब० ॥ ४ ॥

जो था पाखंड दुन्यामें हुआ सबदूर इकदममें । धुजा हरसू नज़र आने लगी जिनमतकी लहराती । अपूरब० । ५ । जगतकरताके और हिंसाके जो झूठ मसायल थे । न्याय परमाण से तुमने किया रद सबको इकसाथी । अपूरब० ॥ ६ ॥ हटा हिंसा किया तुमने दयामय धर्म को जारी । न्यायमत जाय बलहारी है दुन्या जश तेरा गाती । अपूरब० ॥ ७ ॥



४२

तर्ज़ ॥ बूंटी खानेका कैसा बहाना हुआ

(भद्रकाली भीलनीका अपने पतिको मुनोंका शिकार करने से रोकना और भीलका मुनोंके चरणोंमें गिरना और महावीरका औतार लेना)

कैसे त्यागीका तुमने निशाना किया । कैसे त्यागीका ॥ मुझको रुसवाय सारा ज़माना किया ॥ कैसे० ॥ टेक ॥ यह वैरागी महान । नहीं क्रोध और मान ॥ करें आतमका ध्यान । तजे महलो मकान ॥ आके जंगलमें अपना ठिकाना किया ॥ कैसे० ॥ १ ॥ दान मुक्तीका सार । सारे नर और नार । मांगे हाथपसार करे सबका उपकार । नहीं छोटे बड़ेका बहाना हुवा ॥ कैसे० ॥ २ ॥ इनको मिरगी न जान । ऐसा होके अयान ॥ मत खैंचे कमान । मतले इनकीजान । कैसे दिलमें दयाको रवाना किया ॥ कैसे० ॥ ३ ॥ सच जानो सुवीर ॥ होगी नरकोंमें पीर ॥ मेरे मनको न

धीर । मैं तजूंगी शरीर ॥ तुमजो जोगीका इस दम निशाना किया ॥ कैसे० ॥ ४ ॥ सुनके भील सुजान । डरामनमें अज्ञान । डारे तीरो कमान । जगाहिरदे में ज्ञान । भद्रकाली को लेकर पयाना किया ॥ कैसे० ॥ ५ ॥ मुनी चरनन मंझार । गिरे भील और नार ॥ लेके भील अघकार । महा-वीर औतार ॥ न्यामत उपकार जमाना किया ॥ कैसे० ॥६॥



४३

तर्ज़ ॥ जल कैसे भरूं नदिया गहरी ॥

दुख कासे कहें कलजुग भारी ॥ कलजुग भारी कलजुग भारी ॥ दुख० ॥ टेक ॥ दया धरम हिरदे नाहीं । करे जीव घात हिंसा भारी ॥ दुख० । १ ॥ शील गया भरत में से । कर दिया नियोग कुपथ जारी ॥ दुख० । २ । झूठ बचन निश दिन बोलें ॥ करैं कपट दूत चोरी जारी । दुख० ।३ । किस विध सुख होवे प्यारे । करोकाम महा दुख अघकारी । दुख०। ४ ॥ हमदरदी किस विध होवे। लड़े आपस में देदे गारी । दुख० । ५ । भरत क्यों ना दुखी होवे । तजा जैन धरम सब सुखकारी। दुख० ॥ ६ ॥ तज पक्षपात जिनमत देखो । नहीं राग द्वेष सब हितकारी ॥ दुख० ७ ॥ तज आलश पुर्शार्थ करो ॥ न्यामत सुधरे बिगड़ी सारी । दुख० ॥ ८ ॥



४४

तर्ज़ ॥ रघुवर कौशल्याके लाल मुनीकी यज्ञ रचानेवाले ॥

रावण सुनो सुमत हियधार सती सीता के चुरानेवाले। सीताके चुरानेवाले कुलके दाग़ लगानेवाले ॥ रावण० ॥ टेक ॥ रानी थी दसआठहज़ार। लाया क्यों हरकर परनार। तजकर धरम सकल सुखकार। शीलकी बाड़ हटाने वाले ॥ रावण० ॥ १ ॥ जो तुझे थी सीता से प्रीत । लाया क्यों नहीं स्वयम्वर जीत ॥ यह थी छत्री पनकी रीत। छत्री नाम लजानेवाले ॥ रावण० ॥ २ ॥ जो सीता लीनी थी ठान । लाया क्योंनहीं संमुख आन । तुमतो थे जोधा वलवान। गिर कैलास हिलानेवाले ॥ रावण० ३ जाकर डंडक वनके बीच। सूनीलाए सतीको खींच ॥ कीना काम नीचसे नीच । बने नरकोंमें जानेवाले। रावण० ॥ ४ ॥ होनाथा सो होगया खैर। उलटी देदो सीता फेर ॥ अच्छा नहीं रामसे बैर। न्यामत कहते कहनेवाले। रावण० ५ ॥



४५

तर्ज़ ॥ कत्ल मत करना मुझे तेग़ो तबरसे देखना ॥

है नहीं कलजुग यह है करजुग समझके देखलो ॥ जैसा जो करता है फल पाता है करके देखलो ॥ टेक ॥ जो दया करते हैं औरों पै वही पाते हैं चैन । दुख सागर में पड़े

पापी पापकर देखलो ॥ है० ॥ १ ॥ अपने जीनेके लिये जो और का काटें गला । सुखनहीं पातेहैं वह भी जी सताके देखलो ॥ है०२॥ न्यायमत हिंसा का फल अच्छा कभी होता नहीं ॥ आगई भारत पे आफ़त आंखउठाके देखलो । है० ६ ॥



४६

तर्ज़ ॥ याद आवेगी तुझे मेरीवफा मेरे बाद ॥

आशना काम न आवेगा कोई मेरे बाद ॥ क़ाफला सारा बिछड़ जावेगा बस मेरे बाद ॥ १ ॥ जब तलक मैं हूं तो हैं यार संगाती तेरे ॥ फिर कोई पास भी आवेगा नहीं मेरे बाद २ ॥ है यकीं मुझको कि अगनी में जलादेंगे तुझे ॥ घर में रहने तुझे देगा न कोई मेरे बाद । ६ ॥ न्यामत कहदे यह काया से कि जप तप करले । वरना फिर खाक में मिल जावेगी तू मेरे बाद ॥ ४ ॥



४७

तर्ज़ ॥ पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

मिलना मेरा चेतन से अब आता नज़र नहीं । किस देश में वह है मुझे उसकी खबर नहीं ॥ टेक ॥ किस तौरसे चेतन को कुमत फंदसे लाऊं । मैं मोक्ष बंदमें मेरा होता गुज़र नहीं ॥ मिलना० ॥ १ ॥ जिन राज जगत लाज तू मेरी

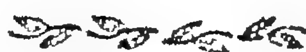
सहाई कर । चेतन बिना जीको मेरे आता सबर नहीं ॥ मिलना० ॥ २ ॥ चेतनको जगत फंदमें बीता अनाद काल । न्यामत तुम्हारी बात में कुछ भी असर नहीं ॥ मिलना० ॥ ६



४८

तर्ज़ ॥ अरे मुवे छोड़ो मोरी बय्यांरे मुरकयां ॥

सुनियो सुमत अरदास हमारी । बिनती हमारी प्यारी अरज़ हमारी ॥ सुनियो० ॥ टेक ॥ जग महारानी प्यारी सब सुखदानी । दुक्ख मिटानी मेरी सुनियो पुकारी ॥ सुनियो०१॥ सबकी प्यारी महा उपकारी । लाखों पहोचाए तूने मुकत मंझारी ॥ सुनियो० ॥ २ ॥ सुर नर मुनि तेरा जश गावें । सीस नवावें तेरे चरण पियारी ॥ सुनियो० ॥ ३ ॥ श्रीजिन हैं तेरे हितकारी । वह सुखकारी दुखहारी हितकारी ॥ सुनियो० ॥ ४ ॥ कुमताकी छलबल अघकारी । चेतनको लावो प्यारी दुखसे निकारी ॥ सुनियो० ॥ ५ ॥ न्यामत कोनितसीख सुनावो । तू सब जाने जिन वाणी मेरी प्यारी ॥ सुनियो० ॥ ६ ॥



४९

तर्ज़ ॥ राजा बल मत दे दान जमीका ॥

अरे जीया मतकर संग विषयनका ॥ टेक ॥ रावण ने

कुलनाश करायो । लख मुख पर तिरयन का ॥ अरे० ॥ १ ॥ सब सम्पत पांडवोंने खोई । खेल खेल जुवनका ॥ अरे० २ ॥ न्यामत सात बिषे को तजकर । गाले गुण भगवनका । अरे० ३ ।



५०

तर्ज़ ॥ इन्दर सभा ॥ घरसे यहां कौन खुदाके लिये लाया मुझको ॥

हाय इन भोगोंने क्या रंग दिखाया मुझको । बे खबर जगत के धन्दोंमें फंसाया मुझको ॥ टेक ॥ मैं तो चेतन हूं निराकार सभी से न्यारा । दुष्ट भोगों ही ने करमोंसे बंधाया मुझको ॥ हाय० ॥ १ ॥ नींद गफलत से मेरी आंख कभी भी न खुली । भोग इन्द्री और बिषयोंने भुलाया मुझकों ॥ हाय० ॥ २ ॥ ज्ञान धन मेरा हरा रूप दिखाकर अपना । जून चौरासीमें भटकाके रुलाया मुझको ॥ हाय० ३ ॥ अब न सेऊंगा कभी भूल के इन बिषयोंको । न्यामत जैन धरम अब तो है पाया मुझको ॥ हाय० ॥ ४ ॥



५१

तर्ज़ ॥ मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

चेतन जरा दे कान सुनएकबातहमारी ॥ हम बैरी अनादी नहीं टारे से टरेंगे ॥ १ ॥ देवों को फंसा लेते हैं मोह जाल डालकर । ईसां की असल क्या नहीं सुरपत से डरेंगे । २ अय

न्यामत सब जीव हैं करमों के फंद में । अहमेन्द्र और धनेन्द्र सभी बस में करेंगे ॥ ३ ॥



५२

तर्ज ॥ मामूर हूं शोखी से शरारत से भरी हूं ॥

चेतन हूं निराकार हूं हरबात का ज्ञाता ॥ पर क्या करूं जगवन्दसेफंदेमें फंसा हूं ॥ १ ॥ शक्ती है कि करमों को में इकदम में उड़ा दूं । लाचार हूं इस मोहकी नागन ने डसा हूं ॥ २ ॥ क्या अस्ल है करमोंकी मेरे तेजके आगे । इक छिनके छिनमें ध्यानकी अगनीसे जला दूं ॥ ३ । अब आन गही न्यायमत जिन शर्ण तुम्हारी । अरदास यही है कि में करमों से रिहा हूं ॥ ४ ॥



५३

तर्ज ॥ जिया तू तो करत फिरत मेरा मेरा ॥

जिया तूने कैसी कुमत कमाई । टेक ॥ नौं दस मास गरभमें बीते नरक जून भुगताई । अंधकूपसे बाहर आयो मेल रह्यो तन छाई ॥ जिया० । १ ॥ बालापन सब खेल गंवायो तरण भयो सुधआई । कामदेव आंखोंमें छायो पिछ्ली बात विसराई ॥ जिया० ॥ २ ॥ क्रोध मान माया मद राचो जो चारों दुखदाई । जमके दूत लेन जब आवें भूल

जावै चतुराई ॥ जिया० ॥३॥ धन्य भाग यह जान आपने उत्तम नर गति पाई । उत्तम कुल में जनम लियो है विर्था काहे गंवाई । जिया० ॥ ४ ॥ जैन धरम न्यामत तूने पाया पूरब करम सहाई । तज मिथ्यात गहो तन मनसे जो जिन सासन गाई । जिया० ॥ ५ ॥



५४

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

बिना भक्ती सुनो चेतन जगतमें तूने दुखपाया । अरे अबतो समुझ मूरख कि ओसर तेरा बन आया ॥ टेक ॥ अनंती काल नरकोंमें सहे दुखड़े बहुत तूने । गया अब भूल क्योंमूरख तुझे है मद क्या छाया । बिना० ॥ १ । इकइन्द्री से पचेन्द्रीतक पशू पंक्षीकी गत भोगी । कहीं जलचर कहीं नभचरसमझले अबतो समझाया ॥ बिना० ॥ ॥ २ ॥ सुरगमें भोग सुरयन संग बहुतसी सम्पदा पाई । लखा मुरझाईमाला को तू अपने मनमें पछताया ॥ बिना० । ३ ॥ मनुष भव में गरभ माहीं उठाये कष्ट दुरगत के । तरुण होकर फंसा विषयन काम आखों में जबछाया । बिना० ॥४॥ बृध होकर करी मम्ता गंवाए तीनो पन अपने ॥ भला पछताय क्या होवे काल जब वाके मुंह आया ॥ बिना० । ५ ॥ भागधन न्यायमत जानो कि उत्तम काया नर पाई । करो शरधान जिनबाणी ये जो जिनराज फरमाया । बिना० । ६ ।

५५

तर्ज़ ॥ चलो अबतो प्रभुजीका करलो न्हवन ॥

कहीं देखे हमारे गुरु जिन मुद्रा धार । जिन मुद्रा धारजिन मुद्रा धार। कहीं देख० ॥ टेक ॥ सीत समे दरयाव किनारे सीत सहें सुमता को विचार । कहीं० ॥ १ ॥ ग्रीषम ध्यान धरें गिरवर पर । तपकर करें करमोंका संघार । कहीं० । २ ॥ बरषा रुत तरवर के नीचे । छिन छिन सहें बुन्दोंकी पछार कहीं० ॥ ३ ॥ न्यामत जो ऐसे गुर मिलजां । छिनमें कर देवें उद्धार । कहीं० । ४ ॥



५६

तर्ज ॥ हमने दर परदा तुझे माहजबीं देखलीया
अब न कर परदा कि ओ परदेनशीं देख लिया ॥

हमने अपनेहीमें वह माहजबीं देखलीया । अब नहीं परदा रहा परदा नशीं देखलिया । टेक । मारे फिरतेथे कहीं दहरमें हूरोंके लिये । हमने वह रशके क़मर आज यहीं देख लिया । हमने० ॥ १ ॥ सख्त नादानी है लोगोंकी जो परयों पे मरें । क्यों परिज़ाद हिरदयमें नहीं देख लिया ॥ हमने० । २ ॥ कौन मुशकिल है जो कहतेहो कैसे देखें शीशे दिलको किया साफ वहीं देख लिया । हमने० ॥३॥ न्यायमत मसले मसायल का तो क़ायल है नहीं । हमने तो करके तजुरबा भी यहीं देख लिया । हमने० ॥ ४ ॥

५७

तर्ज़ ॥ अच्छे सय्यां थामलो हमारी जरा बय्यांजी ॥

एजी प्रभु राखलो शरण अपनय्यांजी ॥ टेक ॥ मैं अज्ञान न जाना तुमको । आज भरम मिटगय्यां जी ॥ एजी० ।१। मोहे अरी हम धोका दीना । दर दर मोहे भटकय्यांजी ॥ एजी० ॥ २ ॥ तुमतिहु जग नामी जग स्वामी । यह निश्चे हम भय्यांजी ॥ एजी० ॥ ३ ॥ न्यामतकी जो भूल हुई है । माफ़ करो पद गहय्यां जी ॥ एजी० ॥ ४ ॥



५८

तर्ज़ ॥ राग जंगला लावनी जंगला गारा ॥

क्यों परमादी हुवारे तुझको बीता काल अनंता क्यों परमादी हुवारे ॥

सब नर नारी सुनियो जी । कहुं नाटक सती दरोपद का सब नर नारी सुनयो जी ॥ टेक ॥ नाटक सुनो दरोपद का जी महा सती सतधार। किम स्वयम्बर मंडप रचाजी किम अरजुन भरतार । सबनर० ॥ १ ॥ धरम पुत्रने दूतरचायो दुरयोधन के तीर । राज पाट सब हार दिया दुस्सासन पकड़ा चीर । सबनर० ॥ २ ॥ ओंकार द्रोपदने सुमरा आए सासन बीर । महासती का चीर बढ़ाया बंधागए सबधीर सबनर० ॥ ३ ॥ बन बनमें भ्रमते फिरे बैराट गए नरनार । कीचकने दुरभाव किया तब दिया भीमने मार ॥ सब नर०४

कोप किया नारदने छिनमें लीना चित्र बनाय । खंड धात कीजा पहोंचा और दिया पदमको जाय । सबनर० ॥ ५ ॥ तुरत सुनाया हुक्म देवको हरलावो इसबार ॥ सेज समेत उठालाया वह सती दरोपद नार ॥ सब नर० ॥ ६ ॥ शील बचाया द्रोपदने और तज दिया अन जल हार । कृश्नहरी पदमोतर जीता दीना शंकट टार ॥ सब नर० ७ ॥ राजपाट तज भई अर्जका लीना संजम धार ॥ तिर्या बेद को छेद दरोपद पहोंची स्वरग मंझार ॥ सब नर० ॥ ८ ॥ आद अंत सब कहूं हाल द्रोपदका सुमत बिचार । न्यामत सुमरणकर जिन जीका नाटक उतरे पार । सब नर० ॥ ९ ॥



५९

तर्ज़ ॥ चंबोला पारकी चालमें ॥

दोहा ।

दुख सागर संसार में, जानो सभी असार ।
किसके तात और भ्रात हैं, और किसके सुत नार ।

चंबोला ॥

किसके सुत और नार जगत में स्वारथका यह ज़माना है ॥
मोह जाल तज देखो नहीं कोई अपना सभी बिगाना है १ ॥
जूं सूके तरवर पंखी उड़ जावें पास नहीं आते ।
सूके सरवर ये नर नारी पशु भटगीर नहीं जाते ॥ २ ॥
ऐसी प्रीति लखो घरकों की सब स्वारथ के साथी हैं ।

अरे ना काहू का मात पिता और ना कोई यार संगाती है। ३
ऐसा जान शरधान करो सम्ता अपने मन में लावो ॥
रागद्वेष तज दे न्यामत जो भवसागर तिरना चाहो ॥ ४ ॥



६०

तर्ज़ ॥ कत्ल मत करना मुझे तेग़ो तबरसे देखना ॥

जब से जिनमत को तजा हिंसक ज़माना हो गया।
सब के दिल से भाव करुणाका रवाना हो गया। टेक ॥
झूठ चोरी और ज़िनाकारी गई हदसे गुजर। पाप करतेआप कलयुगका बहाना हो गया ॥ जबसे० ॥ १ जीव हिंसा जिस में है उसको कलाम ईश्वर कहें। हाय भारत आज कल बिलकुल दिवाना हो गया ॥ जब से० । २ । यादरखये जीव हिंसासे नहीं होगी निजात ॥ लाखों को हिंसासे है नरकोंमें जाना हो गया ॥ जब से० ॥ ३ ॥ एक दयासे दूसरे भी आपके हो जाएंगे। देखलो हिंसासे यह भारत बिगाना हो गया ॥ जबसे० ॥ ४ ॥ भाई से भाई लड़ें हरगिज़ दया आती नहीं। फूटका दिल में तुम्हारे क्यों ठिकाना हो गया। जबसे० ॥ ५ ॥ न्यायमत अब तो दयाका भाव दिलमें कीजिये। हिंसा करते करते तो तुमको ज़माना हो गया। जबसे० । ६ ॥

इति तृतीय वाटिका समाप्तम् ॥





श्री जिनेन्द्रायनमः

चतुर्थ बाटिका

६१

तर्ज ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे ससीहा हो नहीं सकता ॥

यह कैसी आके कजरी आजकल भारत पे छाई है । घटा आलश कुमत हिंसाझूठ जुड़ जुड़के आई है ॥ टेक ॥ मूरखता शोक हटचिंता अंधेरा छागया यारो । धुवांधार हर तरफ लालच ताअस्सुव ने मिचाई है ॥ यह० ॥ १ ॥ निरुद्यमता अविद्या बिजलियां कड़काके गिरती हैं । धुजा धीरजकी हिम्मतकी अबस इसने गिराई है । यह० ॥ २ ॥ भूककी रोगकी दुखकी बेगसे नहर चलती है । सभीसुख सम्पदा दारिदकी नदियोंने बहाई है । यह० ॥ ३ ॥ हसद के फूटके ओले तड़ातड़ रातादिन बरसें । नहीं मालूम होता कौन दुशमन कौन भाई है ॥ यह० ॥ ४ ॥ प्लेग अरु

कहत की झुरयां चलें दिल हिल गया सबका। छुदा पीड़त प्रजा दादुर गजब हा हा मिचाई है ॥ यह० ॥ ५ ॥ दया दिल में करो यारो प्रसपर दुख हरो सबका। कहे न्यामत दयाके भावसे होती सहाई है। यह० ॥ ६ ।



६२

तर्ज़ ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

जगत सब छानकर देखा पता सतका नहीं पाया। निजात होनेका जिनमतके सिवा रस्ता नहीं पाया। टेक। कोई न्हानेमें शिव माने कोई गानेमें शिवमाने। कोई हिंसामें शिवमाने अजब है जाल फैलाया। जगत० ॥ १ ॥ कोई मरने में शिवकहता कोई जरनेमें शिव कहता। दारचढ़ने में शिव कहता नहीं कुछभेदहै पाया। जगत०। २ ॥ कोईलोभी कोई क्रोधी किसीके संगमें नारी। जटाधारी लटाधारी किसीने कान फड़वाया ॥ जगत० ॥ ३ ॥ कोई कहता है मुक्तीसे भी उलटे लौट आते हैं। अजब है आपकी मुक्ती मुक्तहो फिर यहां आया। जगत० ॥ ४ ॥ कोई ऐसा मान बैठा है मुक्त ईश्वरके कबजे में। सिफारिश बिन नहीं मिलती यहां है हकने फरमाया। जगत० ॥ ५ ॥ कोई कहता है कुछ्यागे कोई कहता है कुछ्यागे। जो सच पूछो हैं दीवाने असल रस्ता नहीं पाया ॥ जगत० ॥ ६ ॥ अगर मुक्ती की

ख्वाहिश है जिनमत की शरणलीजे । पढ़ो तत्वार्थ शासन जिसमें शिव मारग है बतलाया ॥ जगत० ॥ ७ ॥ नहीं यहां पे जरूरत है किसी रिशवत सिफारिशकी । चलाजो जैन शासनपे उसीने मोक्षको पाया ॥ जगत० ॥ ८ ॥ करम बंद तोड़के न्यामत बनो आज़ाद करमोंसे । नहीं कोई रोकने वाला रिशभ जिन ऐसा फ़रमाया ॥ जगत० ॥ ९ ॥



६३

तर्ज ॥ जागो जागो जी शाहज़ादे तुमपर वारनारे ॥

जागो जागो भारत बाशी दुखपरिहारनेरे ॥ टेक ॥ आलश नींद नैनमें बसगई । फूटफांससे सबको कसगई । बनकर नाग अविद्या डसगई ॥ सब मतवारनेरे ॥ तुम० ॥ १ ॥ जो यहां थे क्षत्री रणबीर । होगए निरबल और अधीर ॥ डाली सबके गले ज़ंजीर । हिम्मत हारनेरे ॥ तुम० ॥ २ ॥ बनगये सब पुरशारथ हीन । फिरते महा दुखी और दीन ॥ भारत होगया तेरातीन ॥ आलश कारनेरे ॥ तुम० ॥ ३ ॥ हिरदय दया धरमको धार । फूटक्रोधासुरको मार । न्यामत आलश नींद निवार ॥ सब सुखकारनेरे ॥ तुम० ॥ ४ ॥



६४

तर्ज ॥ ढोला । आज तो जगाई बैरी नींद में ॥

अरे हां रे चेतन भूला फिरे है गत चार में ॥ टेक ॥

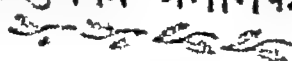
अब नर भव पायो तूने । ला मन पर उपगारमें ॥ अरे० ॥ १ ॥ मल राग न धोया प्रानी । उमर गंवाई दोई चार में ॥ अरे० ॥ २ ॥ सुन सीख सुगुरकी न्यामत । हितू नहीं कोई संसारमें ॥ अरे० ॥ ३ ॥



६५

तर्ज ॥ चरखा लेदे कमरके हिलानेको ॥

कूंजी देले घड़ीके चलाने को । चलाने को शिव जानेको ॥ कूंजी देले घड़ीके चलाने को ॥ टेक ॥ पांचोंही इन्द्री बनीं पांच सूई ॥ बदी नेकीकी बातें बतानेको ॥ कूंजी० ॥ १ ॥ मनका फनर ज्ञान गुणकी कमानी । तेरा चेतन है चक्कर फिराने को ॥ कूंजी० ॥ २ ॥ सत्य धरमकी कूक लगावो । यही काफी है पुर्जे हिलानेको ॥ कूंजी० ॥ ३ ॥ करमोंकी रज से घड़ीको बचावो । सदा रखना ववेक बचानेको ॥ कूंजी० ॥ ४ ॥ सम्वरका ढकना लगावो घड़ी पे । निरजन करो मैल हटाने को ॥ कूंजी० ॥ ५ ॥ सुमतीकी घंटी घड़ी पे लगी है । ख्वाब गफलतसे तुझको जगानेको ॥ कूंजी० ॥ ६ ॥



६६

तर्ज ॥ पुरुन्दा होनेको अब किस्मतमें तय्यार नहीं ॥
(नाटक हकीकतराय)

ये धरम दुनियामें जीके हमें करना क्या है । लेके अपजश जो मरें यांगता मरना क्या है ॥ टेक ॥ काल टाला नहीं

टलता है किसी का यारो ॥ जब यह तय हो ही चुका फिरतो झगड़ना क्या है ॥ वे धरम० ॥ १ ॥ नज़र आताहै नहीं जीव को शरना कोई ॥ आपको आप शरण औरका शरना क्या है ॥ वे धरम० ॥ २ ॥ देहको छोड़ेंगे तो देह नई पावेंगे । जीव मरता है नहीं मरने से डरना क्या है ॥ वे धरम० ॥ ३ ॥ करपर उपगार मरें बाद रहेंगे ज़िंदा ॥ नाम जिनका रहे ज़िन्दा उन्हे मरना क्या है ॥ वे धरम० ॥ ४ ॥ राम रावणसे बली भीम से जोधा प्यारे ॥ सारेही खाक हुवे हमको अकरना क्या है । वे धरम० । ५ ॥ ज़िंदगीका तो नहीं कुछ भी भरोसा न्यामत । करले जो करना है फिर अन्तमें करना क्या है । वे धरम० । ६ ।



६७

तर्ज ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

बिना सम्यक्त के चेतन जनम बिरथा गंवाता है । तुझे समझाएं क्या मूरख नहीं तू दिल में लाता है ॥ टेक ॥ अथिरहै जगत की सम्पत समझले दिलमें अय नादां । राव और रंक होने का यूंही अफसोस खाता है ॥ बिना० ॥ १ ॥ ऐश इशरतमें दुख होवे कहीं दुखमें महा सुख हो । क्यों अपने में समझता है यह सब पुदगलका नाता है ॥ बिना० ॥ २ ॥ बिनाशी सब तू अबिनाशी इन्हो पे क्या लुभाता है ॥ निराला भेस है तेरा तू क्यों परमें फंसाता है ॥ बिना० ॥ ३ ॥ पिता सुत बंधु और भाई सुहेली संग की नारी ॥ सुवारथ की सभीयारी

भरोसा क्या रखाता है ॥ बिना० ॥ ४ ॥ अनादी भूल है तेरी सरूप अपना नहीं जाना ॥ पड़ा है मोह का परदा नजर तुझको न आता है ॥ बिना० ॥ ५ ॥ है दरशन ज्ञान गुण तेरा इसे भूला है क्यों मूरख । अरे अब तो समझले तू चला संसार जाता है ॥ बिना० ॥ ६ ॥ तू चेतन सबसे न्यारा है भूलसे देह धारा है । तूहै जड़में न जड़ तुझमें तू क्या धोकेमें आता है ॥ बिना० ॥ ७ ॥ जगतमें तूने चित लाया कि इन्द्री भोग मन भाया । कभी दिल में नहीं आया तेरा क्या जगसे नाता है ॥ बिना० ॥ ८ ॥ तेरेमें और परमातममें कुछ नहीं भेद अय चेतन । रतन आतमको मूरख कांच बदले क्यों बिकाता है ॥ बिना० ॥ ९ ॥ मोह के फंद में फंस कर क्यों अपनी न्यायमत खोई ॥ करम जंजीर को काटो इसी से मोक्ष पाता है । बिना० ॥ १० ।



६८

तर्ज ॥ इन्दरसभा ॥ राजा हूं मैं कौमका और इन्दर मेरा नाम

सुनो जगत गुर बीनती अरज करूं महाराज । तुमतो दीन दयाल हो सभी जगतकी लाज ॥ १ ॥ करम महा रिपू जोर हे डरे कहूसे नाय ॥ मन माना दुख देत हैं कीजे कौन उपाय ॥ २ ॥ कभू नरक लेजात हैं निकट निगोद मंझार । कभु सुरनर पशूगत करें जानत सब संसार ॥ ३ ॥ मैं तो एक अनाथ हूं यह वैरी अगिनंत । बहोत किया बे-

हाल मैं सुनो गुरू निरग्रन्थ । ४ इनका नेक बिगाड़मैं किया नहीं जिनराज । बिनकारण जग बंदसे बैर भयो महाराज ५ । अब आया तुमपास मैं स्वामी रिषभ जिनन्द । करमन दुष्ट बिनाश दो होय मुकत आनंद । ६ । न्यामत बीनती करे चरणन सीस नवाय । पद पंकज सेऊं सदा और नहीं कुछचाह ॥ ७ ॥



६९

तर्ज़ ॥ कहनय्या तेरा कारोरी कैसे ब्याहूं राधे ॥

कैसे देह धारा जीया तूतो नयारा ॥ टेक ॥ निराकार चेतन तू कहये सब बातों का ज्ञाता । अपनारूप आप नहीं देखा कैसे जीया तू भयारे मतवारा ॥ कैसे० ॥ १ ॥ करता हरता नाम तुम्हारो अलख रूप अबिनाशी । न्यामत समझ नहीं कुछ आता मान लिया कैसे लाल और कारा ॥ कैसे० २



७०

चाल ॥ होली (चलत चाल)

यही है जैन धर्मकी होरी । सतसंग मिलोमन क्रोध तजो । यही० ॥ टेक ॥ परस्पर प्रीत करोरे भाई । छोड़ो आपस में जोरा जोरी ॥ सतसंग० ॥ १ ॥ पर उपकार गुलाल बनाओ

दया धरमकी खेलिये होरी ॥ सतसंग० ॥ २ । न्यामत ऐसी होरी खेलो । होवे करमनकी तोराफोरी ॥ सतसंग० ३



७१

तर्ज ॥ सब ठाटपड़ा रहजावेगा जब लाद चलेगा बंजारा ॥

यहां कोई किसीका यारनहीं एक धरम जीवका साथी है ॥ टेक ॥ भाई बंध स्वारथके साथी नहीं कोई मीत और नाती है । वह अंत समय दूरहोते हैं जो कहते यारसंगाती हैं ॥ यहां० ॥ १ ॥ तिरिया चंचल मनकी प्यारी जो आज तेरी मनभाती है । जब नाता जगमें टूटचला तब पास ज़रा नहीं आती है ॥ यहां० ॥ २ ॥ यह देह जिसे अपनी करमानी अंत दग़ा दे जाती है । जब दूतमोतका बांध चले यह संग तेरे नहीं जाती है ॥ यहां० ॥ ३ ॥ अय न्यामत क्यों भूला फिरता है बात तेरी नहीं भाती है। धरमकी नाव में बैठचलो भवसागर पारहोजाती है ॥ यहां० ॥ ४ ॥



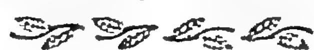
७२

तर्ज ॥ टूटे न दूधके दांत उपर मेरी कैसे कटेयाली (बीच बीच में दोहे है)

कहो किसे छुलाना देरी सखी इन करमन नटखटका । चली ज्ञान जल भरने मारग रोक लिया शिवकी पनघट

का । लपक झपक झटहो लटपट सम्कितका फोड़ दिया मटका । टेक । लोभका मलाहै ऐसो मेरे मुख पे गुलाल । भूल गई मैतो ज्ञान ध्यान सुध और संभाल । काम क्रोध गैंद मार मार के पछारी । जिनभक्तीकी चीर फारी रहगई उघारी । मान अबीरले उड़ायो इत्र कपट लगायो मिथ्या मारग दिखायो बुझादिया ज्ञान दीप घटका । कहौं किसे० । १। माया रंग में भिगोई सगरी ही सुधखोई । करछल मनमोही बात तत्वोंकी बिगोई । देखो ऐसी बाला जोरी निश्चे तोरी पोरी पोरी । काहू देखी ऐसी होरी मोहे करदेई बोरी । भर मोह पिचकारी आसा त्रिश्ना फुलवारी ऐसे तक तक मारी ध्यान आरसी का दरपन चटका । कहोकिसे० । २ ॥ मोहको दियो है डाल कुछऐसो इन्दर जाल । जानपड़े कछूं नहीं हित अनहित हाल । तोड़ दिये गयाराव्रित बारा व्रित माला हार । नेमकी चुनरया के करदिये तार तार । त्याग संजम बिंदी बैना रत्नत्रिय लटकैना दशलक्षन व्रित गहना ज्ञान मोतयन का हार झटका ॥ कहो किसे० ॥ ३ छीन सत हथफूल नथशीलकी निकाली । खोई चरचा चम्पाकली खींची दया कानवाली । मांग छिमा दीनी खोल लड़ी वीनयकी निकाल । बाजूबंद तपतोड़ माया गलहार डाल । धर्म जोबन लुटाया खटकरम मिटाया समभाव हटाया सखी नरकों में जा पटका ॥ कहो किसे० ॥ ४ ॥ करमोंने देखो सखी कैसे कैसे दुख दिये । भगवत जाने हम से तो

नहीं जाएं कहे ॥ अब शुभघड़ी आई सखी जिन धरम गहयो । जिनबानी मनभाई मनको भरम गयो ॥ न्यामत मनको मनाले अपने में चितलाले अपने ही गुणगालेफिरे क्यों भवभवमें भटका ॥ कहो किसे० ॥ ९ ॥



७३

तर्ज ॥ आज तपोवन जाएंरी महावीर जिनन्दा ॥

क्यों जग जालमें आएजी छोड़ो छोड़ो जी धंदा । क्यों० । टेक । शील और व्रत तप संजम कीजे । मानुष नरभव पाएजी ॥ छोड़ो० ॥ १ ॥ क्रोध मान माया लोभ निवारो । सुरनर सब सिरनाएजी ॥ छोड़ो० ॥ २ ॥ मात पिता सुत नार सुहेली । अंतको कामना आएजी । छोड़ो० । ३ ॥ न्यामत अष्ट करम फंद काटो । जिन भक्ती चितलाएजी छोड़ो०४



७४

तर्ज़ ॥ चंबोला । अल्लादियाकी चालमें (जोपारकी तरफ गाए जाते हैं) (यह भजन अठाई के परभमें पढ़ाजाता है)

दोहा ॥

आज उतसव तिहूंलोकमें, सुरनर मन हरषाय ।
नंदीश्वर वंदन गये, लेले दर्व अथाय । १ ॥
हम निरबल नहीं जा सकें, मानपोत्रके पार ।
प्रभू तेरा शरणा लिया, कीजो भवदधि पार ॥ २ ॥

चंबोला ॥

कीजो भवदधि पार नाथमें शरना लिया तुम्हारा ।
तीन जगतके कुदेव छोड़े तुमपे निश्चे धारा ॥ १ ॥
सेठ सुदरशनको शूलीसे सिंघासन दीना भारा ॥
पावकको करदिया नीरजब सीयाने मंत्रउचारा ॥ २ ॥
चीर बढ़ायाथा द्रोपदका सभाबीच जाने सारे ।
मानतुंग जब कैद हुआ तब तोड़ दिएसगरे तारे । ३ ।
रानी उरवलाकी पण राखी राजा बोधमती हारे ।
दिया धरमउपदेश अनंती भवसागर सेती तारे ॥ ४ ॥

दोहा ॥

न्यामत बावन चैत्यको, बंदे सीस नवाय ।
चरण कंवल महाराज के, पूजे अरघ बनाय ॥



७८

तर्ज़ ॥ जीते जी कद्रबशर की नहीं होती प्यारे । याद आवेगी तुझे मेरी वफ़ा मेरे बाद (यह मुबारिक बादी है)

आज मंदिरमें सभाहोना मुबारिक होवे फिरवही धर्म का उपकार मुबारिक होवे ॥ १ ॥ सारे भाइयोंका जमाहोना धरमकी चरचा । नेम और धर्मका करनासो मुबारिक होवे ॥ २ ॥ मिटे अज्ञानका तमहोवे धरम उज्याला । जैन बाणीका सदा होना मुबारिक होवे ॥ ३ । होवें अघदूर

यह मिथ्यात घटे छिन छिनमें । सबका सम्यक्त सदाचार मुबारिक होवे ॥ ४ ॥ कष्टइन्द्रीकोमिले और विषेको शूली । शीलकी सेज हमें नित्य मुबारिक होवे । ५ । नष्टकरमोंका हो जो दुष्टमहा वैरी हैं । मोक्ष लेजानेको जिन शर्ण मुबारिक होवे ॥ ६ ॥ डंड कुमतीको मिले जिसने भुलाया रस्ता । सुमता सुंदरका हमें संग मुबारिक होवे ॥ ७ ॥ मोह को होवे बनोबास, फंसाया जगमें । हमको जिन भक्ती व संतोष मुबारिक होवे ॥ ८ ॥ क्रोध और मानसे हमको नहीं कुछभी मतलब ॥ छिमा और सिरका झुकाना ही मुबारिक होवे । ९ ॥ एक जिनमतही से मिलताहै मुकुत का रस्ता ।न्यायमत तुझको यह जिन धर्म मुबारिकहोवे ।१०॥



७६

तर्ज़ ॥ मेरा रसिन लगता जी अब घर आजाना ॥

गोतम स्वामिजी थारी बानी तनक सुनाय ॥ टेक ॥
महावीर मुख बाणी खिरयां । किस विधि झेली जाय।गोतम०।१।
तज यग समोशरण में आए । गणधर पदवी पाय॥गोतम०।२।
मानसथंब लख मान पलाया । चारों ज्ञान उपाय । गोतम०।३।
जा बाणीसे श्रेनक सुलझा । सोही हमें बतलाय । गोतम०।४।
न्यामत सुनयो श्रीजिन बाणी । सुधा शिवपुर जाय । गोतम० ॥ ५ ॥

७७

तर्ज़ ॥ चलोरी सखी दरशन करिये रथचढ़ जादुनंदन आवत हैं ॥

चलोरी सखी मिथलापुरमें सब सखी मिल मंगल गावत हैं । चलो० । टेक ॥ श्रीमल्लनाथ जिन जनम लिया । तिहूं लोक करत उच्छावत हैं । चलो० ॥ १ ॥ कम्पत सुर आसन मुकट नमें । धनपति सज गज चढ़ आवत हैं। चलो० ॥ २ सब सुरनर जय जय शब्द करें हैं ॥ इन्दर चंवर ढुरावत हैं । चलो० ॥ ३ क्षीरोदधिसुर मिल भरलाए । सुधर्म अश्नान । करावत हैं ॥ चलो० ॥ ४ ॥ न्यामत जिनराज करो दरशन सब मन बंछित फल पावत हैं ॥ चलो० ॥ ५ ॥



७८

तर्ज़ ॥ मैंने रामकी माला फेरीरे ॥ फेरीरे फेरीरे फेरीरे ॥ मैंने० ॥

तुझे नींद अनादी आईरे। आईरे आईरे आईरे ॥ तुझे० ॥ टेक ॥ मतना बीज बिषे तरु बोवे । फल चाखत दुख पाईरे । तुझे० ॥ १ ॥ इन्द्री बिषे करो मत प्यारे । नरकोंमें ले जाईरे ॥ तुझे० ॥ २ ॥ मात तात सब स्वारथ साथी । बिपत पड़े हट जाईरे। तुझे० ॥ ३ ॥ न्यामत श्रीजिनके गुण गाले ॥ भवसागर तिरजाईरे ॥ तुझे० । ४ ॥



७९

तर्ज़ ॥ हमारी प्रभु नय्या उतार दीजो पार ॥

प्रभू जी थारी बाणीने मोह लीयो जी । टेक । यहीजिन वाणी सदा सुखदानी ॥ शिवपदकी निशानी सो मोह लीयोजी । प्रभू० ॥ १ ॥ यह संवारती करम गत टारती । संसार से निकारती सो मोह लीयो जी । प्रभू० ॥ २ ॥ जिन वाणी उरधारी निज जनम सुधारी । न्यायमत बलहारी सो मोह लीयो जी । प्रभू० ॥ ३ ॥



८०

तर्ज ॥ अमोलक जैन धरम प्यारे ॥ भूल विषयोंमें मतहारे ॥

फ़जूल खर्चीको तजो प्यारे ॥ बिगड़ गए लाखों धनवारे फ़जूल । टेक । ब्याह किया मन तोड़कर हो बैठे कंगाल ॥ रंडी भड़वे कर दिये देज़र माला माल । अजब हो मूरख मतवारे ॥ फ़जूल० ॥ १ ॥ नामवरीके वासते भूर फैंक बहु कीन । पीछे हाट दुकानकी हुई एक दो तीन ॥ पड़े औंधे सब नक्कारे ॥ फ़जूल० ॥ २ ॥ काज रचाया नामको करके जोड़ अनेक । काम बिगाड़ा आपना मानी कही न एक । फिरें अब तो दर दर मारे ॥ फ़जूल० ॥ ३ ॥ लड़का जब पैदा हुवा खूब लुटाया माल । चाहे ज़च्चा और सुत भूके मरें बेहाल मगर हो नाम एक बारे ॥ फ़जूल० ॥ ४ ॥ विद्या पढ़नेके लिये कहें कहांसे आय ॥ बद रसमोंमें बंदकर आंखें लाख

लुटाय ॥ बना दिये हैं मूरख सारे । फजूल० । ५ । मूरख बन चोरी करें करें मांस मद पान । जुवा गणिका संगमें करें धरम की हान । पड़े दुख सागर मंझधारे । फजूल० । ६ ॥ फ़जूल खर्ची कारने बढ़ा पाप अति घोर । काल प्लेग अब हिन्द में छाय गया चहुं ओर । हुवा भारत ग़ारत प्यारे । फजूल० । ७ । अब तो आंखें खोलये भारत सुत परवीन । नहीं दो दिन में देखना हों कोड़ीके तीन ॥ कहे न्यामत हितकी प्यारे । फजूल० । ८ ॥

इति चतुर्थ वाटिका समाप्तम् ॥







श्री जिनेन्द्रायनमः

पंचम बाटिका

८१

तर्ज़ ॥ कत्ल मत करना मुझे तेगो तवरसे देखना ॥

आपमें जबतकके कोई आपको पाता नहीं। मोक्षके मंदिर तलक हरगिज़ क़दम जाता नहीं। टेक। बेदया कूरान या पूराण सब पढ़ लीजिये। आपको जाने बिना मुक्ती कभी पाता नहीं। आप०। १॥ भाव करुणा कीजिये यह ही धरमका मूल है। जो सतावे औरको सुख वह कभी पाता नहीं। आप०। २॥ हर्ण खुशबूके लिये दौड़ा फिरे जंगल के बीच। अपनी नाभीमें बसे इसको देख पाता नहीं॥ आप०। ३॥ ज्ञांनपे न्यामत तेरे है मोह का परदा पड़ा इस लिये निज आतमा तुझको नजर आता नहीं। आप०॥ ४

८२

तर्ज ॥ चंदा तू लेजा संदेसा हमारोरे ॥ (चतुर मुकुट लम्बी खड़ी चाल)॥
क्रिर्दातवक्र सैनापती का सीताको वनमें छोड़ना
और सीताका संदेसा देना ॥

सैनापती लेजा संदेस हमारो रे । टेक । चलत चलत व्याकुल भई दूखत सकल शरीर । उनको दोश ना दीजिये कर्मनकी तक़सीर । करममें यूंही लिखाथा हमारो रे । सैनापती० ।१। जो तू उलटा जायतो इतनी दियो सुनाय । भामंडल भगनी कही चरणन सीस निवाय । मेरा दुख मत करयो पती म्हारोरे । सैनापती० २ । जगत बात सुन मैं तजी कीयो ना नेक विचार । सुनकर निन्दा धरमकी मत तजियो भरतार । धरम बिन कोई नहीं हितकारो रे । सैनापती० । ३ । क्यों जिनदर्शनकी कही झूटी बात बनाय ॥ जो मन में ऐसी वसी क्यों नहीं दी दरसाय । मेरे मन यह दुख है अती भारोरे । सैनापती० । ४ ॥ छेडा थारे देशको छोड़ दिया घरबार । राम लखन सुतस बसो बसो नगर परवार । विपतमें कोई नहीं सुख कारोरे । सैनापती० । ५ । क्यों रोवे सैनापती मनमें धारो धीर ॥ करम लिखा सो होयगा लाख करो तदबीर । करम नहीं टरे न्यायपत टारोरे । सैनापती० ६

८३

तर्ज़ ॥ कत्ल मत करना मुझे तेग़ो तवरसे देखना ॥

ज़ुल्म करना छोड़दो साहिब खुदा के वास्ते । जुल्म अच्छा है नहीं करना किसीके वास्ते ॥ टेक ॥ रहम कर जीवों पे बस मत ज़ुल्म पर बांधे कमर ॥ क्यों सताता है किसी को चन्द दिनके वास्ते ॥ ज़ुल्म० ॥ १ ॥ सच कहो खुद ग़र्ज़ और ज़ालिम है तू याके नहीं । बेज़ुबांको मारता अपनेमज़े के वास्ते ॥ ज़ुल्म० ॥ २ ॥ क़ाट गल औरोंका मांगे खैर अपनी जानकी । सोच कहां होगा भला तेरा खुदा के वास्ते ॥ ज़ुल्म० ॥ ३ ॥ भेट कुरबानी बलीयज्ञसे खुदा मिलता नहीं । बलके दोज़ख़ है खुला इन ज़ालिमोंके वास्ते ॥ ज़ुल्म० ॥ ४ । पोप मुल्लांकी न सुन दिलमें ज़रा इंसाफ कर। है कहीं अच्छा ज़ुल्म करना किसीके वास्ते ॥ ज़ुल्म० ॥ ५ ॥ कर भला होगा भला कलजुग नहीं करजुग है यह । न्यायमत कहता है यह तेरे भलेके वास्ते ॥ ज़ुल्म० । ६ ॥

८४

तर्ज़ ॥ पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

हिंसामें अपने मनको लगाना नहीं अच्छा । करुणाका भाव दिलसे हटाना नहीं अच्छा । टेक । यज्ञ और बलीदान खुदग़र्ज़ोंने चलाए। कुरबानि जीव भेट चढ़ाना नहीं अच्छा।

हिंसा० । १ । हिंसाके करनेसे धरम होता नहीं यारो ॥ झूटों के कहने सुननेमें आना नहीं अच्छा । हिंसा० । २ । बोते हो धतूरा नहीं अंगूर मिलगे ॥ रसतेमें कांटे शूल लगाना नहीं अच्छा ॥ हिंसा० । ३ । काटे जो गला और का अपना कटायगा । धोकेमें आके सिरका कटाना नहीं अच्छा । हिंसा० । ४ । करते शिकार जीवोंका आती नहीं दया । यों खून वे ज़ुबांका बहाना नहीं अच्छा । हिंसा०५। अपनी सी जान जानये औरोंकी जानको । न्यामत किसी के दिलको सताना नहीं अच्छा । हिंसा० । ६ ।



८५

तर्ज ॥ किस विध कीने करम चकचूर ॥ उत्तम छिमापे जिया चेमा म्हाने आवे ॥ किस० ॥

सुनियो मेरी विपत जिनराज । कर्म महा वैरी दुख देवें । सुनियो० । टेक । पाप पुन्य मिल बेड़ी डारी । चोरासीमें किया बे लाज । चारों गतीमें मैं फिर आया बन आया नहीं कोई इलाज ॥ सुनियो० १ । सात बिषेमें मोह लगाया । भूल गया निजराज समाज । ज्ञान ध्यान धनसब हर लीनो कर दिया कोड़ी को मोहताज । सुनियो० । २ त्रिभवन नाथ सुना जश तेरा । तीन लोकके तुम सरताज न्यामत शरण गही प्रभू तेरी काटो भव के फंद आज । सुनियो० । ३ ।

८६

तर्ज़ ॥ अरी मैं आज वसंत मनायो ॥ पिया कान्ह घर आयो ॥
(होरी काफी)

ऐसी करमोंने कीनी खिलारी । होरी खेलत खेलत हारी ॥ ऐसी० । टेक । लोभगुलालमलोमोरेमुखपे मोहकीदी पिचकारी । मायाके रंगमेंऐसीभिगोई भूलगईसुधसारी।रूपअपनेकोबिसारी ऐसी० । १ । कामक्रोधके कुम्कुमें मुखपरभर भरमार पछारी आसा त्रिश्नाकी गेंद वनाके समता कुचन पर मारी । हंसी संगकी सब नारी । ऐसी० । २ । सुमता सखीका संग छुड़ाया कुमता लार हमारी । नेम धरमकी आंगिया मसोसी ज्ञान चुनरया फारी । रहीमें सभा में उघारी । ऐसी० ३ ॥ ऐसी करमोंने होरी खिलाई भव भवमें भईख्वारी । सेवक जान करो मोपे किर्पा यह न्यायमत दूखारी । गही प्रभू शरण तिहारी ऐसी० । ४ ।



८७

तर्ज़ ॥ नहीं आयोरी मेरा सांवरया ॥ नहीं० ॥ चाल ठुमरी ॥

चल आवोरी देखो सुमेला ॥ चल० ॥ टेक ॥ सखी हांसी शहर सुहावन । जिनमंदिर मन भावन ॥ सुमेला चल आवोरी० ॥ १ ॥ मिती चौदश भादों दूजे सम्बत (१९४७)

उनीस सैंतालीस साज । सुमेला० ॥ २ ॥ सुभ कारज मन में छाया । एक मंडप अधिक बनाया । सुमेला० ॥ ३ सब जन मिल कीनी तयारी । धरी शिवकामध जल झारी ॥ सुमेला० । ४ । गाते गाते बज़ारों आए । आनंद से जल भरलाए ॥ सुमेला० । ५ । जब प्रभुजीको नहवन कराया आनंद मेघ बरसाया । सुमेला० । ६ । न्यामत जिन दरशन करलो । जनम जनम अघ हरलो । सुमेला० ॥ ७ ॥





तर्ज ॥ इलाजे दर्द दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता ॥

यह है करमों की गत न्यारी किसीसे ना टरे टारी । करो तुम नाश करमोंका यही दुख कारी सुख हारी । टेक । कृश्ना नोमे नारायण भए तिर खंड के राजा ॥ मुवे पर ना कोई रोया न उतपत मंगला चारी ॥ करो० ॥ १ ॥ सती सीता हरी रावण हुई निन्दा सकल जगमें ॥ रही अंजना बरस बारा पवन के व्योग में न्यारी । करो० । २ ॥ रामचन्द्र थे बलभद्र अयुध्या राज जब पाया । करम अंतर पड़ा आके फिरे बन बनमें दुखहारी । करो० । ३ । पांच पांडों महा जोधाको भी कर्मोंने आ घेरा । दूतके संग करनेसे सब अपनी सम्पदा हारी । करो० ॥ ४ ॥ करम से बसचला किसका समझ तो न्यायमत इतना । छोड़ाचो कर्म के बंदन जो होवो मोक्ष अधिकारी ॥ करो० । ५ ॥

८९

तर्ज़ ॥ गये भैना पिहरवा नैना बदल ॥ (चाल ठुमरी)

जिन जीके चरणोंमें जीया लगा ॥ जीया लगा मन को लगा प्यारे जीया लगा ॥ जिन० ॥ टेक ॥ काल अनंती नरकोंमें भोगे ॥ करमोंके दुखड़े सिर पे उठा ॥ जिन० १ स्वर्गों में सुरयन संग राचा ॥ दुख पायो मालाको लखा जिन० ॥ २ ॥ कष्ट सहे मानुष भव गरभमें ॥ बालापन अज्ञान रहा ॥ जिन० ॥ ३ ॥ तरुण हुवा विषयोंमें लागा ॥ निश दिन रहा काम आंखोंमें छा ॥ जिन० ॥ ४ ॥ आया बुढ़ापा मम्ताने घेरा ॥ तीनों पन यूंही दीने रुला ॥ जिन० ॥ ५ । नर भव सुगत न्यामत तूने पाई ॥ खोवे अकाज मत धोकेमें आ ॥ जिन० ॥ ६ ॥



९०

तर्ज़ ॥ अब तुम बिन लछमन भय्या नय्या डूब चली मंझधार ॥

अब श्री जिन भक्ती बिनारे जीया तेरी कौन बंधावे धीर ॥ टेक ॥ जपो जपो नित श्री अरिहंत सनमत और महाबीर ॥ एजीबर्धमान अतीबीर जपो जीया और जपो जय बीर ॥ अब० ॥१॥ नरक निगोद सभी फिर आयो सही अनंती पीर ॥ स्वर्गोंमें मालाको लख जीया हुवा बहुत दलगीर ॥ अब० ॥ २ ॥ गर्भ मांहीं दुरगत दुख भोगे पीयो

रुद्ध शरीर ॥ कष्ट थकी बाहर आयो जीया नहीं अंगपे चीर ॥ अब० ॥ ३ ॥ क्षुदा त्रिशा नहीं मिटी जिया तूने पीये समंदर नीर ॥ एक बूंद क्षीरोदध हो और इक कण होवे समीर ॥ अब० ॥ ४ चौरासीके दुख महाभारी सुनो कान धर धीर ॥ इन दुक्खोंसे जभी छुटे जिन चरणन आवो तीर ॥ अब० ॥ ५ ॥ स्वारथ साथी इस जगमें जीया साथी नहीं शरीर ॥ न्यामत शर्ण गहो जिनवर तेरी नय्या पहोंचे तीर ॥ अब० ॥ ६ ॥



९१

तर्ज ॥ हुआ ध्यानमें ईश्वरके जो मगन उसे कोई कलेश लगा न रहा ॥

रहे जब लग मोहके फंदेमें परमातमका ध्यान नहीं रहा । जब परदा मोह हटा दिलका परदा परमातम का न रहा ॥ टेक ॥ निज आतमको जब आतममें लिया देख आतम को आंखोंसे । परकाश हुवा परमातमका तब कोई भेद छुपा न रहा । रहे० । १ । जब परको छोड़ लखा अपने में भिन्न लखा निजको पर सेती । न्यामत आपा पर भेद मिटा परका लवलेश लगा न रहा ॥ रहे० ॥ २ ॥



९२

तर्ज ॥ कोई नावाकिफो नाफहम पय अंदाज क्या जाने ॥

कोई ना वाकिफो नादान चेतन सार क्या जाने । यह

अबनाशी अमूरत सच्चिदानन्द सार क्या जाने ॥ टेक ॥ बरंगे बू है पोशीदा हमारे तनमें यह गुलरू ॥ सिवाय आत्मा परमात्मा इसरार क्या जाने ॥ कोई० ॥ १ ॥ फंसे हैं जो कि दुनियामें भला यह बात क्या जाने । वही ज़ाने जो निज आतमको जाने और क्या जाने ॥ कोई० ॥ २ ॥ वही हैं जानने वाले जो निज और परको पहिचाने । अरे न्यामत वह क्या जाने जो अपनेको नहीं जाने ॥ कोई० ॥ ३

९३

तर्ज़ ॥ एजी हम आये हैं दरशन काज मिटादो प्रभू बिथा हमारी जी ॥

ऐजी हम दरश लखो जिनराज घटा चहूं आनंद छाई जी ॥ टेक ॥ नाम परताप तेरे अंजन से ॥ कीचकसे अभी मान । नार शिव सुन्दर मिलाई जी ॥ एजी० ॥ १ ॥ नगन सरूपछबी बैरागी ॥ नासा द्रिष्ट पसार । तिहारी छब मन मेरे भाई जी । एजी० ॥ २ ॥ ऊदे रबी आतम भयो मेरे ॥ मिथ्या तिमर संघार ॥ लखी जो मैं ने छब बीतरागीजी ॥ एजी० ॥ ॥ ३ ॥ भव बनमें मेरे कर्मन बैरी । हर लीया ज्ञान बिचार ॥ करो ना प्रभूमेरी सहाईजी । एजी०४॥तारण तरणसुनो जश तेरो । न्यामत ओर निहार । यही है मेरी दुहाई जी ॥ एजी०५ ॥



९४

तर्ज़ ॥ सोरठ अधिक सरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

लिया नेम नाथ जिन जनम मुकट सुरपत के झुक आऐ

। टेक । वहु विध बाजे बजे अनादह जोतिश घर जाए॥ तीन लोकमें शोर हुवा सब सुरगण भरमाए ॥ लीया० ॥ १ कलपवासी घर घंटे बाजत आसन कंपाय। उठ बैठे सुर असुर इन्द्र सब पूजनको आए ॥ लीया० ॥ २ ॥ इन्दर सब पूजन को आये मनमें हरषाए ॥ तांडव निरत किया सुरपत ने चरणन शरनाए॥ लीया० ॥ ३ ॥ सबसखियन मिल मंगल गावें कर कर उच्छाए । फिर धनपत ऐरावत रच सज गज चढ़ कर आए ॥ लीया० ॥ ४ ॥ न्यामत दरशन करो प्रभूके शोरीपुर जाए॥ जनम जनम शंकट कट जा मन बंछित फल पाए ॥ लीया० । ५ ॥



९५

तर्ज ॥ सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

अजी नहवन करो जिन राज चलो सब जल भर कर लावें । टेक ॥ हांसी हिसारके भाई मिलकर जल भरने जावें ॥ हर्ष मिल मंगल गावें सर चरणन नावें ॥ अजी०१ थे थे थे थे नाचत आवें मनमें हरषावें । तांडव निर्त करें प्रभू आगे बंछित फल पावें ॥ अजी० ॥ २ ॥ धीरे धीरे निरखे पृथ्वी जल भरने जावें ॥ अजी हाथों हाथ कलश सब लेकर निरमल जल लावें ॥ अजी० । ३ ॥ तोरण चंवर ढुरें प्रभुजीके आनंद जस गावें ॥ नहवन करें श्रीजिन गंधो दक मस्तक पर लावें ॥ अजी० ॥ ४ ॥ धन्य घड़ी धनभाग

हमारे प्रभु सुमरण पावें । भव भवमें यह न्यामत पावें मंगल दर्सावें ॥ अजी० ॥ ५ ॥



९६

तर्ज़ ॥ शशी तेरेवागमें उतरे सिपाही (शशीपुन्नों)

घड़ी धनआज यह पाई है मैंने । नहवन जिनराज हाथों से कराऊं । टेक । पहन सुन्दरसे बसतर अपने तनमें । कलश लेकर जतनसे नीर लाऊं ॥ घड़ी० ॥ १ ॥ रतन चोंकी बिछा पचरस मिलाऊं । नहवन क्षीरोदधीसे मैं कराऊं । घड़ी० ॥ २ ॥ हर्षकर पंच मंगल गीत गाऊं । निरत करके चंवर फिर फिर ढुराऊं । घड़ी० । ३ । बिधीसे करके यों अशनान जिनका । बिनय करके सिंघासन पर बिठाऊं । घड़ी० । ४ । प्रभामंडल प्रभूके पीठ सोहै । छतर जिनराज सिर ऊपर फिराऊं । घड़ी० । ५ । न्यायमत इस तरह प्रक्षाल करके । प्रभू चरणोंमें सीस अपना झुकाऊं घड़ी० ॥ ६ ॥



९७

तर्ज ॥ (चालनाटक) अम्मामुझे छे.टीसी टोपी दिलादे ॥

प्यारे जिन चरणोंमें जीया लगाले । जीया लगाले मन को मनाले ॥ परदा हटाले हटाले ॥ प्यारे० । वह सबका

स्वामी है। तिहूं जगमें नामी है । उसको सारे चराचर का ज्ञान । हितकारी सुखकारी दुखहारी नित । हां हां हां ॥ प्यारे० । १ ॥ प्यारे परमातमके तू गुणको गाले। तू गुणको गाले ॥ नकशा जमाले हांरे उसका हिर्दे में ध्यान लगाले। प्यारे०। जो कोई ध्यावेगा। सुरपदवी पावेगा मुक्ती को जावेगा पावेगा ज्ञान । सब दर्शी सबदर्शी सब दर्शी नित ॥ हां हां हां ॥ प्यारे० । २ । प्यारेजरा कर्मों का कोट उड़ाले। सम्यक्त बंदूक भर ज्ञान गोली चारित्र टोपी चढ़ाले। प्यारे० । रागको छोड़ीये द्वेष को तोड़ीये बंदूक छोड़ीये । हड़ड़ड़ धड़ीम ॥ न्यामत हो झटपट हो झटपट हो फैर। धररर धूम। प्यारे०। ३।



९८

तर्ज (चतरमुकट) कंथ विन कैसे जीऊंगी मेरी जान ॥
स्वपना सच मत जानियो क्या स्वप्ने की बात ॥
स्वप्नेमें साजन मिले करी नहीं दोबात ॥ कंथ० ॥

धरम विन कोई न जगमें सार । धरम विन० ॥ टेक ॥ यह संसार असारमें कोई न अपना जान। मात पिता परवार सब हैं झूठा मन आन। धरम विन०। १ । धन जोबन थिरना रहे रहना तेरी काय। कोटी भटसेनारहे तू किसपे गर्भाय। धरम विन०। २। भीम और अर्जुन मरे बल और कृष्ण मुरार। कंस जरासिंध न रहे करते गर्व

अपार। धरमबिन० ॥ ३ ॥ सदा नहीं रावण रहा नील और हनवंत। राम और लछमन मरे इन्द्रजीत बलवंत॥ धरम बिन० ॥ ४ ॥ यूं लख मन थिर्ता धरो करलो परउपगार। सार जगत में है यही न्यामत देखबिचार। धरमबिन० ५।

९९

तर्ज ॥ आहा प्यारा दिन है न्यारा शाहजादेकी शादीका ॥

आहा प्यारा दिन है न्यारा जनम ऋषभ जिनआदिका। सब सचियन मिल मंगल गावें दिन है मुबारिक बादीका ॥ टेक ॥ स्वर्ग मंझारी हुई तय्यारी आए सब झननन झूम। धनपत ऐरावत रच लाए घननन नन नन घूम। आहा० १ ॥ सब सुरनारी दे दे तारी नाचे छननन छूम। ताल मंजीरे बीन बांसरी बज रही तन नन तूम ॥ आहा० ॥ २ ॥ जल थल बनबन आनंद धनघन छाए घन नन घूम। सुखरस बूंदें रिम झिम बरसै झन नन नन नन झूम ॥ आहा० ॥ ३ ॥ सब दुख टारे पाप निवारे दया धरमकी धूम। जय जय कार मिर्ची तिहूं जगमें धम धन भारत भूम ॥ आहा० ॥ ४ सुरासुर आवें फूल बरसावें झन नन नन नन झूम। न्यामत प्यारी बादे बहारी चल रही सन नन सूम ॥ आहा०। ५॥



१००

तर्ज़ ॥ रघुबर कौशल्याके लाल मुनीकी यज्ञ रचाने वाले ॥

धन धन महावीर जिनराज शिव मारग दिखलानेवाले ॥

शिव मारग दिखलाने वाले सबका भर्म मिटाने वाले। धन० ॥ टेक ॥ करके देश विदेश विहार। कीना सत मारग परचार। फैला दिया धर्म एकबार। हिंसा दूर हटानेवाले। धन० ॥ १ ॥ यहां था पशू यज्ञका जोर। होती थी नित हिंसा घोर ॥ तुमने दिया यज्ञ सब तोड़। भारत प्राण बचानेवाले। धन० ।२। वा मारग को दूर हटाया। तुमने शील धरम बतलाया ॥ सबको शिव मारग दिखलाया !! हो अज्ञान मिटानेवाले ॥ धन० ॥ ३ ॥ जितलाकर युक्ती परचंड। कर दिये सब झूठे मत खंड ॥ भागे छोड़ छोड़ पाखंड। झूठी बात बनानेवाले। धन० ॥ ४ ॥ भारत हो रहा तंग तीन। न्यामत है पुरषारथ हीन ॥ है परवस अती प्राधीन। तुम ही धीर बंधाने वाले ॥ धन० ५ ॥

इति पंचम वाटिका समाप्तम् ॥





॥ नोटिस ॥

न्यामत विलाश के प्रथम भाग के निम्नि लिखित २० अंक (हिस्से) तय्यार किये गये हैं। मगर अभी तक सिर्फ वह ही हिस्से छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है ॥

अंक	नाम अंक	मूल्य शास्त्री	मूल्य उर्दू
१	भूमिका		
२	मंगला चरण		
३	गायन शिक्षा		
४	चौबीस जिनराज जयमाल		
५	पंच कल्याणक स्तोत्र		
६	अरिहंत गुणमाला		
७	जैन भजन मुक्तावली	=)	
८	राजल भजन एकादशी	-)	
९	स्त्री गान जैन भजन पचीसी	-)॥	
१०	कलयुग लीला भजनावली	-)॥	-)॥
११	कुन्ती नाटक	=)	
१२	चिदानन्द शिवसुन्द्रा नाटक	॥=)	।=)
१३	अनाथ रुदन	-)	
१४	जैन कालिज भजनावली		
१५	रामचरित्र भजन मंजरी		
१६	राजल वैराग माल		
१७	ईश्वर सरूप दरपण		
१८	जैन भजन शतक	।)	
१९	थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	=)	=)
२०	मैनासुन्द्री नाटक	१॥)	

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार

मु० हिसार (पंजाब)

JAIN RELIGIOUS TRACT SERIES NO. 7.

न्यामत बिलास-अंक ७

NIAMAT-VILAS-7.

जैन भजन मुक्तावली

प्रणेता

न्यामत सिंह जैनी

सैक्रेटरी डिस्टरिक्ट बोर्ड, हिसार

पं० घासीराम के देशोपकारक प्रेस लखनऊ मे छपी

श्री वीर निर्वाण सम्वत् २४४०

पांचवींवार १००० कापी] सन् १९१४ [मूल्य =)



* श्री वीतरागायनमः *



न्यामत विलास अंक ७

(जैन भजन मुक्तावली)

॥ १ ॥

चाल — है सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जाग। मोल ॥

प्रभु तुमहो तारनतरन हमें भी पार लंघाओ जी ॥ टेक ॥ भवसिन्धू अगम अपार पार इसको नहीं आयो जी। मेरी नय्या बीच मंझधार डूबती है लो बचावो जी ॥ १ ॥ रागादि घटा चहुँओर तिमर आखों में छायो जी। निजपर नहीं सूझे नाथ मुझे रस्ते तो लगाओ जी ॥ २ ॥ आगयो तसकर परमाद ज्ञान विज्ञान भुलायो जी। है निराधार न्यामत अब आवो मतदेर लगाओ जी ॥ ३ ॥

॥ २ ॥

चाल — पहलू में यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥ गजल ॥

जिनराज हमसे जश तेरा गाया नहीं जाता। यहां पैतो ज़रा लवभी हिलाया नहीं जाता ॥ १ ॥ गणधर भी बहुत कथ चुके आखिर यह कहगए। यह भेद है वह भेद बताया नहीं जाता ॥ २ ॥ है क्यामजाल इन्द्र चन्द्रकुछभी लिखसकें। लिखनातो क्या क़लमभी उठाया नहीं जाता ॥ ३ ॥ है गुण

अनन्त आरपार पा नहीं सकते। महिमा अपार सार सुनाया नहीं जाता। ४ ॥ न्यामत को ज्ञान दीजे मगन हो भजन करे। भक्तीका भाव हमसे हटाया नहीं जाता। ५ ॥

॥ ३ ॥

चाल—नाटक ॥ अय सनम तू जरा मुझे देतो बता कहां जाके छिपा नहीं आता नजर ॥

करो भगवतका ध्यान, वोह है सबसे महान, उसे है सब का ज्ञान कहा जिन्नो बशर। वाकी शक्ती अपार, वाकी महिमा अपार, गए गणधरभी हार, नहीं पाई खबर। १ ॥ किया कर्मोंका नाश, शिव मारग प्रकाश करो, उसकी तलाश, आवे दिलको सबर। छोड़ो झूठ कुदेव, करो अरिहंत सेव, मिले तुमको स्वमेव, मुक्ती की डगर। २॥ जराकरके खयाल, सुमती को संभाल कुमती को निकाल, करो उसका जिकर ॥ यह न्यामत आधीन, जिन चरनों में लीन, हमें सच्चा यकीन, कभी होगी नजर ॥ ३ ॥

॥ ४ ॥

चाल—मुसलमां होने को अय काबा में तय्यार नहीं ॥

मोक्ष मारग में प्रभुतुमने लगाया हमको। तत्व के अर्थ का सर्धान कराया हमको। १। वीतराग और हितोपदेशी सकलके ज्ञाता। यह त्रिपेशन हैं तेरे साफ़ जिनाया हमको। २ ॥ ठीक चारित्र दरश ज्ञानका समुदाय सही। है मुकत जानेका रस्ता सो दिखाया हमको। ३ ॥ मोह मिथ्यातकी निद्रा में पड़े सोते थे। आपने दिव्य ध्वनी से है जगाया हमको। ४ ॥ जीव फल आपसे मांगे हैं करमका अपने।

फलका दाता न कोई और बताया हम को । ५ ॥ भूले फिरते थे विषय भोगमें सम्पत अपनी । धन्य है आपको जो याद दिलाया हम को । ६ ॥

॥ ५ ॥

॥ चाल—अब चल मेरे प्यारे गुलशनमे आई बहार ॥

अबार मोरे स्वामी भवदधसे कर मुझको पार । टेक । चहुंगत में रुलता फिरा मोरे स्वामी दुखड़े सहेहैं अपार ।अपार।।अबार० । १ । मिथ्या अंधेरा मगर मोहने घेरा करमों के बिकट पहार । पहार।अबार०।२।।सातों विषय क्रोध मद लोभ माया।आए लुटेरे दहार । दहार । अबार० । ३ ॥ सम्पतकी बेड़ी भंवरमें पड़ी है। बेगी से लोना उभार । उभार ॥ अबार० ॥ ४ ॥

॥ ६ ॥

॥ चाल ॥ क्यूं न लेते खबरया हमारी रे ॥ दादरा ।

लीजो लीजो खबरया हमारी जी । हमारी जी हमारी जी लीजो लीजो खबरया हमारी जी । टेक । धोके से आगये हैं कुमतया की चाल में ॥ रक्खा है हम को बांध के करमों के जालमें । लीजो० । १ ॥ बीता अनाद काल हाल कह नहीं सकते । जो दुख हमै दिये है वो अब सह नहीं सकते । ली० ।२। तन धनका नाथ कुछभी भरोसा मुझे नहीं । माता पिता भी कोई संगाती मेरे नहीं । ली० ३ ॥ सच है कि है संसार में कोई न किसी का । न्यामत को सिवा तेरे भरोसा न किसी का । ली० । ४ ॥

॥ ७ ॥

॥ चाल—है सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

प्रभु हरो मेरा परमाद मुझे परमाद सताता है । टेक ॥

भोरभए पूजा का बेला सो टलजाता है ॥ सांझ समय सामायक करना याद न आताहै ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ गुरूभक्ति अरु शास्त्र स्वाध्या बननहीं आताहै । तप संयम और दान का देना मन नहीं भाता है ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ यह षट कर्म श्रावक जिन सासन दरशाता है ॥ एक नहीं पूरा होता दिन बीता जाता है ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ पाताहै धर्मार्थ काम शिव जो शरणाता है । दो शक्ती दीनानाथ सदा न्यामत गुन गाता है । प्रभु० ॥ ४ ॥

॥ ८ ॥

चाल – मुसल्मां होने को अय काबा मैं तय्यार नहीं ॥ गजल ॥

जय महावीर धरम नीर पिलानेवाले । काल त्रिकाल में शिव मार्ग दिखाने वाले ॥ १ ॥ आपने ज्ञान से परघट किया जिन सासन को । सब विपक्षों कोहो युक्ती से हटाने वाले ॥ २ ॥ था भरम कोन है इस जगका बनाने वाला । है स्वयं सिद्ध बता भर्म मिटाने वाले ॥ ३ ॥ सात छे तत्व दरब सारे अनादी हैं अनन्त । वयवउत्पाद ध्रुव भेद बताने वाले ॥ ४ ॥ अर्पिता नर्पिता ही होता है वस्तु का सरूप । नयव परमान से यह बात जिताने वाले ॥ ५ ॥ स्यादवादादि से मंडन किया जिनमत सम्पत । सारे मत जीनके जिननाम धराने वाले ॥ ६ ॥

॥ ९ ॥

चाल – ॐ जय अंबे गौरी ॥ वेदनयों की तर्ज पर ॥

जय जिनवर देवा जय जिनवर देवा । हित उपदेशी सबके, हित उपदेशी सबके, वीतराग देवा । जय जिनवर देवा । टेक ।

सकल ज्ञेय ज्ञायक तदपि हो निज आनन्द रसलीन। सो जिनेन्द्र जयवंत अरिरजरहस बहीन। जय० ॥ १ ॥ मोह तिमर मिथ्या तम हरता जूं दिनकर परकाश ॥ तुमरे नाम ध्यान से होत करम का नाश ॥ जय० ॥ २ ॥ तुम जग भूषन रहित बिदूषन तुम सबके सिरताज ॥ भव दधि सागर मांहीं, तारण तरण जिहाज ॥ जय० ॥ ३ ॥ तुममन चिंतत, तुम गुण सुमरत निज पर वस्तु बिबेक ॥ प्रघटे बिघटे आपद छिनमें एक अनेक ॥जय०॥४॥ तुमअभिरुद्ध बिशुद्ध सुबुद्धी चेतन सिद्ध सरूप। परमातम परमेश्वर पावन परम अनूप। जय० ॥५॥ जो तुम ध्यावै शिव सुख पावै मेटे सकल कलेश। निंजगुण धारण कारण नयामत नमत जिनेश।जय०६

॥ १० ॥

॥ चाल – वारीजाउंरे सांवरया तुमपर वारनारे ॥

तनमन सारेजी सांवरया तुमपर वारनाजी। तुमपर वारनाजी। तन०। टेक ॥ बाला पणमें कमठ निवारा, अगनी जलता नाग उबारा बैरी करमन मारे तप बल धारनाजी। तन० ॥ १। जीवा जीव दरब बतलाए, सब जीवन के भरम मिटाये। शिव मारग दरसायो दुख परिहारनाजी। । तन० ॥ २ ॥ स्यादवाद सतभंग सुनायो नयपरमाण निश्चय करवायो। झूठेमत किये खंडन सत कूं धारनाजी। । तन० ॥ ३ ॥ न्यामत जिन पारस गुणगावे, पुन पुन चरनन सीस नवावे, बीतराग सर्वज्ञ तुही हितकारनाजी। तन०॥४॥

। ११ ।

चाल – ढोला आनतो जगाई वैरी नींद मे छल बलया ॥

ढोला आनतो जगाई वैरी नींद मे ॥ अरे हां रे वैरीनींद में ॥ छं० ॥

हमारे स्वामी वार क्यूं लगाई मेरी वार में। हमारे स्वामी वार० । टेक । खड़ी व्याकुल पुकारी द्रोपद । चीर तो बढ़ाया दरबार में । हमारे० ॥ १ ॥ पड़ी अगन मंझारी सीता जलकर डारी पर चारमें । हमारे० ॥२॥ करो मेरी भी सहाई स्वामी नय्या तो पड़ी है मंझधार में । हमारे० । ३ । लखीऐसीतेरी महिमा न्यामत अरज गुजारी सरकार में। हमारे० ॥ ४ ॥

॥ १२ ॥

चाल – आज आली श्रीमती जननी सुतजायोरी ॥

आज मानों विघन हरन घन छाए जी । टेक । शांत सरूप लखो जिनतेरो । शांति सुधा बरसायेजी आज० ॥ १॥ मन दादुर भवबन में प्यासो । तृश्ना कलुप मिटायेजी आज०२। भागे रोग सोग सबसेरे । आनंद उरन समायेजी । आज० ३ ॥ निरखि श्रीजिन आनन भानन । भ्रमतम धानननशायेजी । आज० ॥ ४ ॥ न्यामत समकित सम्पत पाई । जिन चरनन चितलायेजी । आज० ॥ ५ ॥

॥ १३ ॥

चाल – तुम बोलो या न बोलो आशक तो होचुका हूं ॥ राग पीलू ॥

करो पार नय्या मेरी । डूबा में जारहाहूं । पार० टेक ॥ भवसिन्धु है अपारा, जिसका न वारपारा । गुजी ह्रगत में आरहाहूं । करो० ॥ १ ॥ मदलोभ क्रोध माया, तूफान सिरपै आया । चक्कर में सारहाहूं । करो० ॥२॥ मिथ्यात

अंधेर छाया, रसता मेरा भुलाया । उलटा मैं जारहा हूं । करो० ॥३॥ परमाद चोर आया, पुर्षार्थ धन चुराया । आलशमें आरहाहूं । करो० ॥४॥ तारण तरण तुही है, भव दुख हरण तुही है । निश्चय मैं लारहाहूं ॥ करो० ॥५॥ न्यामत है मझधारा, टुक दीजियो सहारा मैं सिरझुका रहा हूं ॥ करो० ॥ ६ ॥

॥ १४ ॥

॥ चाल—तुमबिन लछमन भय्या नय्या डूबचली मंझधार ॥

अब तुमबिन दीनानाथ दयानिधि कौन सुने मेरी ॥ टेक । मैं मतिहीन महाहट बादी तुम त्रिभुवन राई । भवभव के प्रभुतुम जगनायक अरज़ सुनो मेरी ॥ अब० ॥ १ ॥ इस जगमें सब स्वारथ साथी झूठी मेरी मेरी । संकट में प्रभु तुम ही सहाई शरण गही तेरी ॥ अब० ॥ २ ॥ न्यामत श्री जिन के गुनगावे चरनन सीस नवाई । भरमत हूं आसार जगत में मेटो भव फेरी ॥ अब० ॥ ३ ॥

॥ १५ ॥

॥ चाल—मैं चचल आफत हुं कितना बड़ा दाना बड़ा स्याना ॥

तू ज्ञाता द्रष्टा है सबका, सुमगनेता करम भेता ॥ टेक ॥ तू अबनाशी चिन मूरत है, अनन्त चतुष्टे पूरित है सुखकारी है, दुखहारी है, हांहां तु जगजनतारी है तुने शिवमारग दरसाया धरम बतलाया लगाया रस्ते में । जनमनरंजन, सब दुख भंजन, जनम निकंजन तुहै निरंजन क्या क्या क्या ॥ तू ज्ञाता द्रष्टा है सबका सुमग नेता करम भेता ॥

॥ १६ ॥

॥ चाल—रघुवर कौशल्या के लाल मुनी की यज्ञ रचाने वाले ॥

सनमत भवसागर के मांह नय्या पार लंघाने वाले ॥ टेक ॥

आए पावापुरके बीच मारे बैरी आठों नीच । अपने धनुष ध्यान को खींच करमके कोट उड़ानेवाले । सनम० ॥ १ ॥ लेकर चक्र सुदर्शन ज्ञान । करके मिथ्या मतको भान जि-तलाकर न्यमति परमान । मुकतकी राह बताने वाले ॥२ ॥

॥ १७ ॥

॥ चाल--ऐसे तुमसे पैरे गैरे मैंने लाखों देखे भाले (नाटक)

लेलो श्री निजवरका शरना जल्दी मुक्ती जानेवालो॥टेक॥ सत्य धर्मका टिकट कटालो, निजगुण सामां बुक करवालो, शिवपुरकी बिल्टी करवालो । श्री० ॥ दर्शन ज्ञान चरण की गाड़ी आती है वह आती है जो सीधी शिवनगरी को प्यार जाती है वह जाती है आवो आवो जल्दी आवो । आश्रो बंद महसूल चुकावो ॥ स्यादवाद को टिकट दिखावो ॥ चौदह दरजों में चढ़जावो । अंजन ध्यान का अटल ॥ कालकर्मों का जल । फेरा भावना की कल गाड़ी जायगी निकल । अजी छोड़ो छोड़ो हटको छोड़ो झूटी युक्ती करने वालो । श्रीजिन० ॥

॥ १८ ॥

चाल – अफीम तेरे मट्टेने पागल बना दिया ॥

इस मोह नींद में तुम्हें सोना न चाहये । सोना न चाहये तुम्हें सोना न चाहये । इस मोह० । टेक । बसमें कुमत के अब तुम्हें होना न चाहये । भोगों में निज आनन्द को खोना न चाहये । जाना है तुझे दुर्गविकट पंथ अकेला । मत में कांटे शूल का बोना न चाहये । २ । अपना स्वरूप देख पर परनति को छोड़दे । न चेतन जड़ के संग में होना न

चाहिये ॥ ३ ॥ तजराग द्वेष न्यायमत सब पुदगलीक हैं। सुख में खुशी या रंज में रोना न चाहिये ॥ इस०। ३।

॥ १९ ॥

॥ चाल—अपनी हमें भक्ती का प्रभु दीजो दान ॥

अनाथों की तरफसे अपील ॥

अपनी हमें सम्पत का कछु दीजो दान। टेक। यह दीन अनाथ बिचारे, फिरें घरघर मारे मारे। नहीं तुमको कछु ध्यान। अपनी०।१। दुखयों की दशा निहारो, कछु दिलमें दया बिचारो, तुम्हारा हो कल्याण। अपनी०।२॥ बिन मात पिता रहे बाले, जीने के पड़गए लाले। सुनो तुम हो धनवान। अपनी०।३। लाखोंने जान गंवाई, नहीं कोई हुआ सहाई॥ बचालो हमरे प्राण। अपनी० ४। दया मय है धर्म तुम्हारा, यूं कहता है जगसारा। तुम्हें भी है परमाण। अपनी०।५। छपने ने वह दशा दिखाई बने मुसलमानईसाई। कहो करें क्या भगवान। अपनी०।६। नहीं चीर बदन पर म्हारें, फिरते हैं पांव उघारे। बचेगी मुशकिल जान॥ अपनी०।७। है दान बड़ा सुखकारी, है सब संकट परहारी। कहा ऐसा भगवान। अपनी०।८। अन औषध ज्ञान बिचारो, और अभय दान चितधारो। करो चारों का दान। अपनी०।९। जिनमत करुणा चितधारी खोला इक आश्रम भारी। हिसार नगर अस्थान। अप०।१० है बाल अवस्था ताकी, सब करो मदद मिल याकी। सभी का हो कल्याण। अपनी०।११। नहीं लोगे खबर हमारी, घटजागी कान तुम्हारी। धरम की होगी हान। अपनी०।

१२ । दीनोंकी सुनो पुकारी, कहैं न्यामत बारंबारी धरम का चमके भान । अपनी० १३ ॥

॥ २० ॥

॥ चाल---बिन फन तन मन सब डसगई नागिनि बनकी बांसरी ॥

तन मन धन बिन फन डस लेगी पर नारि नागणी ॥ टेक । बच चलना चातुर चेतन यह नागनकी नागणी । नैनों से बसकर लेती छलबलकारी नागणी । तनमन० १ ॥ बिन क्रोध किये नहीं काटे तनको कारी नागणी । यह हँस कर बस मन करती जादूगारी नागणी । तनमन० । २ ॥ कछु देर लगे डसती दीखे वह कारी नागणी । चपला सी चंचल चोट करत चित हारी नागणी ॥ तनमन० । ३ ॥ इक भौमे प्राण हरे काटे जो कारी नागणी । भौभौ नहीं उतरे लहर डस पर नारी नागनी । तनमन० । ४ ॥ यह सुख हारी दुखकारी भारी नारी नागनी । परमें परकामन परकामन परहारी नागनी । तनमन० । ५ ॥ होंलाख जतन जो काटे परछलकारी नागनी । न्यामत नहीं कोई उपाय डसे परनारी नागनी । तनमन० ६ ॥

॥ २१ ॥

॥ चाल---तुम्हें दूंगा मैं बाकी सबरया जान ॥ मुझे देदो यह प्यारी सुंदरया जान ॥ नाटक ॥

तूतो करताहै काहेपे इतना मान, तेरा जीना है जलका बुलबुला जान । टेक ॥ प्यारे चंचल, अरे छोड़ो छोड़ो छल-बल । मर्ना है मारे हलचल, यहां हो रही है चलचल, न कयामका नामलो । तूतो करता० । १ ॥ सारे काम रहेंगे ना कोई नाम रहेंगे । चलता नाहिं किसी का । दल

बल ज़ोर किसीका ॥ कर न दलील कहीं तू । न्यामत ढील नहीं तू ॥ हैदर घर सब पर, तज कर ज़न ज़र । समकर दम कर ॥ करफ़र मतकर, कोहैपे इतना मान । तूतो करता है काहे पे इतना मान ॥ तेराजीना है० ॥ २ ॥

॥ २२ ॥

चाल — अफीम तेरे सट्टेने पागल बना दिया ॥ नई तरज ॥ ॥

मद मोहकी शराब ने आपा भुला दिया, आपा भुला दिया तुझे बेखुद बनादिया ॥ टेक ॥ चेतन तेरा सरूप था जड़सा बना दिया, जड़ कर्मोंके फन्दे में है तुजको फंसा दिया ॥ मद० । १ ॥ निश दिन कुमत को संगमें तेरे लगा दिया, दामन सुमता सी रानीका करसे छुड़ा दिया ॥म० २ ॥ उपयोग ज्ञान गुन तेरा ऐसे दबा दिया । आ न्यामत जैसे बादल ने सूरज छिपादिया । मदमोह० ॥ ३ ॥

॥ २३ ॥

(चाल — बिन्दी लेदे लेदे लेदे मेरे माथे का सिंगार ॥

मततारे तारे तारे मेरे शील का सिंगार । शीलका सिंगार मेरा धरम सिंगार ॥ टेक ॥ राजा तेरे रानी कहये दस आठ हज़ार । जिस पर तू परतिरयाका लोभी जीवन धरकार ॥ मत०। १ ॥ तू लाया क्यूं नहीं जीत स्वयम्बर खुले दरबार ॥ अकेली बनसे लाया मुजको करके मायाचार । मत० ॥ २ ॥ मतना हाथ लगाइयो मेरे पापी दुराचार । मैं राखूं शील श्रोमणि नातर मरूं इसवार ॥ ३ ॥ न्यामत शील जगतमें कहिये परम हितकार । अरे जो कोई याको त्यागे पड़े नरक मंझार । मत तारे तारे तारे मेरे शील का सिंगार ४॥

॥ २४ ॥

॥ चाल — खिवाड़ी वालों की ॥ कहां गया मिजाजनघर वाला ॥

कहां गए तेरे संगके साथी । संगके साथी, जगके साथी । टेक ॥ कहां गया तेरा कुटम कबीला । कहां संगाती अरु नाती । कहां० । १ ॥ अब तू ऐसे देश चला है । पहुंच सकेगी नहीं पाती । कहां० । २ ॥ छूट गया तेरामाल खज़ाना छूटगये घोड़े हाथी । कहां० ॥ ३ । लाख उपाय करो चाहे वीरन । मौत लिए बिन नहीं जाती ॥ कहां० । ४ ॥ चेतन छोड़ चला जड़देही । जल गया तेल रही बाती ॥ कहां० ५ । हाहाकार करें सुतनारी । मात पिता कूटें छाती । कहां० ॥६॥ न्यामत शरण गहो जिनवानी, अन्त समय यही काम आनी । कहां० ७ ॥

॥ २५ ॥

॥ चाल — आनतो जगाई वैरी नींद मे ॥ होला ॥

अरे चातुर चेतन काहे को पड़ेहो जग कूप में । अरेहां रे जग कूप में । अरे चातुर चेतन० । टेक ॥ तेरा रूप अरूप अरे चेतन चित्त क्यूं लगाया रंगरूप में ॥ अरे० १ ॥ तूतो आनन्द सरूप अरे चेतन । किसने फँसाया विषय कूप में ॥ अरे० । २ ॥ तज पर परनति अब न्यामत । ध्यान तो लगावो जिनरूप में ॥ अरेहां रे निजरूप में । अरेचातुर० ३ ।

॥ २६ ॥

॥ चाल — नाटक ॥ है सनम तू बता कहां जाके छिपा-मुझे देता बता-नहीं आता नजर ॥ (काफी राग जोग)

है सनम तो सेरा, तेरे दिलमें बसा, तू फिरे है कहां नहीं आता इधर । तू खुदीको हटा, अपने आपे में आ, ज़रा पर्दा हटा तुझे आवे नज़र । टेक ॥ क्यूं शिवाले गया, काहे गिरजा

गया, काहे मसजिद में जाके झुकाया है सर। तूने ढूंढा नहीं, वरने था वो यहीं, तेरा माहेजबीं तेरे अन्दर। हे सनम०॥ १॥ यूंहीं गंगा गया यूंहीं जमना गया, यूंहीं भटका फिरा तूतो दर दर। अब तू आ अपने घर, प्यारे भटका न फिर, लख करके नज़र दिलमें दिलबर। हे सनम० २॥ पढ़े वेदो पुरान, अंजीलो कुरान, हाय तूने पढ़ा नहीं अपना ज़िकर। तू है निपट नादान, मेरे प्यारे अयान, लिया दुनिया को छान, नहीं देखा स्वघर। हे सनम०॥ ३॥ तुही आतम सरूप, परमातम स्वरूप, तुही भवशिव स्वरूप नहीं तुझको खबर। न्यायमत दिल जमा, सारी व्याधि हटा, तू समाधी लगा, होवे माहिर। हे सनम०॥ ४॥

॥ २७॥

चाल — कबसे तुममें यह शरारत आगई॥ गजल॥

कैसे तुमपर यह जहालत छागई। कैसे बदमस्ती शरारत आगई। टेक। तुमतो चेतन हो निराकार अय जिया। कैसे जड़ पुदगल की सोहबत भागई। कैसे०॥ १॥ रूप अपना किस लिये देखा नहीं। दूसरों पे क्यों मोहब्बत आगई। कैसे०॥ २। सिर झुकाता क्यों नहीं जिनराज को। ऐसी क्या तुम में निज़ाकत आगई। कैसे०॥ ३। किस तरह से तुझको समझाऊं दिला। न्यायमत आफत मुसीबत आगई। कैसे०।४।

॥ २८॥

॥ चाल रिवाडी वाले अलीबख्शकी॥ कहां गया मिजाजन घरवाला॥

मत कर चेतन छलकी बतियां। छलकी बतियां बलकी बतियां। टेक। झूठ कपट जगमें दुखदाई। जासे नर्क

मिले गतियां । मत० ॥ १ ॥ मनमें हो सोई बात उचारो। कर जोकहे मुखसों बतियां। मत० ॥ २ ॥ न्यामत सरल स्वभाव बनावो, सुखमें बीते दिन रतियां ॥ मत कर चेतन छलकी बतियां ॥ ३ ॥

॥ २९ ॥

॥ चाल — महबूब यार जानी ॥ पंजाबी ॥

सुनसुन प्राणी निजबानी, भवभव सुखदानी जी, मुक्ती की यही निशानी, क्यों मन नहीं आनी। टेक। जग का अंधेर मिटावे, मनभरम हटावे जी । कर्मों का फन्द कटावे। शिवनार मिलावे । सुन० १ ॥ यह स्यादवाद सत भंगी अनुयोग चारा अंगी ॥ शिव मग दरसावन संगी पट मतमें चंगी । सुनसुन० ॥ २ ॥ सुज्ञान दीपमाला, कुज्ञान दंत काला । असिआऊसा मुखवाला । त्रिभुवन उजियाला । सुनसुन० ३ ॥ यह जग जननी जिनवानी, परमारथ लाभ दानी, इम भाषी केवल ज्ञानी । न्यामत हो जाशरधानी । सुनसुन० ४ ॥

॥ ३० ॥

॥ चाल — जै जगदीश हरे ॥

जय अंतरयामी जय अंतरयामी । दुखहारी सुखकारी त्रिभुवन के स्वामी । जय अंतरयामी । टेक ॥ नाथ निरंजन सब दुख भंजन संतन आधारा। पापनिकंजन भवजन सम्पत दातारा । जय० ॥ १ ॥ करुणा सिंधु दयालु दया निध जयजय गुणधारी । वंछित पूरण श्री जिन सब जन सुख कारी । जय० ॥ २ ॥ ज्ञान प्रकाशी शिवपुरवासी

अबनाशी अविकार । अलख अगोचर शिवमय शिवरमणी भरतार । जय० ॥ ३ ॥ बिमल क्रतारक कलमल हारक तुमहो दीन दयाल । जयजय कारक तारक षट जीवन रिछपाल ॥ जय० । ४ । न्यामत गुनगावे पाप नशावे चरनन सिरनावे । पुन पुन अर्ज सुनावे शिवकमला पावे ॥ जय० ॥ ५ ॥

॥ ३१ ॥

चाल — भक्ती से मुक्ती पावोगे ॥

समकित बिन फल नहीं पावोगे । नहीं पावोगे पछतावोगे । टेक ॥ चाहे निरजन बनतप करये । बिन समता दुख दाहोगे । सम० । १ । मिथ्या मारग निश दिन सेवो । कैसे मुक्ती पावोगे ॥ सम० ॥ २ ॥ पत्थर नाव समन्दर गहरा । कैसे पार लंघावोगे ॥ सम० ॥ ३ ॥ झूठ देव गुरू तजदीजे । नहीं आखिर पछताओगे ॥ सम० ॥ ४ ॥ न्यामत स्यादवाद मनलावो । यासे मुक्ती पावोगे ॥ सम० ॥ ५ ॥

॥ ३२ ॥

॥ चाल — चल चल गोरी योवना उभारे न चल ॥

सुन २ प्यारे रस्ते में कांटे न बो कांटे न बो मतवारा न हो ॥ टेक ॥ बिषयों की यारीमें होवेगी ख्वारी । सातोंमें साथी न को । न को । न को प्यारे रस्ते में कांटेन बो । १ । भवबनमें डेरा लुटेरों ने घेरा । उठ मोह निद्रा नसो । नसो, न सो प्यारे० । २ । न्यामत बिचारो ज़रा दिल में धारो । धर्म रतनको न खो । न खो न खो प्यारे रस्ते में० । ३ ।

॥ ३३ ॥

॥ चाल नाटक की — बूंटी लानेका कैसा बहाना हुआ बूंटी लानेका ॥

बिषय सेनेमें कोई भलाई नहीं । बिषय सेनेमें० । कोई

सातों में है सुखदाई नहीं । विषय० । सुनो रावण का हाल, करके सीतासे चाल, मरा होके बेहाल, पड़ा नर्कों के जाल, जहां कोई किसीका सहाई नहीं । विषय० । १ । पांचों पांडु कुमार । करके जूवा व्योहार, दिया द्रोपद को हार, दुस्सासन वदकार, हरा द्रोपद का चीर लाज आई नहीं । वि० । २ ॥ वकराजाने मांस, खाया करके हुलास । पड़ी विपता की फांस, रोया लेले के स्वांस, कोई आकरके धीर बँधाई नहीं । विषय० । ३ । देखो जादो सुजान, किया मदिरा का पान, हुवे ऐसे अयान, खोई जलकर के जान, कोई तदवीर उनकी वन आई नहीं । विषय सेने में० । ४ । चारुदत्त प्रवीन, हुआ गणिकामें लीन, ब्रह्मदत्त सुराय, मृग मार वनजाय, शिवदत्त अजव, किया चोरी का ढव, ऐसे सातों सुवीर, सही विषयों की पीर, हुई न्यामत किसी को रिहाई नहीं । विषय सेने० । ५ ।

॥ ३४ ॥

चाल – चलगोरी जोवना उभारे न चल ॥

चल चल प्यारे मूंह को उभारे न चल । टेक । ठोकर लगेगी जमींपे गिरेगी । जावेगी छलवल निकल निकल । निकल प्यारे मूंह को उभारे न चल । १ । फिरते हैं रस्ते में जीव अनन्ते । जावेंगे कीड़ी मकोड़ी कुचल । कुचल । कुचल० । २ ॥ ईर्या सुमत यह जिनेन्द्र वखानी, रखियो न्यामत कदमको संभल संभल सभल प्यारे मूंहको० । चल चल० ॥ ३ ॥

॥ ३५ ॥

चाल – नाटक की- दहीवाली का नीर दिखाना ॥

दया करने में दिलको लगाना । हाहा सता न कोई जि-

या । दया करने में दिलको लगाना । टेक ॥ चोरी झूठ को मनसे हटावो । होवे भला जगमें सदा । वरने नर्कों में होगा ठिकाना । हाहा० । १ । तज परनारी, है दुखकारी, सारी जिया मन में जचा । माता भगनी सुतके समाना० हाहा०।२ ॥ मान लोभ मद माया चारों । चित न लगा, करले दया । न्यायमत होवे मुक्ती में जाना । हा० ३ ॥

॥ ३६ ॥

॥ चाल नई — अमोलक है यह रतन प्यारे ॥

अमोलक मनुष जनम प्यारे । भूल विषयोंमें मत हारे । टेक । चौरासी लख जूनमें प्यारे, भ्रमत फिरा चहुंओर । नरक सुरग तिरजंचमें प्यारे, पाए दुख अति घोर । कहीं नहीं सुख पायो प्यारे अमोलक० । १ । धन दे तनको राखिये प्यारे, तन दे रखिये लाज धनदे तनदे लाज दे प्यारे एक धरम के काज । यूंहीं मुनिजन कह गए सारे । अमो० । २ । यही धर्मका सार है प्यारे । कर नित पर उपकार, तज स्वार्थ परमार्थ को प्यारे । भजले बारंबार, न्यायमत हो भवदध पारे । अमो० । ३ ।

॥ ३७ ॥

॥ चाल नई तर्ज । मजा देते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले ॥

जरा होजावो हुशियार ओमुसाफिर जानेवाले । मुसाफिर जानेवाले ओ मुसाफिर जानेवाले । टेक ॥ चोरों की फिरती है डार क्रोध लोभ माया मदचार ॥ लूटेंगे सुखमार, तेरे तोड़ ज्ञान के ताले । जरा० १ । कर्मोंका फैलाहै जाल, कुमता चपला चंचल चाल । करके हाल बेहाल, तुझको घोर नरक में डाले । जरा० । २ वहां न्यामत कोई नहीं यार,

मात पिता साजन परवार । भाई और सुतनार, यारी का दम भरने वाले । जरा० । ३ ॥

॥ ३८ ॥

॥ चाल – हाय मुझे दरदे जिगरने सताया ॥

हाय मुझे छलके कुमत ने सताया । सुख सम्पत लेई, दुख दुरगत देई । विषय भोगों में मुझको फंसाया । हाय० टेक । ज़मीं में आगमें पानीमें वायुमे दरख्तोंमें । कहूं क्या क्या नचाया नाच लेजा करके कुगतों में । गया नर्कोंमें जब मरके पड़ा नीचे को सिर करके, मुसीबत व्हां वह देखी थी कलेजा याद कर धड़के । लाखों बदख्वार मिले, हा हा दुखकार मिले, सारे बदकार मिले पूरे मक्कार मिले । मुझको देखा जो ज़रा नर्क में आते आते, चीर डाला मेरा तन रस्ते में जाते जाते । हाय कुमताके धोके में आया । हायमुझे छलके कुमतने सताया ॥

॥ ३९ ॥

॥ चाल ॥ टूटे न दूध के दांत उमर मेरी कैसे कटे वाली ॥

टूटा न मोह का जाल करम तेरे कैसे कटें भारी । टेक ॥ एक तो की हिंसा दुखकारी दूजे झूठ चोरी मनधारी । शील डिगाया लखपरनारी. लीपरग्रहसारी ॥ टूटा० ॥ १ ॥ मद्य और मांस नितखाया । गणका संग रहा सुखपाया । द्यूतखेल आखेट रचा. भया जीवन पर हारी । टूटा० २ ॥ काम क्रोध माया में लागा । लोभ मानकर सत को त्यागा । न्यामत नाम धर्म सुन भागा, करी कुमतयारी । टूटा० ३ ॥

॥ ४० ॥

॥ चाल—अब हिज्र में रहना हमें मंजूर नहीं है ॥ गज़ल ॥

मिथ्यात पे चलना हमें मंजूर नहीं है । मंजूर नहीं है

हमें मंजूर नहीं है। टेक। पुदगल अनादि जीव अनादी आकाशकाल। करता इन्होंका मानना जरूर नहीं है ॥ मि० ॥ १ । परमातमा सर्वज्ञ बीतराग है सही। वह सत्याचिदानंदहै मज़दूर नहीं है । मि० । २ ॥ कर्मों को काट जबकि मुकत जीवको होवे । फिर वहांसे लौट आनेका दस्तूर नहीं है । मि० । ३ ॥ आतम सरूप देख तू परमात्मा बने । घटमें तेरे दीदार वहकछु दूर नहीं है । मि० ४ ॥ सुख दुक्खतो कर्मोंहीसे होताहै जगतमें । फल देने में न्यामत कोई मक़दूर नहीं है । मि० ॥ ५ ॥

॥ ४१ ॥

चाल – पारसनाथ सुनो बीनती मोरी यह बरदान दया करपाऊं ॥

परनति सब जीवनकी प्रानी ॥ तीनभांत बरनी हमजानी । परनति० ॥ टेक ॥ एक पाप इक पुण्य निहारो दोनोंही जगबंध बखानी । रागद्वेष हरणी है तीजी । नाश जगत दुख मुकत दिखानी । पर० । १ ॥ जबलग शुद्धदशा नहीं होव । तबलग पुण्य गहो सबप्राणी । पाप पुण्य फिर दोनों तजके । जायलहो शिव नित सुखदानी । पर० २ । सारे मतकासार यहीहै, सुनलो सबजन सीख सयानी । न्यामत निश्चय कर मन अपने है यही भवदध पारकरानी । पर० ॥ ३ ॥

॥४२॥

चाल – नाटक ॥ क़िममत सब पर लाती आफत ॥

क्यों करता है गरब अनारी । झूठा है संसार असार, तनमन धन जोबन इक दिन, सब जाना है लख आंख पसार । छतरी मारे परसराम ने ढूंढ ढूंढ के बारंबार । ताकूं मारा

सुभूमचक्री, वह भी सदा रहा नहीं सारा। रावनने इन्द्रका छिनमें गरब हरा, लछमनने वोह हता, सो वोह भी न बचा। श्रीकृश्नने किया जरासिंधु सरजुदा, उसे जर्द ने हता न्यामत है सार क्या ॥ १ ॥

॥ ४३ ॥

॥ चाल – नाटक ॥ दिले नादा को हम समझाय जाएंगे ॥

सदा चेतन तुम्हें समझाये जाएंगे। मानों ना मानों यह मनशा तुम्हारी ॥ न समझाने से हम तो बाज़ आएंगे टेक ॥ संगसाथी न कोई तेरा जगतमें प्यारे। तू अकेला है यह और सब हैं तेरेसे न्यारे। तेरा कोई भी नहीं मातपिता परवार। तुझे अग्नी में धरके यह घरके जलाय आयेंगे ॥ सदा० ॥ १ ॥ धनयोवन तो रहा थिर न किसीका जगमें ॥ एक दिन छोड़के जाना है तुझे सब जगमें। पाप बंबूल क्यों बोता है तू न्यामत मगमें। यह न कर्मों के फंदे ओ अंधे हटाए जायेंगे। सदा० २ ॥

॥ ४४ ॥

चाल – सिवाड़ी वाले अलीबखशकी ॥ दगाबाज तेरे मै ना बोलूं ॥

मतमान करो मानो प्यारे। मानो प्यारे जानो प्यारे, मतमान करो मानो प्यारे। टेक ॥ मानकिया राजा रावन ने। छिनके बीच गए मारे। मत० १ ॥ इन्द्र झूठा इन्द्र कहायो। हार गया रणमझधारे। मत० २ ॥ चक्री सुभूम सुमंत्र मिटायो। पड़ उदधि नरक गयो प्यारे। मत० ३ ॥ न्यामत मान महादुखदाई। याही तज हों सुख सारे। मत० ४ ॥

॥ ४५ ॥

चाल – अलीबखशकी। मेरे प्यारेजी जगैना जगा के हारी चाहे ना जगैना ॥

कोई प्यारेजी चलैना। कोई यारो जी चलैना संगारे

नारी बांदी तो चलेना। कोई प्यारो जी चलेना। टेक। ऊंची अटरया कोट कुठरया जामें प्राण बचेना। चारों गती में तू फिर आया। कर्मोंकी जंज़ीर कटेना। कोई० १॥ भाई भेनरया, मात पितरया, कोई बीच पड़ेना॥ न्यामत सब स्वारथ के साथी। डावा सूंकी कोई पैर धरेना। कोई० २॥

॥ ४६ ॥

॥ चाल – गजल होली ॥ जमाना तेरा मुब्तला होरहा है खबर भी है तुमको कि क्या होरहा है॥

तू क्या उम्र की शाख़पे सोरहाहै। खबर भी है तुझको कि क्या होरहा है॥ टेक॥ कतरते हैं चूहे इसे रातदिन दो॥ और इसपे तूयूं बेखबर सोरहा है॥ तू० ॥१॥ है नीचे खड़ा मौत का मस्त हाथी। तेरे गिरने का मुंतज़िर होरहा है। तू०। २। अय न्यामत यह टहनी गिरी चाहती है। विषय बूंद पे अपनी जां खोरहा है। ३।

॥ ४७ ॥

॥ चाल – चर्खालेदे कमर के हिलाने को॥

पढ़ो विद्या अविद्या हटाने को, हटाने को, भय मिटाने को। टेक। खोया जहालतने भारतको प्यारे। पढ़ो विद्या जहालत मिटानेको। पढ़ो०। १। फूट अविद्या ने घरघर में डाली। सारी भारत की संपत लुटाने को पढ़ो० ॥ २। भारत में व्यभिचार इसने चलाया। बल बीरज सभोंके घटानेको। पढ़ो०। ३। न्यामत अविद्या ने भारत उजाड़ा। लड़े आपस में सरके कटाने को। ४।

॥ ४८ ॥

चाल – पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं॥ गजल॥

परदा पड़ाहै मोहका आता नज़र नहीं। चेतन तेरा सरूप

है तुझको खबर नहीं ॥ टेक। चारों गती में मारा फिरा ख्वार रातदिन। आपमें अपने आपको लखता मगर नहीं। पर्दा० १। तज मन विकार धारले अनुभव सुचेत हो। निजपर विचार देख जगत तेरा घरनहीं ॥ पर्दा०। २। तू भव स्वरूप शिवस्वरूप ब्रह्मरूपहै। विषयों के संगसे तेरी होती क़दर नहीं। पर्दा०। ३। चाहे तो कर्म काट तू परमात्मा बने। अफ़सोस कभी इसपे तू करता नजर नहीं। पर्दा०। ४। निज शक्ति को पहिचान समझ अबतो न्यायमत। आलश में पड़े रहनेसे होता गुज़र नहीं। प०। ५।

॥ ४९ ॥

चाल – सोरठ अधिक सरूप रूपका दिया न जागा मोल ॥

जिया रागभाव दुखदाई राग को मनसे हटाओ जी। मन से हटाओजी, राग को मनसे हटाओजी। टेक ॥ है राग निमत संसार करम का मूल बतायोजी। जो चाहो हो परमानन्द भाव वैराग बनावोजी। जिया०। १। यह राग चिकट सम जान भूल इमरस्ते न जावोजी। लगजावेगी करमोंकी धूल ज्ञानदामनको बचावोजी। जिया०। २। अब पर परनतिको छोड़ ध्यान आप में जमावोजी। न्यामत तजराग अरु द्वेष सदा आतम गुनगावोजी। जिया०। ३।

॥ ५० ॥

चाल – नाटककी ॥ मुस्लमा होनेको अय काबामें तय्यार नहीं धर्मके बदलेमें जां देनेमें कुछ आर नहीं ॥ गजल ॥

कर्म फलदाता कोई और तो बनता है नहीं। आप फल देता है टालेसे यह टलता है नहीं। टेक। सुखदुख जीवको होता है करम से अपने। कर्मका बंध समझलो कि बदलता

है नहीं । कर्म० ॥ १ ॥ करता हरता है यही जीव करमका अपने । यह वह मसला है किसी न्यायसे कटता है नहीं । कर्म० ॥ २ ॥ है वह ईश्वर तो सकल विश्वका द्रष्टाज्ञाता, उसपे इल्ज़ाम सज़ादेनेका लगता है नहीं । कर्म० ॥ ३ । पेड़ बंबूल जो बोवोगेतो कांटे लोगे, अम्बफल कैसे लगेगा जो तू बोताहै नहीं । कर्म० ॥ ४ ॥ है स्वयम् सिद्ध यह संसार रहेगा यूँहीं, दिन क़यामत के सरब नाश यह होता है नहीं । कर्म० ॥ ५ ॥ इसको ईश्वर जो रचे फेरकरे नाश इसका, खेल बच्चोंका है सो ऐसा वह करता है नहीं । कर्म० ॥ ६ ॥ इसपे ईमान करो झूठे खयालात तजो, न्यायमत वस्तुका निजगुणतो बदलता है नहीं ७ ॥

॥ ५१ ॥

॥ चाल—पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥ गजल ॥

दुन्या में देखो सैंकड़ों आए चले गये । सब अपनी करामात दिखाये चले गये । टेक । अर्जुन रहा न भीम न रावन महाबली । इस काल बलीसे सभी हारे चले गये । दुन्या० १ ॥ क्या निरधनो धनवंत और मूर्खों गुण-वंत । सब अंत समय हाथ पसारे चले गये । दुन्या० २ ॥ सब जंत्र मंत्र रहगए कोई बचा नहीं । इक वह बचे जो कर्मोंको मार चलेगये । दुन्या० ३ ॥ सम्यक्त धार न्याय-मत नहीं दिल में समझले । पछतायगा जो प्राण तुम्हारे चलेगये ॥ दुन्या० ४ ॥

॥ ५२ ॥

॥ चाल — होशेरुबा सितमगिरा सचतो बता तू कौन है ॥

अय दिल ज़रा तु कर निगाह इस जगमें तेरा कौन

है। सुख दुखमें साथ दे तेरा सत्र तो बता वह कौन है टेक ॥ माता पिता या सुत सुता, इनमें नहीं कोई सगा। भाई बहन या बंधुजन, साजन सजनमें कौन है। अय० १ ॥ नारीको प्यारी जानता, यारोंकी यारी मानता। अन्त समेमें दें दगा, फिर तेरा यार कौन है। अय० २ ॥ तन मन वचन कन धन वसन. हैं सर्व अन्य करले मननं। न्यामत धरमकर शुभ यतन। इन बिन हितैषी कौनहै ॥ अ० ३

॥ ५३ ॥

॥ चाल--पहलूमें यार है मुझे उसकी खबर नहीं ॥

यह कैसी मुक्ती आपने मानी बताइये। मुक्ती से लौटना होवे, क्योंकर सुनाइये ॥ टेक ॥ जो जीवके मुक्तीमें लगे कर्म कहोगे। तो भेद जगतमुक्तमें क्याहै दिखाइये।यह०१ गर कर्म कोई मोक्षमे बाक़ी नहीं रहता। तो लौटने का ज़र्या भी हमको बताइये। यह० २ ॥ फिर कुछ हज़ार वर्षकी क्युं कैद लगाई। इसमें प्रमाण क्याहै हमें भी जिताइये। यह० ॥ कहते हो लौटने पे रहे ज्ञान मुक्त का। दुन्यामें कोई एक तो हमको दिखाइये ॥ यह० ४। जब कर्म काट आत्मा परमात्मा बने। करमों में फंसे फिर न यकीं इसपे लाइये॥यह०५॥ परमाण नयसे सिद्ध फिर आना नहीं होता। न्यामत ज़रा अज्ञान का परदा हटाइये। ६ ॥

॥ ५४ ॥

॥ चाल--नर्गाछेदे कमरके हिलानेको ॥

आगया लल्ले करमके जलानेको. जलानेको शिवजानेको। टेक ॥ चारोंही मंगल चारोंही उत्तम. चारों

का शरना सुखपाने को । १ । अरहंत सिद्ध और मुनी जैन-बानी, कारणहै शिवपद दिलाने को । शर्ना० ॥ २ ॥ सम्यक्त नय्यामें चलबैठ न्यामत । मोह सागरसे पार हो जानेको । शर्ना लेले करम के जलाने को ॥ ३ ॥

॥ ५५ ॥

॥ चाल — नई ॥ अमोलक है यह रतन प्यारे ॥

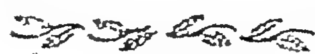
अमोलक जैन धम्म प्यारे । भूल विषयों में मतहारे ॥ टेक ॥ धर्म पिता माता धर्म प्यारे । धर्म संगाती जान । धर्म देत संसार सुख प्यारे देत स्वर्ग निर्वान । धर्म बिन कोई नहीं प्यारे । अमोलक० ॥१॥ तनजाते धन दीजिए प्यारे, तनदे लाज संवार । काम पड़े जब धर्मका प्यारे॥तीनों दीजो वार, धरम से विघन टरें सारे । अमो०॥२॥ अगन शैल रणसिंधु में प्यारे । पहुंच सके नहीं कोय,न्यामत निश्चय जानियो प्यारे, धर्म सहाई होय धरम भवसागर से तारे, अमोलक० ॥ ३ ॥

॥ ५६ ॥

चाल—चलती चपला चंचल चाल सुन्दरनार अलबेली ॥ (नाटक)

चल चल अब चल आतम बाग छलबलिया मनबेली । जोबन मदमाता डोले, आनंद अमृत विष घोले, करता कुमतासंग अठखेली । चल चल० ॥ टेक ॥ ज्ञानगुलाब अनुभो भँवर, संयमसोसनजान, सहस अठारहशील के सर्व लखो करध्यान ॥ आतमगुण फूल चितारो, चर्चाचंपा चित धारो, चहुंदिश खिलरही चरित चमेली । चल चल० । १ । न्यामत बाग निहारिये, दरशन आंख पसार ॥ मरवा मोह

निवारदो, आनमिले शिवनार । आहा शिवसुंदर प्यारी हांहां आतम सुखकारी, सखीसुमतासी लार सुहेली । चल चल अवचल० ॥ २ ॥



॥ ५७ ॥

॥ चाल — टूटे नदृधके दांत उमर मेरी कैसे कटेवाली ॥

सुन स्याद्वाद सतभंग अरे मत करे जनम ख्वारी ॥ टेक ॥ मतना रागीदेवमनावे मत लोभी गुर सीसनिवावे । मतना सुन मिथ्या मतवानी भवभव दुखकारी । सुन० ।१। कर मिथ्या सेवन नर्कगया तहां दुःख सहेभारी ॥ तेरा नेम धर्म और निज सुध बुध सब दलमल करडारी । सुन० २ । तै आठ आठ तेरा को छोड़ पाँपचीस चितधारी । सुमतासी सुंदर त्यागदई कुमता से करी यारी । सुन० ॥ ३ ॥ कहीं पूजे भूत अरु ऊत सीतला अरु देवीसारी । कहीं पूजे पीर फकीर क्रोधी अरु ममताधारी । सुन० ४ कहीं पूजी सेढ मसानी, काली नागभवनवारी । कहीं पित्र-श्राद्ध कराए जिमाए बहु नर अरु नारी ॥ सुन० ॥ ५ ॥ कहीं भैरव दानाशेर मनाए क्षेत्रपाल भारी, कहीं जापूजागूगा ख्वाजा अरु कुतब गोमभारी ॥ सुन० ॥ ६ कहीं गंगा जमना फिरा डोलना ज्वाला चितधारी. कहीं वड पीपल पशुचाक मनाए मिल सब नरनारी सुन० ७ कहीं भैंसे बकरे मार चढादिए करी दुराचारी. कहीं वेल बुटेर कल्ीक वेदमें लिख कर दिए जारी ॥ सुन० ८ ॥ कहीं पूजे बंदर मस्तकलंदर धूनें जटाधारी, तज न्यामत यह पाखंड गई क्यूं अकल तेरी मारी ॥ सुन० ॥ ९ ॥

॥ ५८ ॥

॥ चाल—इंदर सभा ॥—अरे लालदेव इस तरफ़ जल्द आ ॥
बड़ा मुजको जोगनने धोखा दिया ॥

अरे सुनतो चेतन ज़रादेके ध्यान। कि होता है कुछ तुजको अपनाभी ज्ञान ॥ १। अबनाशी है चेतन है ज्ञाता है तू। बिनाशी पे नाहक़ लुभाता है तू ॥ २। है अफसोस चेतन तेरी सीख पर। कि आशक हुआ तू बिनाशीक पर ३॥ बनाया अरे तूने बिषयोंको यार। लिए फिरता है दुष्ट कर्मों को लार॥ ४ ॥ उड़ाता है क्यूं खाक़ नरभव की तू। करे है तलाश और किस भवकी तू ॥ ५ ॥ मनुप देह फिर तू नहीं पाएगा। समझ ले नहीं फिर तू पछताएगा॥ ६ ॥ यह अच्छी नहीं भूलतू छोड़दे। श्री गुर पे जा, न्यायमति सीखले ७ ॥

॥ ५९ ॥

॥ चाल—सोरठ अधिक सरूप रूप का दिया न जागा मोल ॥

कर सकल विभाव अभाव भावसे करले पर उपकार टेक॥ पाप पुन्यसे दुख सुख होवें सो सब जग व्योहार। तैं तिहुं जगतिहुं काल अकेला, सब देखन जानन हार कर० ॥ १ ॥ देह संयोग कुटुंब कहायो, सोतन अलग निहार। हम न किसी के कोई न हमारा, झूठा है संसार। कर०। २ ॥ राग भावसे सज्जन माने दुर्जन द्वेष बिचार। यह दोनों तेरे नहीं न्यामत, तू चेतन पदधार। कर० ॥३॥

॥ ६० ॥

चाल—नाटक॥ दही वालीका तौरादिखाना ॥

सबको जय जय जिनेन्द्र सुनाना। आहा समा है कैसा

बना ॥ सब० ॥ टेक ॥ श्री जिनवरका ध्यान लगावो। जिसने दिया, हमको जगा, मोह निद्रामें था सब ज़माना ॥ आहा० ॥ १ ॥ सम्यक दरशन दिलमें धारो। जिससे जिया, होगा तेरा, सीधा मुक्ती के रस्ते को जाना ॥ आहा० ॥ २ ॥ स्याद्वाद पर ईमान लावो ॥ जिससे कटे, इक दम मिटे, झूठी युक्ती का कल्पित बहाना ॥ आहा०३ नय परमाण से तहक़ीक़ करलो। परदाहटा, पक्ष मिटा, यही न्यामत जिनेन्द्र बखाना ॥ आहा० ॥ ४ ॥

इति श्री जैन भजन मुक्तावली
(न्यामत विलास अंक ७)
समाप्तम् ।

पता पुस्तक मिलने का
न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्ट्रिक्ट बोर्ड हिसार
मु० हिसार (पंजाब)

॥ नोटिस ॥

न्यामत विलाश के प्रथम भाग के निम्न लिखित २० अंक (हिस्से) तय्यार किये गये हैं। मगर अभी तक सिर्फ वह ही हिस्से छपे हैं जिनके सामने मूल्य लिखा गया है ॥

अंक	नाम अंक	नागरी	उर्दू
१	भूमिका		
२	मंगला चरण		
३	गायन शिक्षा		
४	चौबीस जिनराज जयमाल		
५	पंच कल्याणक स्तोत्र		
६	अरिहंत गुणमाला		
७	जैन भजन मुक्तावली	=)	
८	गजल भजन एकादशी	)	
९	स्त्री गान जैन भजन पचीसी	-)॥	
१०	कलयुग लीला भजनावली	-)॥	-)॥
११	कुन्ती नाटक	=)	
१२	चिदानन्द शिवसुन्दरी नाटक	॥=)	।=)
१३	अनाथ रुदन	-)	
१४	जैन कालिज भजनावली		
१५	रामचरित्र भजन मंजरी		
१६	गजल वैराग माल		
१७	ईश्वर सरूप दरपण		
१८	जैन भजन शतक	।)	
१९	थ्येटरीकल जैन भजन मंजरी	=)	=)
२०	मैनासुन्दरी नाटक	१॥)	

पुस्तक मिलने का पता—

बाबू न्यामतसिंह जैनी सेक्रेटरी डिस्टिरिक्ट बोर्ड हिसार

मु॰ हिसार (पंजाब)

ॐ

श्री गौशाला आगरा की

वार्षिक रिपोर्ट

यानी

मिती आसौज सुदी ११ संवत् १९७० से लगाय

मिती चैत बदी १५ तक की

जिस को

पं० गोविन्दसहाय शर्म्मा बी. ए. बैरिस्टर एट-ला

मन्त्री श्री गौशाला कमेटी आगरा

ने

सर्व गोभक्तों के अवलोकनार्थ प्रकाशित किया।

यह पुस्तक गौशाला के औफ़िस से

बिना मूल्य मिलती है।

Printed by K. Hanumant Singh at the Rajput Anglo Oriental Press, Agra.

५०० प्रति सम्वत् १९७१

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

जमा खर्च श्री गौशाला आगरा का

मिती आसौज सुदी ११ सम्वत १९७७ से लगाय मिती चैत बदी १५ तक।

आमदनी)॥ सैकड़े की बिक्री पर।

बेलनगंज।

३१)	पातीराम परसादीलाल मि० कातिक वदी ७
४१॥।=)॥।	मनोरथ भगत श्यामराम मि० चैत वदी ६ तक
२३)॥।	छोटेलाल कलियानदास मि० फागुन सुदी १ तक
४॥)॥	शिवलाल रघुनाथदास मि० फागुन सुदी ७ तक
५०-)।	बलदेवदास प्रभुदयाल मि० चैत वदी १ तक
६०)	नंदराम छोटेलाल मिती कातिक वदी १२ तक
१०१)	छीतरमल रामदयाल मिती चैत वदी ९ तक
५०)	श्यामसुन्दर बद्रीदास मि० माह सुदी १५ तक
१२॥)॥।	मेघराज हरविलास मिती फागुन सुदी २ तक
२९॥।≡)।	गयाप्रसाद बिहारीलाल मि० फागुन वदी १५ तक
५=)॥	पातीराम तेजपाल मिती कातिक सुदी १५ तक
२२)	रामप्रसाद भगवानदास मि० माह वदी ६ तक
३॥।)	रेवतीराम तुलाराम मि० कातिक सुदी १ तक
१२)	रघुनाथदास रामप्रशाद मि० मगसिर वदी १४ तक
५१)	चिरंजीलाल भम्मनलाल मि० कातिक वदी ४ तक
४३॥।)	स्वारथराम रामसरनराम मि० मगसिर वदी ६ तक
२०)	गेंदामल रोशनलाल मिती कातिक वदी ४ तक
५१)	मूलचन्द जादौराम मिती कातिक वदी ७ तक
१००)	जोधराज देवजीत मिती पौष सुदी १० तक
५१)	खमानीराम विधीचन्द मि० कातिक वदी ७ तक

३०॥=)॥ गिरवरलाल दयालीराम
मिती माह वदी १२ तक

२०) ठाकुरदास रामसहाय मि०
कातिक वदी ४ तक

५१) विश्वेश्वरदास शिवप्रताप
मि० कातिक वदी ७ तक

६५) दिलसुखराम मेघराम मि०
मगसिर वदी ६ तक

३॥=)। लक्ष्मीनरायन दलाल
मिती माह सुदी १५ तक

२२६-)। तेजकरन चांदमल मिती
माह सुदी १ तक

५१) लछमनदास व्रजवल्लभ मि०
कातिक वदी ७ तक

॥।=) गुलाबराय छोटेलाल मि०
फागुन वदी ३ तक

४८॥-)॥। मक्खनलाल मनोहरलाल
मिती माह सुदी ९ तक

३३॥=) गंगाधर बुद्धीलाल मिती
फागुन वदी २ तक

९०) तुलसीराम साहू मि० मग-
सिर सुदी २ तक

१६॥=) गिरधारीलाल शम्भूनाथ मि०
फागुन वदी १० तक

३॥) मैंगालाल शंकरलाल मिती
चैत वदी ८ तक

६३॥-)। गोविन्दप्रसाद रामनरायन
मि० चैत वदी १५ तक

८॥)॥। ओंकारनाथ भोलानाथ मि०
माह सुदी १३ तक

५१) हरवक्स सूरजमल मिती
कातिक वदी ७ तक

७१) दौलतराम कन्हैयालाल
कातिक वदी ७ तक

५१) गंगाराम मुन्नीलाल मिती
कातिक वदी ७ तक

१००) मूलचंद नेमीचन्द मिती
कातिक वदी ७ तक

२५) वंशीधर गंगाप्रसाद मिती
पौष सुदी ६ तक

१९।-) पीरूमल राय राधारमण
मि० फागुन वदी ८ तक

१००) अमोलकचन्द गोविन्दराम
मिती माह वदी १० तक

४९=)॥ गंगाप्रसाद रतनलाल मि०
पौष सुदी १५ तक

२१) गोविंदराम शालिगराम
मि० कातिक वदी ७ तक

५१) बांकेलाल श्यामलाल मि०
कातिक वदी ७ तक

१३) रामचन्द नानकचन्द मि०
माह सुदी ६ तक

७=) मुरलीधर पन्नालाल मिती
फागुन वदी ५ तक

१) गिरधारीलाल वकील मिती
चैत वदी ८ तक

२०) झगडूमल कृपाराम मिती मगसिर सुदी ५ तक

३१) तेजपाल जमुनादास मिती फागुन वदी ८ तक

२१) गुलाब राय सावलदास मि० कातिक वदी ७ तक

९) कलियानचन्द पन्नालाल मि० माह वदी १३ तक

२५) गनपतराय सत्यनरायन मि० कातिक वदी ७ तक

५१) मोतीराम रामजीत मिती कातिक वदी ७ तक

२५) चुन्नीलाल बूधीमल मिती कातिक वदी ४ तक

२०) सुखनन्दन बलदेवदास मिती कातिक सुदी १४ तक

२५) श्यामलाल राधाकिशन मि० कातिक वदी ७ तक

५१।≡) बैजनाथ मदनगोपाल मि० मगसिर वदी ५ तक

१४॥)। देखचंद लोभछ मिती फागुन सुदी ११ तक

३०) रघुनाथदास चुन्नीलाल मि० मगसिर सु० २

५७) सोनपाल मुन्नालाल मिती माह सुदी १२ तक

१५०) नत्थूमल महादेव प्रसाद मिती माह सुदी १५ तक

४) शंकरलाल रूपचंद मिती फागुन सुदी १० तक

१०१) सालिगराम बिहारीलाल मि० चैतवदी ६ तक

२१) सुंदरलाल मोतीलाल मि० कातिक वदी ७ तक

४६।=)॥। जीवा भाई मगनलाल मि० कातिक सुदी १२ तक

२०) जयनरायन भगत मि० कातिक वदी ४ तक

२) बिहारीलाल परचूनिया मि० कातिक वदी ७ तक

२८०१॥।)

कचैहरीघाट ।

३॥)। जानकीदास गोविंदराम मि० मगसिर सुदी १ तक

६०) नवलकिशोर रामप्रसाद मि० चैत वदी ३ तक

॥)॥। छोटेलाल पन्नालाल मि० मगसिर वदी १ तक

२॥=)। जानकीदास काशीनाथ मि० मगसिर वदी १ तक

१) श्यामलाल चिम्मनलाल मि० माह वदी १२ तक

१) मूलचंद बैजनाथ मि० आसोज सुदी ११ तक

२५) श्यामलाल विधीचंद मि० कातिक सुदी ३ तक

१) फल्लूमल रामप्रसाद
मि० चैत वदी ५ तक

८३॥≡)।

फिलफगंज ।

५) सोहनलाल इन्द्रजीत
मिती माह वदी १५ तक

॥)॥। नन्दमल सूरचंद मिती
मगसिर वदी ७ तक

५) गिरधरलाल गोविंदराम
मिती माह सुदी ७ तक

२।) भजनलाल डमरलाल
मिती मगसिर वदी ५ तक

२॥) कन्हैसिंह बाबूलाल पत्थर-
वाले मि० चैत वदी ६ तक

६=) नारायनदास पन्नालाल
मि० चैत वदी ८ तक

३।=) शिवलाल सांवलदास
मिती चैत वदी ११ तक

३=)॥ तुलसीराम प्रभूलाल चक्की-
वाले मि० चैत वदी ९ तक

५) किशनलाल मिट्ठनलाल
मिती माह सुदी १४ तक

२) दानाराम बंसीधर मिती
माह वदी १३ तक

२) बैजनाथ चक्कीवाले मिती
फागुन सुदी ७ तक

२१॥=)॥ सीताराम छेदालाल मिती
माह सुदी ७ तक

७) गोवरधनदास भोलानाथ
मिती चैत वदी १४ तक

१०) ठाकुरदास सीताराम
मिती फागुन वदी ४ तक

२) चौखीराम मानकचंद चक्की-
वाले मि० फागुन वदी ४ तक

२) वंशीधर शिवशंकरलाल
मि० कातिक सुदी १० तक

५॥=)॥ श्यामलाल कन्हैयालाल
मिती चैत वदी १० तक

७५।-)।

शंकरगंज ।

॥≡)॥ हरीलालमल नरायनदास
मिती माह वदी १५ तक

१) फल्लूमल शंकरलाल मि०
कातिक वदी ९ तक

२१॥।-)॥ अमरनाथ हरधरनदास
मि० फागुन सुदी ९ तक

२२॥=)॥ वृन्दावन गोपालदास मि०
चैत वदी ३ तक

२) छेदालाल बाबूलाल मि०
फागुन वदी १ तक

२०) बैजनाथ छेदालाल मि०
चैत वदी ४ तक

७३।≡)॥

नयागंज ।

४।) कल्लूमल प्यारेलाल मि० कातिक सुदी ४ तक

३०) गोविंदराम चुन्नीलाल मि० मगसिर सुदी २

।=)। बिहारीलाल दयालचंद मि० मगसिर सुदी २

३॥-)॥। कन्हैयालाल मूलचंद मि० माह सुदी १५ तक

२) प्यारेलाल रामबाबू मि० फागुन बदी ४ तक

=) गिरवरलाल बद्रीप्रसाद मि० मगसिर बदी ५ तक

९॥=) कल्लूमल शंकरलाल तमाखू- वाले मिती चैत बदी ५ तक

३॥।=) रूपचंद चिम्मनलाल मिती फागुन बदी ६ तक

११) प्रभूलाल श्यामलाल मिती कातिक बदी २ तक

१३ माधोप्रसाद जगन्नाथ मि० मगसिर बदी १ तक

२५) गुलाबचंद सूरजभान मि० कातिक बदी ७ तक

७) सालिगराम रामप्रसाद मि० मगसिर बदी ८ तक

४७।-)॥ दुरजनमल गोविंदराम मि० चैतबदी १२ तक

५) रामरछपाल बैनीप्रसाद मि० चैतबदी ७ तक

२) गिरवरलाल सुंदरलाल मिती माह बदी १५ तक

।।।) किशोरीलाल मिती माह बदी ११ तक

४) बिहारीलाल माधोप्रसाद मि० चैतबदी ६ तक

४॥।≡)॥ सेवाराम काशीराम मि० माह सुदी १० तक

१) नरायनदास सीताराम मि० फागुन बदी ५ तक

४) खूबचन्द महादेवप्रसाद मिती माह सुदी १ तक

११।)॥। छीतरमल नरायनदास मिती मगसर बदी ४ तक

७) लीलापति तुलसीराम मिती पौष सुदी १५ तक

१५) देवसुख फूलचन्द मिती माह बदी १४ तक

११॥) सत्यनारायण गणेशीलाल मि० कातिक बदी १४ तक

४१) परसादीलाल छेदालाल मिती चैत बदी १० तक

१२=)। नत्थूमल रघुनाथप्रसाद फागुन सुदी २ तक

४०) सरवनलाल इन्दरमल मग- सर सुदी २ तक

४) टेकचन्द गणेशीलाल मि० मगसर सुदी २ तक

५०) चुन्नीलाल घी वाले मि० फागुन बदी ११ तक

१) जमुनादास छोटेलाल मि० फागुन बदी ६ तक

४४) केदारनाथ भगवानदास मि० फागुन सुदी ८ तक

६१॥।-)। रामहंस धनीराम मि० फागुन बदी ३ तक

४६।) रामचन्द गोवर्धनदास मि० माह सुदी १४ तक

१) हरनारायण दुलीचन्द मि० माह बदी १३ तक

११॥-)। जोधराज मोतीराम मि० फागुन बदी २ तक

३॥≡)॥ छीतरमल हीरालाल मि० फागुन बदी १४ तक

२३॥।)॥ परमादीलाल गिरिराजकिशोर मि० मगसर सुदी २ तक

=) दुलीचन्द दीपचन्द मि० कातिक सुदी १२ तक

२) मूलचन्द नारायण दास मि० फागुन बदी ११ तक

५) चन्द्रहंस नारायणदास मि० मगसर सुदी २ तक

६५) मुरलीधर शंकरलाल मि० चैत बदी ३ तक

४५) अमरसिंह मनसिंह मि० मगसर सुदी २ तक

१) गुरजूमल पन्नालाल मि० फागुन बदी ५ तक

=) मूलचन्द भगत मि० माह बदी ११ तक

१॥।=)॥ नरायनदास सांभर वाले मगसर सुदी ७ तक

५४॥≡)॥ शंकरलाल जमुनादास मि० फागुन बदी ६ तक

॥=)॥ बिहारीलाल दुलीचंद मि० माह सुदी ११ तक

८) रामलाल कन्हैयालाल मिती फागुन बदी ९ तक

२) रामसुखदास हुलासीदास मिती चैत बदी ७ तक

१) मानकचंद मनोहरलाल मिती माह बदी ९ तक

५) कल्लूमल चन्द्रहंस मगसिर सुदी २ तक

७५४।-)

रावतपाड़ा।

-) सुक्खीमल बजाज मिती माह सुदी ९ तक

३॥≡)॥ गोपीनाथ राधेलाल मि० चैत बदी १० तक

१) कुञ्जामल छीतरमल मि० कातिक बदी १ तक

१३।=)। मुन्नालाल मिट्ठनलाल मि० कातिक सुदी ९ तक

५)॥ लछमनदास बाँकेलाल
मिती मगसिर बदी ९ तक
१॥।=) राधेलाल बाबूलाल मिती
माह सुदी ९ तक
१९।=)॥। शिवदास बहादुरमल
मिती मगसिर सुदी २ तक
९।) लल्लामल बाबूलाल मिती
चैत बदी १५ तक
२०) गोविन्दराम हरप्रसाद
मिती फागुन बदी १५ तक
१) गोपीनाथ मदनमोहन
मिती मगसिर बदी २ तक
॥=) घासीराम पंसारी मिती
फागुन बदी ३ तक
१०) मुन्नालाल विश्वम्भरनाथ
मिती चैत बदी १५ तक
५१॥≡)॥ सीताराम छगनमल मिती
फागुन सुदी ३ तक
११) काशीनाथ बालमुकन्द
मि० कातिक सुदी १५ तक
॥≡)। गिरवरलाल पंसारी मिती
फागुन बदी ११ तक
६।) बालमुकन्द मदनमोहन
मिती फागुन सुदी ९ तक

---

१५५)॥।

ठेला अफ़ीम का।

५॥) गुलाबचन्द दुरगादास
मिती फागुन सुदी ७ तक

९॥) हीरालाल लश्करी मिती
फगुन सुदी ७ तक
५।=)॥ गुन्नीमल छेदीलाल मिती
फागुन सुदी ७ तक
३।-) कन्हैयालाल फागुन सुदी
७ तक
४।) दुर्गाप्रसाद मिट्ठनलाल
मिती फागुन सुदी ७ तक
७)। इन्द्रचन्द चौधरी मिती
फागुन सुदी १३ तक
३।≡) कचौड़ीमल सूलचन्द
मिती फागुन सुदी ७ तक
२५॥=) बंसीधर खैतानी मिती
फागुन सुदी ९ तक
१॥≡)॥। भीमराज महादेवप्रसाद
मिती फागुन सुदी ९ तक
३॥)॥। लालचन्द सेठ मिती
फागुन सुदी ७ तक
॥।=) गुलाबचन्द लखमीचन्द
मिती फागुन सुदी ७ तक
१॥-) केदारनाथ पसारी मिती
फागुन सुदी ७ तक
-)॥ मूलचन्द छिम्मनलाल
मिती मगसिर सुदी ५ तक
।) काशीनाथ मिती फागुन
सुदी ७ तक
=) विधीचन्द परसादीलाल
मिती मगसर सुदी ५ तक

।) बजरङ्गप्रसाद मिती फागुन सुदी ७ तक

।।।) करोड़ीमल मूलचन्द मि० फागुन सुदी ७ तक

।।) नरायनदास केदारनाथ मि० माह सुदी १० तक

———

७४।≡)।।।

आमदनी मासिक चन्दे की इस भांति आई :—

मसजिद तला आगरा ।

१≈) बांकेलाल मोहनलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

६) देवी सहाय छज्जामल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।≈) दुलारमल गुमाश्ते महीने ७ फागुन सुदी १५ तक

१।।) रंगालीलाल बाबूलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।) दुर्गादास हरदयालमल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।-)।।। बद्रीदास बांकेलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१।।) भोलानाथ नरायनदास म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।) जगन्नाथ गोपालदास म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१।।) केदारनाथ भगवानदास म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१।।) बांकेलाल बद्रीदास म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।) बालोमल रामस्वरूप म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१।।) चिम्मनलाल हलवाई म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।) मल्लोमल मूलचंद महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

।≈) रामसुखदास छिट्टामल महीना ६ फागुन सु० १५

।।।) भगवानदास जयगोविंद महीना ६ फागुन सु० १५

१।।) गोपीनाथ बंगालीमल महीना ६ फागुन सु० १५

।।।) मुकन्दीलाल पन्नालाल महीना ६ फागुन

।।।) जगन्नाथ छिगामल महीना ६ फागुन सु० १५ तक

≶) दामोदरदास टोपीवाले महीना ६ फागुन सु० १५ तक

≈)।। वासुदेव मिर्जईवाले महीना ५ माह सुदी १५ तक

।।≈) नरसीमल लछमीनरायन महीना ५ माह सुदी १५ तक

।≈)। रामदयाल नरसीनरायन महीना माह सुदी १५ तक

।) गुलजारमल सिरकीवाले महीना ४ कातिक सुदी १५ तक

≡) सल्लीमल तमोली महीना ६ कातिक सुदी १५ तक

१।) कल्लूमल बिन्दावन खोंचले-वाले महीना ५ माह सुदी १५ तक

१॥) रघुनाथदास ठि० रा० पं० महीना ६ फागुन सुदी १५

।=)। भरोसी लाल ठि० बां० गो० महीना ५ माह सुदी १५ तक

।-) मोहनलाल भानगर म० ५ माह सुदी १५ तक

२) किशनलाल चौबे दलाल महीना ४ पोह सुदी १५ तक

॥।) गंगाराम छोटेलाल तिरपौ-लिया म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।=) गेंदालाल पंसारी महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

।=) नत्थूमल मुन्नालाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।=) भोलीराम घटिया वाले महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

॥।) गुलाबचंद केदारनाथ म-हीना ३ फागुन सुदी १५ तक संo १९६९

॥।=) किशनलाल म० ७ फागुन सुदी १५ तक

=) प्रभुदयाल दलाल म० १ आश्विन सुदी १५ तक

३।७॥-)॥

जौहरी बाजार।

१॥) जगन्नाथ कुमरसेन महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

।-) मनीराम बजाज महीना ५ माह सुदी १५ तक

१॥) वल्लभदास सोहनलाल म-हीना ६ फागुन सु० १५ तक

।=) मिट्ठनलाल गुलाबचंद म-हीना ६ फागुन सु० १५ तक

।≡)॥ मूलचंद छुन्नामल महीना ६ फागुन सु० १५ तक

।≡)॥ मदनमोहन नत्थीमल म-हीना ६ फागुन सु० १५ तक

।=) शंकरलाल टोपीवाले म-हीना ६ फागुन सु० १५

॥।) बजरंगप्रसाद विश्वम्भरनाथ महीना फा० सु० १५ तक

१।) मदनमोहन गर्ग महीना ५ माह सुदी १५ तक

॥।) मुन्नालाल सालिगराम म-हीना ६ फागुन सु० १५ तक

॥।) लोंदूमल टोपीवाले महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

॥।) शिवदयाल विश्वम्भरनाथ महीना ६ फा० सु० १५

|||) नरायनदास गोटेवाले महीना ६ फागुनसुदी १५ तक

||=) वंशीधर रामप्रसाद म० ५ माह सुदी १५ तक

≡) सोनामल फकीरचन्द म०६ फागुन सुदी १५ तक

३) जानकीदास मुरलीधर म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।) भूरामल मुनीम म० ४ पौष सुदी १५ तक

१||) हजारीलाल जवाहरलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

|||) फूलचन्द मूलचन्द महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

१||) नानकचन्द ठि० वं० गं० भादों सुदी १५ सं० १९८९तक

≡) उत्तमचन्द चिरजई वाले म० ६ फागुन सुदी १५ तक

३) बनारसीदास बैजनाथ महीना १२ सावन सुदी १५ सं० १९९१

१||) सीताराम ईश्वरीप्रसाद म० ६ फागुन सुदी १५ तक

|||) भगवानदास गुमाश्ते ठि० गौ० ई० महीना ६ फागुन सुदी १५

||=) छाबूलाल गुमाश्ता ठि०गौ० ई० महीना ५ माह सुदी १५ तक

|||) काशीनाथ गु० ठि० गौ० ई० महीना ६ फागुन सुदी १५

१) भूरीमल मुनीम महीना ४ पौष सुदी १५ तक

|||) वृन्दावन हलवाई महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

||) गणेशीलाल छुन्नीमल महीना २ आश्विन सु० १५ तक

१।) हरनरायन लक्ष्मीनरायन महीना ५ माह सुदी १५ तक

||=) गट्टोमल मुरारीलाल महीना ५ माह सुदी १५ तक

|||) मोतीराम घीवाले सैदगली महीना ६ फागुन सु० १५ तक

।) द्वारकादास महीना १ आश्विन सुदी १५ तक

|||) राधेश्याम दलाल महीना ३ अगहन सुदी १५ तक

।-) बाबूलाल हलवाई महीना ५ कातिक सुदी १५ तक

।) मोतीराम छातेवाले महीना ४ पौष सुदी १५ तक

।-) भोलानाथ हलवाई महीना ५ माह सुदी १५ तक

।) जुन्नामल हलवाई महीना २ कातिक सुदी १५ तक

।) भानामल हलवाई म० ४ पौष सुदी १५ तक

।-) कन्हैयालाल हलवाई म०५ माह सुदी १५ तक

=) छेदालाल महाराज ठि०गी० के० महीना १ फा०सुदी १५

३२।-)

रावतपाड़ा

२) हरप्रसाद बैजनाथ म० ४ पौष सुदी १५ तक

३) बुद्धसिंह मोहनलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१) बाबूलाल महीना ४ पोह सुदी १५ तक

३) बाबूलाल ठठेरा महीना६ फागुन सुदी १५ तक

=) चुन्नीलाल महीना १२ फागुन सुदी १५ तक

१।) बिहारीलाल गिरधारीलाल महीना १० माह सु० १५

६) बलदेवदास पीपलमंडीवाले महीना ६ फा० सु० १५

।) श्यामलाल जिमीन्दार महीना १ फागुन सुदी १५

१६॥=)

कचेरट बाजार

१॥) गोकुलचंद मत्थूमल महीना ६ फागुन सु० १५

१।) मदनमोहन जैनी महीना ५ माह सुदी १५ तक

१।) श्रीराम जगन्नाथ महीना ५ माह सुदी १५ तक

१) चुन्नीलाल फकीरचंद महीना ४ कातिक सु० १५

।।।) लछमनदास किरोड़ीमल महीना ६ फागुन सु० १५

।=) बैजनाथ गुमाश्ते महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।) हरचरनदास सूतवाले महीना ६ फागुन सु० १५ तक

१॥) भोलानाथ ऐनेवाले महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

।।।) मट्टोमल डेरेवाले महीना ६ माह सुदी १५ तक

।।।) बैजनाथ टोपीवाले महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

३) पं० अनन्तराम दांत बनाने-वाले महीना १२ भादों सु० १५ सं० १९७० तक

१॥) स्वरूपचंद लल्लामल महीना १२ फागुन सुदी १५ तक

।) वासुदेव मदनमोहन महीना १२ फागुन सुदी १५ तक

।=) छेदालाल दलाल महीना ३ मगसर सुदी १५ तक

॥।) प्यारेलाल दलाल महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

१५॥।)

किनारी बाजार

१) मुन्नालाल नानकचंद महीना ४ पौष सुदी १५ तक

१॥) कुन्नालाल बाबूलाल महीना ६ माह सुदी १५ तक

॥।) मुन्नालाल प्रकाश महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

१।) गोपीनाथ प्रकाश महीना ५ माह सुदी १५ तक

१॥) पंडित जगन्नाथ विश्वनाथ महीना ६ फागुन सुदी १५

३) गुलाबचंद पन्नालाल महीना ६ फागुन सु० १५

२॥) वासुदेव हरप्रसाद महीना १० पौष सुदी १५ तक

१॥) छोटेलाल मिट्ठनलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१॥) बलदेवदास बनारसीलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।) मुन्नालाल कुरेटिया महीना २ मगसिर सुदी १५ तक

।=) छुट्टनमल बाबूलाल महीना ५ माह सुदी १५ तक

॥।) कांद्रमल सराफ महीना ६ फागुन सुदी १५ तक

।=) हीरालाल चुन्नीचन्द म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१॥) रामचन्द्र शंकरलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

॥।) रसकीलाल भानीमल म०६ फागुन सुदी १५ तक

१) बाबू अजुध्याप्रसाद म० ८ फागुन सुदी १५ तक

१।) लछमणदास मुंदरलाल म०५ माह सुदी १५ तक

१॥) बांकेलाल बिहारीलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१।) गोवर्धनदास ब्रजनाथदास म० ५ माह सुदी १५ तक

॥।) रसकीलाल चुन्नीमल म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१॥) कन्हैयालाल गोवर्धनदास म० ६ फागुन सुदी १५ तक

१॥) शंकरलाल बंगालीमल महीना ६ फागुनसुदी १५ तक

॥=) मुन्नासराय हालचन्द म० ५ माह सुदी १५ तक

॥=) महीमल हलवाई महीना ५ माह सुदी १५ तक

॥=) पं० श्यामलाल गैंद मनष म० ५ माह सुदी १५ तक

।) पालीराम गुलाबचन्द म० ४ कातिक सुदी १५ तक

।) जमुनादास झिल्लोमल सुनार महीना ४ पौष सुदी १५ तक
।-) भगवानदास सराफ महीना ५ माह सुदी १५ तक
१।) मिट्ठनलाल गोटे वाले म० ५ माह सुदी १५ तक
१॥।) रामचन्द सुनार महीना ७ फागुन सुदी १५ तक
॥।) खैरातीलाल नत्थूमल महीना ६ फागुन सु० १५
॥।) बहादुरमल नत्थेमल महीना १२ फागुन सु० १५ तक
१॥) बुधसिंह बलदेवदास महो० १२ फागुन सुदी १५ तक

३६।≡)

मानपाड़ा ।

२) बौहरे नरायनदास म० ८ माह सुदी १५ तक
२≡) बौहरे पन्नालाल महीना ५ पोह सुदी १५ तक
॥≡) बौहरे अखैराम महीना ४॥ माह बदी १५ तक
॥।) बौहरे धर्म्मदास महीना ६ फागुन सुदी १५ तक
॥=) बौहरे रामप्रसाद महीना ५ पौष सुदी १५ तक
।-) बौहरे मूलचन्द महीना ५ माह सुदी १५ तक
॥) बौहरे ननसुखदास महीना ४ पोह सुदी १५ तक
।=) मुं०काशीनाथ महीना ३ मगसिर सुदी १५ तक
।-) श्यामलाल सुनार महीना ५ पौष सुदी १५ तक
।=) माधोराम सुनार महीना ६ फागुन सुदी १५ तक
१॥) बौहरे प्रभूलाल महीना १२ फागुन सुदी १५ तक

७॥=)

बेलनगंज ।

।) श्यामलाल सर्राफ महीना ४ पोह सुदी १५ तक
॥।) गोपालदास पसारी महीना ५ माह सुदी १५ तक
॥) ग्यासीराम तमोली म० ४ पोह सुदी १५ तक
॥=) रामलाल जमुनादास म० ५ माह सुदी १५ तक
॥=) रामलाल हलवाई महीना ५ माह सुदी १५ तक
॥) धर्मजीत बन्नीमल महीना ४ पौष सुदी १५ तक
॥=) बिशेसरदास शंकरलाल म० ५ माह सुदी १५ तक

||=) लक्खीमल मुन्नीलाल म०
५ माह सुदी १५ तक
||=) फाजीमल भगत हलवाई
म० ५ माह सुदी १५ तक
||) गणेशीलाल बजाज महीना
४ कातिक सुदी १५ तक
|||) प्रियादास विशम्भरनाथ
म० ६ पोह सुदी १५ तक
|) मूलचन्द पटवा महीना ४
सावन सु० १५ तक
१|) चौधा टाल वाला महीना
५ माह सु० १५ तक
२) अजुध्याप्रसाद रामचन्द
म० ४ पोह सु० १५
|-) बिहारीलाल खोमचे वाला
म० ५ माह सु० १५ तक
१||) सालिगराम लालाराम सु-
नार महीना ६ फागुन सु०
१५ तक
५=) बैजनाथ जुगीलाल महीना
५ माह सुदी १५ तक
५) लखमीचन्द वैद्य महीना
५ माह सुदी १५ तक
१||) छुट्टराम मिस्त्री महीना ५
माह सुदी १५ तक
|||) मक्खीराम दलाल महीना ६
फागुन सुदी १५ तक

४|) चिरञ्जीलाल चौवे दलाल
महीना ११ सावन सुदी
१५ तक
४) गुलाबराय छोटेलाल म० ६
आसौज सुदी १५ तक
सं० १९६९

३८=)

भैरों।

१|) गोकुलचन्द वंशीधर म० ५
माह सुदी १५ तक
=) तुलाराम हलवाई महीने ३
क्वार सुदी १५ तक
|) रामप्रसाद अरैराम म० ४
पोह सुदी १५ तक
२) कुञ्जीमल सुनार म० ४ पोह
सुदी १५ तक
१||) बाबूलाल पत्थरवाले म० ३
मगसिर सुदी १५ तक
|) गुरजूमल पन्नालाल म० २
माह सुदी १५ तक
=) मन्नीराम चन्द्रभान म० १
माह सुदी १५ तक

५||-)

आहगांव।

१|) हीरालाल तुलसीराम म०
५ माह सुदी १५ तक

।-) वासुदेव रघुवरदयाल म०
५ माह सुदी १५ तक

।-) कलियानदास सराफ म०
५ माह सुदी १५ तक

॥=) रामलाल छोटेलाल म० ५
माह सुदी १५ तक

=)॥ शीतलप्रसाद हलवाई म०
५ माह सुदी १५ तक

।-) बिशम्भरनाथ बजाज म०
५ माह सुदी १५ तक

।-) हरनरायन पंसारी म० ५
माह सुदी १५ तक

।) बहादुरमल नाज वाले म०
४ पौष सुदी १५ तक

।-) केदारनाथ परचूनिया म०
५ माह सुदी १५ तक

।-) जमुनादास बजाज महीना
५ माह सुदी १५ तक

=)॥ परसादीलाल पंसारी म०
५ माह सुदी १५

-)। चतुरभुज हलवाई महीना ५
माह सुदी १५ तक

=) बाबूलाल सूरजमल महीना
६ फागुन सु० १५

।-) बलदेवप्रसाद हलवाई म-
हीना ५ माह सु० १५

।-) गोपीचंद रामसरूप महीना
५ माह सु० १५

-)॥ रामप्रसाद पटवा महीना ३
मगसर सुदी १५ तक

=) बगालीमल हलवाई महीना
२ कातिक सुदी १५ तक

=)॥ श्यामलाल हलवाई महीना
५ माह सुदी १५ तक

=) हरविलास हलवाई महीना
४ मगसर सुदी १५

=) सुखलाल सुनार महीना ३
मगसर सुदी १५

=)॥ राजाराम कल्लूमल महीना
५ माह सुदी १५ तक

।-) भगवानदास हलवाई म-
हीना ५ माह सुदी १५ तक

=)॥ रामप्रसाद हलवाई महीना
५ माह सुदी १५ तक

६॥)।

नाई की मंडी

॥=) श्रीराम चिरंजीलाल महीना
५ माह सुदी १५ तक

।=)। बाबू मुरलीधर महीना ५
मगसर सुदी १५ तक

।-) नरायनदास सूतवाले म-
हीना ५ माह सुदी १५ तक

।) छिगामल राधेलाल महीना
४ पौष सुदी १५ तक

॥=) कल्लूमल सराफ महीना ५
माह सुदी १५ तक

॥=) नत्थीमल रामदयाल म० ५ माह सुदी १५ तक
॥=) बाबूलाल केशवदेव म० ५ माह सुदी १५ तक
॥=) केदारनाथ म० ५ माह सुदी १५ तक
१=)॥। देवीदास मुनीम महीना ५ माह सुदी १५ तक
॥=) लछमणदास महीना ५ माह सुदी १५ तक
=)॥ छंगामल तमोली महीना ५ माह सुदी १५ तक
॥=) प्यारेलाल सराफ म० ५ माह सुदी १५
२॥) मानकचन्द हीरालाल म० ५ माह सुदी १५ तक
॥=) बिहारीलाल श्यामलाल म० ५ माह सुदी १५ तक
।-) छीतरमल सुखदेव म० ५ माह सुदी १५ तक
=)॥ प्रयागदास सुनार म० ५ माह सुदी १५ तक
।) शम्भूनाथ म० ४ पौष सुदी १५ तक
=) छीतरमल पंसारी म० ४ माह सुदी १५ तक
।-) तुलसीराम सराफ म० ५ माह सुदी १५
=) ताराचंद म० ४ पौष सुदी १५ तक
।-) चिम्मनलाल सूरजमल म० ५ माह सुदी १५ तक
।) मगला कुम्हार म० ४ माह सुदी १५ तक
=) सूरजप्रसाद म० ४ मगसर सुदी १५ तक
॥-) राजाराम ठाकुर महीना ९ मगसर सुदी १५ तक
।) अन्नेमल म० ८ पौष सुदी १५ तक

१२॥-)

ताजगंज।

॥।) बख्तनमल राधेलाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक
॥।) बहादुरमल प्रियादास म० फागुन सुदी १५ तक
।=) लछमनदयाल रामदयाल म० ६ फागुन सुदी १५ तक
॥) हरनारायन मोहनदास म० ४ पौष सुदी १५ तक
१॥) केहरीमल ठेकेदार म० ६ फागुन सुदी १५ तक
१॥) प्रियादास नरायनदास म० ६ फागुन सुदी १५ तक

।≈)	ठाकुरदास महीना ६ फागुन सुदी १५ तक
।।।)	लल्लामल कुंआमल ६ फागुन सुदी १५ तक
–)	भोलानाथ चुखरूमल म० १ फा० सु० १५ तक
–)	माधोलाल नत्थूमल म० १ फा० सु० १५ तक
=)	रामगुलाम नरोत्तमदास म०१ फा० सु० १५ तक

६।।।)

आमदनी गोलखों की इस भांति आई:—

२।।=)।।	सीताराम ईश्वरीप्रसाद
।।।)	छल्लूमल रामप्रसाद
।।=)।	चुन्नीलाल दीपचंद
।।।–)।।	केदारनाथ हलवाई
१७)।।	लल्लामल हरविलास
५।≡)।।	लक्ष्मीनरायन गर्ग वकील
२≡)।।।	पातीराम हलवाई
१।≡)।।।	बाबूलाल हलवाई
२≡)।।।	बंसीधर गंगाप्रसाद
५)।।	टीकाराम हलवाई
।।≡)।।	चुन्नीमल काशीनाथ
।।।≡)	सीताराम छगनमल
१२।=)	फौजीलाल गंगाधर
।–)।।।	चुन्नीलाल ब्रजलाल
२।)	लीलधर हीरालाल
५)	विश्वम्भरनाथ केदारनाथ
।–)।।।	हरीलामल नारायणदास
।=)।	सीताराम हलवाई
६।=)।।।	जानकीदास गोविन्दराम
१–)।	छोटेलाल पन्नालाल
।≡)।।।	बलदेवदास
।–)	जानकीदास काशीनाथ
४।≡)	गोपीनाथ राधेलाल
।।)	राजधर चुन्नी
≡)।	नन्हेमल मूलचंद
१=)।	श्रीकृष्ण नंदकिशोर

७७।–)।।

गौओं के न्यार के लिये इस भांति आये :—

।।)	लालू द्वारकादास
५)	नंदकिशोर आनन्दीलाल
१)	छोटेलाल नोंनकी मंडी वाले
१)	सांगीलाल परसादीलाल
२)	मुन्शी रामस्वरूप
।।।)	रामचन्द से न्यार के लिये मुतफ़र्रिक़ में आये
।)	बाबूलाल की मा ने दिये
१)	भगवतस्वरूप
७)	कुंआमल छीतरमल
८)	भगवतीप्रसाद
।)	लालू कपूरचन्द

१०१) चुन्नीलाल ब्रजलाल
११)। हरनरायन फेरे वाले
३०) जगन्नाथ गोपालदास
१) ठाकुर मोहन सिंह
।) बाबू अम्बिका प्रसाद
॥) बाबू श्यामसुन्दर
।) कन्हैयालाल कचहरी घाट
१) नरायनप्रसाद
-) मुकन्दीमल
१) चुन्नीलाल छत वाले
१) सावित्री का
।)। छुज्जूराम मिस्तरी
।) बाबू बेनीप्रसाद
१) पन्नालाल कुलश्रेष्ठ
=) अमीरचन्द मोहरिर
माईथान वाले
-) नंदराम
१२।) थानसिंह
=) लीलाधर ठेकेदार
-) कन्हैयालाल कायस्थ
-) गंगामल चुन्नीमल
=) मंगलसेन मोहनलाल
-) प्रभुदयाल
।) मक्खनलाल दौलतराम
-) कालिगराम चौपीटोला
।) रामगुलाम
।) शारदाप्रसाद
।) विशन नरायन

=) नंदकिशोर चक्की पाट वाले
॥) मुरलीधर गोपीसिंह
॥।=) नंदकिशोर ठेकेदार
=) बहादुरमल धूरियागंज वाले
=)॥ नरायनदास ठेकेदार
=) चिरञ्जीलाल ठेकेदार
=) बिहारीलाल गिरवरलाल
=) मुन्नालाल महाजन
-) मुक्का वल्द कयाली
=) सुन्दरबिहारीलाल पीपल-
मण्डी वाले
=) विशम्भरनाथ
।) चौधरी की मारफत आये
गौशाला में

---

१९२)

गौओं के साथ दक्षिणा के इस
भांति आये :—

१) वंशीधर छापेखाने वाले
४) हजारीलाल जवाहरलाल
जौहरी बाजार
॥) देवीदास सुनार गोकुलपुरा वाले
१) गंगाराम ब्राह्मण
२) मुन्नालाल फूलचन्द
१) मुहम्मद वयाली रोशन
मुहल्ला

८॥)

भूरसी दक्षिणा के इस भांति आये :—

२१) गयाप्रसाद बिहारीलाल
२) कुंजीमल
२) गोविन्दराम हरप्रसाद
५) श्यामलाल छेदालाल
५) अन्तीमल कन्हैयालाल
११) दुलीचन्द दीपचन्द
५) गंगाधर रामचंद
७) तुईराम जगन्नाथ
२५।।।)।। गोपालदास कन्हैयालाल
५) हरनरायन लक्ष्मीनरायन
१०) कल्लूसिंह रामचंद भार्गव बेलनगंज वाले
२१) अजुध्याप्रसाद बर्फ वाले
७) खैरातीलाल नत्थूमल
२५) गणेशीलाल हरबिलास
७) नेकराम बयाने वाले

———

१५८।।।)।।

गोपाष्टमी के मेले के पूजन में इस भांति आये :—

५) मूलचन्द
१) बाबा बल्केश्वर वाले पुजारी ने
५) रोशनलाल
१) गयाप्रसाद बिहारीलाल जी
१) श्यामलाल जी सराफ
१) बालमुकुन्द जी
१५) घासीराम जी
१) मौलवी साहब
१) अमरनाथ जी
४) चिरञ्जीलाल जी
२) बैजनाथ जी
५) बाबू रामदास जी
१) भगवानदास जी
१) मूलचन्द जी
५) लीलाधर तुलसीराम जी
२) श्रीराम जी
१) छंगामल मूलचन्द जी
१) पीरूमल राय राधारमन जी
१) भगवानदास जी गोकुलपुरा वाले
१) मूलचन्द जी
।।) नरायनदास जी
१) कालूराम सागर
।) राधामोहन जी
१) नंदकिशोर जी
१) सूरजनरायन जी
१) गौरीदत्त जी
१) दुर्गाप्रसाद जी
१) थानसिंह जी
२) नन्नोमल जी
१) छीतरमल जी
।) दुर्गाप्रसाद जी
१) वंशीधर जी

१॥)। खेरीज में आये
॥।-) गोलक में निकले
२) जगन्नाथ रौनड़िया ठि० तेज-
पाल जमनादास

७०।-)।

पिछे की उगाही में आये
५१) ठाकुरदास रामसहाय जी
५१) जगन्नाथ गयाप्रसाद जी
३११) मथुरादास पदमचंद जी
२५) पंडित कबीर सिंह वकील
२१) जानकीदास गोविंदराम जी
३१) पातीराम प्रसादीलाल जी
२५) चुन्नीलाल बृजमल जी
३१) श्यामलाल छिम्मनलाल जी
२१) मुरलाल बुधसेन जी
२१) चिरंजीलाल बंशीधर जी
२१) जगतप्रसाद विशनलाल जी
५१) पीतामल मूलचन्द जी
३१) श्यामलाल छिदीचन्द जी
२१) जानकीदास काशीनाथ जी
३५) भगवानदास कृपाराम जी
७) गोपीनाथ वकील
३१) सांवलिया माधोलाल जी
३१) हेमचन्द मथुरादास जी
५१) मथुराप्रसाद रामचन्द जी
६०) गंगाराम मुन्नीलाल जी
३१) बलदेव रामस्वरूप जी
३१) चुन्नीलाल द्वारिकादास जी
११) नारायनदास कालियानदास जी
५१) गेंदामल रोशनलाल जी

१०५७)

इस भांति न्यार दाना गौओं
के लिये भेट में आया :—

गुड़ ५) रु० ला० जवाहरलाल ने दिया
गुड़ ४) रु० ला० द्वारकादास ने दिया
लड्डू १) रु० राधा सलकेश्वर वाले
ने दिये
फूली ३१ ला० जयनारायण भगत ने दी
घास १९८५ मन ला० मूलचन्द ने दी
चोकर ॥ऽ रघुवीरसिंह गणेशीलाल
ने दी
भुस ३॥ऽ मन ला० हजारीलाल
जवाहरलाल ने दिया
भुस २५ऽ मन ला० तेजकरन जी ने
दिया
भुस १ऽ मन ला० छोटेलाल ने दिया
भुस २५ऽ मन चौधरी ताराचन्द ने
दिया
भुस ६ऽ मन ला० वृन्दावन ने दिया
भुस २७॥ऽ८ उगाही में भुस वालों
ने दिया।

गौशाला में नौकर इस भांति
मौजूद हैं :—

दफ्तर बेगमगंज

कांशीलाल मुनीम
बिहारीलाल मुनीम

ब्रजमोहन ब्राह्मण उगाही करने पर
रामप्रसाद उगाही करने पर
नन्दकिशोर ,, ,,

गौशाला रोजा जाफरखां

धोधा चौधरी गौशाला में काम देखने पर

रामसिंह भोलासिंह नरायन श्रीवराज सरवन	गौओं की चाकरी करने पर
सुन्दरपाल जालिम	सानी इत्यादि करने वाले

ब्रजलाल गाड़ीवान
हुक्मा ,,
बलराम ,,

हमीदा ग्वारिया हुकमी लड़का हीरा लड़का सुंदरा लड़का	यह गाय चराने पर हैं

बारदाना गौशाला इस भांति मौजूद है:—

दफतर बेलनगंज

१ फर्श दरी का
२ पल्ली
२ काठ की सन्दूकें
१ गंगासागर
८ घन्टी कटोरा
 ५ ३
२ दवात पीतल
१ आलूदानी लोहे की
१ दवात शीशे की
१ दिवालगीरी लैम्प
१ अरगन
१ चपरास
१ बोतल तेल की
१ डोल लोहे का
१ गोलख लोहे की
१ कैशबक्स रोकड़ रखने का
२ ताले लोहे के

गौशाला रोजा जाफरखां

४ गाड़ी सामान ढोने की
३ रहलू मामूली रहलू टपदार
 २ १
१ गरीली
१ मचेड़ी
१ पुर
१ बरत
१ ममा
२ धोना
१ दससेरा
१ पन्सेरी
१ सेर
१ अधसेरा
१ तक की डन्डी
१ तक लकड़ी की मय पलों के
१ तराजू लोहे की
१ टोकनी पीतल की

४ घन्टी लोटा
  २   २
२ गड़सा
१ आरी
१ बसूला
१ खुरपा
२ तसले
४ डोल लोहे के
२ डोल बगैर कन्नी के
६ टप
६ ताले लोहे के
१ ताला पीतल का
१ टंकी दूध बांटने की
४ खाट
१ मेज
२ कुरसी
३ मूढ़े लोहे के
४ खुर्रे
२ कन्नी बसूली
  १   १
३ लालटेन हाथ की
३ लालटेन लट्टे की
१ फीता नापने का
१ कुदारी
१ तखत लकड़ी का
१ हल खेत जोतने का
१ सन्सी
४ भूल कपड़े की
११ भूल टाट की
१ घड़ी
३ जंज़ीर लोहे की
१ साकर मोटी
१ सायनबोर्ड
२ सदूक
४ बोतल
२ पाखरी भुस भरने की
२ चक्की दाना दलने की
१ फाटक लोहे का
१ फाटक पत्तियों का
१ फाटक बांस का
२ फावड़े पुराने
२ तिपाई के तखते
१ नसैनी
१ सिल लोढ़ी
१ पट्टा काठ का
१० तार के लच्छे

माल स्टाक में इस भांति मौजूद है।

भुस १९॥/८१
चना २/८१
खल १॥/८॥।
गुड़—॥।/८८॥=

जमा खर्च श्री गौशाला आगरा का मिती आसोज सुदी ११ सं० १९७० से मिती चैत बदी १५ सं० १९७० तक का ।

६१६१)॥ श्री आगरा गौशाला के जमा

४४।)॥ श्री रोकड़ बाकी रहे

२६१) ला० बलदेवदास प्रभुदयाल के यहां जमा रहे

३११) अमृतसर बैंक में जमा रहे

६१६१)॥

४०३२।-)॥ आमदनी)॥ सैकड़े की बिक्री पर इस भांति आई :—

ब्यौरा पीछे लिखा है:—

बेलनगंज २८०१।॥) कचहरीघाट ९३॥।≡)

फिलकगंज ७५।-)। शंकरगंज ७७।≡)॥

नयागंज १५४।-) रावतपाड़ा १५५)॥।

अफीम का ठेला ७४।≡)॥।

२५४॥≡)॥। आमदनी मासिक चन्दे की इस भांति आई:—

ब्यौरा पीछे लिखा है:—

मसजिदतला ३४।-)॥ जौहरीबाजार ३२।-)

५६७४।≡)। खर्च इस भांति हुए:—

२६३२≡) ज्वार खरीदी

६६७≡)॥। दाना खरीदा

२३३।-)। खल खरीदी

५८॥।-)॥ गुड़ खरीदा

२४७।)। बिनौले खरीदे

६८८॥≡)। नौकरों की तनखाह में खर्च हुए

२०९)॥। मदत में खर्च हुए

८७।≡)। पारदाना खरीदा

४०॥) गाड़ियों में खर्च हुए

१३५≡)। खेरीज में खर्च हुए

९॥) छपाई में खर्च हुए

२) गलत रेजगारी के बट्टे के दिये

१३=)। गोपाष्टमी के मेले में खर्च हुए

५) तेल खरीदा

९।) नोन खरीदा

६३५॥)॥ चोकर खरीदी

५६७४।≡)।

रावतपाड़ा कसेरट

१६॥≡) १५॥।)

किनारी बाजार मानपाड़ा

३६।≡) ९॥=)

बेलनगंज भैरों शाहगंज

७८≡) ५॥-) ६॥)।

नाई की मंडी ताजगंज

१२॥-) ६॥।)

७७।-)॥ आमदनी गोलकों की आई

१९२) गौओं के न्यार के लिये

९॥) गौओं के साथ दक्षिणा में आये

१५८॥।)। विवाह की भूरसी दक्षिणा में आये

१०४७) उगाही चिट्ठे की आई

११॥≡)॥ गौ घर्षवाई के आये

७०।-)। गोपाष्टमी के मेले के पूजन में आये

ब्यौरा पीछे लिखा है।

३०।=)॥ आमदनी बगीचे की आई

८॥।-)। गाड़ी के किराये के आये

११४।≡)। कंडों की बिक्री के आये

१८५।=)॥। दूध की बिक्री के आये

६८०९=)

१।)॥। चिट्ठे में फर्क रहा

६८१०।=)॥।

४४५) ला० बलदेवदास प्रभुदयाल के नाम

३११) ला० तेजपाल जमुनादयाल के नाम

३११) अमृतसर बैंक के नाम

६७४१।≡)।

६८॥≡)॥ श्री रोकड़ बाकी रहे

अन्वयः— इति विदितमहर्द्धिं धर्मसाम्राज्यं जिन अवनतिभाजः नाकभाजा



कुरीति निवारण

जिस को अग्र वंशीय वैश्य सुरीति प्रचारिणी सभा आ
गरा की प्रार्थनानुसार स्वामी गङ्गलदेव सन्यासी ने सर्व
साधारण के उपकारार्थ दोहा चौपाई आदि छन्दों में
निर्माण किया, और उक्त सभा की आज्ञानुसार दामो
दरदास मंत्री अग्र वंशीय वैश्य सुरीति प्रचारिणी सभा
आगरा ने छपाकर प्रकाशित किया

तीसरीबार १००० प्रति) सन १८९७ ई० (मूल्य ~)
मथुरा प्रेस आगरा में लाला छन्नोमल कागज़ी कसेरट
बाज़ार आगरा के प्रबन्ध से छापा गया

यह पुस्तक उक्त सभा के सभासद लाला बांके ला
लजी बज़ाज़ मसजिद के नीचे व लाला दामोदरदास जी
हकीम जौहरी बाज़ार आगरा के पास मिलेगी ॥ * ॥

भूमिका

श्री परमात्मा को अनेकानेक

अग्रवंशीय वैश्य सुरीति प्रचारिणी सभा आगरा की प्रेरणा से मैंने यह ग्रन्थ बनाया है इसमें मत मतान्तरों का झगड़ा किंचित मात्र भी नहीं है किन्तु केवल विवाह सम्बंधी (वेश्या नृत्यादि) कुरीतियों से हानि तथा सभा की उन्नति विषय में यथा बुद्धि लिखा है। यद्यपि अग्रवंश से मेरा (स्वजाति आदि) सम्बन्ध किसी प्रकार का भी नहीं है किन्तु परोपकारार्थ अपना अमूल्य समय इसमें लगाया है अस्तु सज्जनों को उचित है कि इस पुस्तक को पढ़ स्वजाति में से कुरीतियों को निकाल एकतादि सुरीतियों का प्रचार कर मेरा परिश्रम सफल करें। यह भी ध्यान रहे कि साव काशाभाव से नृत्यादि की हानियां विस्तार से नहीं लिखीं और यह पुस्तक केवल अग्रवंशीय वैश्यों ही की न समझिये किंतु मनुष्य मात्र इससे लाभ उठा सक्ते हैं॥

ह० मङ्गल देव सन्यासी

१

श्री गणेशाय नमः

दोहा

परम ब्रह्म परमात्मन निराधार आधार
सदानन्द सुख धाम तुम सब दुख मेटनहार

चौपाई

तुम जगदीश्वर अखिल विधाना। दुख हर सुमति सर्व सुख दाना
हम बालक तव तुम पितु माता। विपति हरो प्रभु जन के त्राता
शुभ विद्या जब कीन्ह पयाना। कुमति बढ़ी विज्ञान नशाना
पड़ी अविद्या गल में फांसी। अति दुख पावें भारत बासी
अग्रबंश कछु अधिक सताये। बिन विचार अति संकट पाये
हानि लाभ की चिन्त भुलानी। मित्र शत्रु की सार न जानी
बहुत कुरीति चली जग माहीं। सुख को लेश मात्र कहुं नाहीं
भूपति धनपति सब पाछे ताने। निर्धन की गति कौन बखाने
पराधीन हम अस दुख पाये। जस नट मर्कट नचत नचाये
अधिक काल पाये दुख नाना। अति दुख लखि अब हिया डराना
चहुं दिशि दुःख अग्नि ने जारा। प्रभु तुम बिन अब कौन हमारा
दिव्य ज्ञान हम सब को दीजे। अंधकार हमरो हर लीजे *
निज उन्नति का प्रेम जगाओ। अशुभ रीति से दूर हटाओ
ऐसी शुभ गति देवो स्वामी। सब सज्जन हों सभानुगामी
तजि आलस सब फूट नसावें। तजें कुरीति सुरीति चलावें
प्रेम परस्पर अधिक बढ़ावें। स्वार्थ बिना हित करहिं करावें
हम अति दीन शरण हरि तेरी। संकट हरण करो मत देरी
कृपासिन्धु अब शरण निहारी। भारत आरत लेउ उबारी

दोहा

सुनो अग्रकुल चित देजो कुछ कहिवो मोर
क्या थे क्या अब होगये लखो आपनी ओर

चौपाई

सुखवा जग विख्यात तिहारे। महा प्रताप दिव्य गुण धारे।
उभय लोक सुख भोगन हारे। अब यहु दुखी विपति के मारे।
भरत खण्ड रत्नन की खानी। सुख सम्पति नाहिं जाय
निज कुरीति बश सभी नशानी। सब सुख खोय खाक अब छानी
विद्या निधि धनि बुद्धि निधाना। महा प्रचंड तेज बलवाना
पृथ्वी आदि दान दिये भारी। उनकी सन्तति फिरत दुखारी

दोहा

विपता को कारण सुनो मुख्य अविद्या एक
जाकी शाखा विष भरी चलीं कुरीति अनेक
यद्यपि निन्दित रीति को जानत सभी सुजान
तौ भी दुष्ट कुरीति ये किञ्चित करूं बखान

चौपाई

दुष्ट कुरीति चलीं जब ही से। प्रतिदिन विपति बढ़ी तब ही से
वेश्या नृत्य भांड़ फुलवारी। आतिश बाज़ी कीन्ह खुआरी
अति दुखदायक रीति अनेका। प्रबल प्रचंड एक तें एका
इन कुरीति तुम को दुख दीना। सन्तति धन सर्बस हर लीना

अथ बाल बिवाह हानि

बाल बिवाह विपति बिस्तारी। कोटिन अबला कीन्ह दुखारी
बालक मृत्यु करत खुआरी। अल्प आयु कीने नर नारी

याही ने सब काज बिगारे। राजन से किंकर कर डारे
बल पौरुष सब ही हर लीना। पुरुषन को नारी सम कीना
ब्रह्मचर्य्य मर्य्याद बिगोई। विद्या सुमति सभ्यता खोई
बुद्धि धीर्य्य साहस से हीने। विपत बीरता कायर कीने
निर्बलता निज रूप दिखाया। पुरुषारथ का मूल गमाया
अति दुर्बल नर देत दिखाई। घुटने पकड़ उठत तरुणाई
चिन्ताज्वाल सभी घर जारे। सब के पीत रंग कर डारे
शोकसर्प विष सब तन छायो। कोउ न यातें बचन बचायो
प्रति घर आलसकीन बसेरो। शुभ उद्यम को भयो निबेरो
ज्योति हीन बहिरे कर दीने। बाल बिवाह यही फल लीने

अथ वेश्या नृत्य से हानि

दोहा

व्याह समय सौभाग्य को रांड़ नचावें भूल
मंगल में असगुन करें पड़ी बुद्धि पै धूल

चौपाई

जब से वेश्या नृत्य चलायो। सन्तति को विध्वंस करायो
राज काज धन धाम नसाये। कर्म धर्म सब धूर मिलाये
यह कुरीति जबसे अधिकाई। पिता पुत्र मर्य्याद गमाई
नाच रीति जग माहिं चलाई। सन्तति हित विषबेलि लगाई

अथ वेश्या से अनेक हत्या

जगत माहिं जितनी हैं नारी। पुरुष चित्त सब हरण हारी
वेश्या सहस गुणी अधिकाई। इनमें है अति चंचलताई

दोहा

स्वाभाविक अबला चपल करत चित्त की हानि

सहस गुणी वेश्या अधिक चंचलता की खानि
रंडिन की विद्या महा कोटिन छल इन माहिं
यह इन को व्यापार है प्रतिदिन लूटें खाहिं
इनकी माया प्रबल अति भूले महा प्रवीन
मूरख की गति कौन है तुर्त होय लव लीन

चौपाई

होली व्याह बरात बसेरे। नूतन पक्षी जुरें घनेरे
अधिक दाउ इनको नहं लागे। तरुणपुत्र फँसि जायं अभागे
तान गान बहु जाल बिछावें। रूप बनाय चुगा दिखलावें
तुम्हरे सुत पक्षी फंसि जावें। कोटि यतन छूटन नहिं पावें
तरुण पुरुष को जब कहुं पावें। लपक झपक दूनी दिखलावें
नयन फांस उरझावत नीके। अधिक फंसत हैं पूत धनी के
नूतन चटक मटक दर्शावें। कोटि यत्न कर चित्त चुरावें
मधुर बचन गुरुमंत्र सुनावें। छल बल कर निजशिष्य बनावें
इनके शिष्य न होहिं किसी के। रहत जन्म भर दास उन्हीं के
कुल कुटुम्ब सब लागन फीके। ढिंग नहिं आवें निज नारी के
एक बार जो दर्शन पावें। गुरु ईश्वर से ध्यान हटावें
मात पिता के बचन न भावें। बसि कुसंग दुष्कर्म कमावें
पुरखन की सम्पत्ति नसावें। धन न रहे सिर धुनि पछितावें
द्रव्य हेत निज मात सतावें। नारिन के भूषण ले जावें
तृष्णा के बश जुआ मचावें। निज घर पर का माल चुरावें
राज्य माहिं जब पकड़े जावें। निज पुरखन की नाक कटावें
नारि पुरुष में खटपट होवे। प्रीति रीति घर की सब खोवे
कुल मर्य्यादा देयं मिटाई। परमारथ की कहा चलाई

अथ वेश्या से बालहत्या

दोहा

धर्म कर्म धन भक्षिणी सन्तति खावन हार
वेश्या है अति राक्षसी बुधजन कहत पुकार

चौपाई

पृथक नारि डायन कहुं नाहीं। यही प्रबल डायन जग माहीं
जे वश परहैं इस ठगनी के। काढ़ करेजा खावहिं नीके
ये डायन लड़कन को खावें। धनपति की चटनी कर जावें
नव कुमार सब इनके खाजा। इनतें बचे न रैयत राजा

दोहा

नव कुमार धन युक्त सठ जो कबहूं मिल जाय
खीर खांड़ मानो मिली झट ही लेवें खाय

चौपाई

देखत ही घायल कर डारें। दृष्टि मात्र से प्राण निकारें
प्राण जाय उनम कर जानो। कोटि मृत्यु से याहि पिछानो
सर्प डसे जग में बच जावें। इनके मारे जन्म गमावें
शूकर आदि योनि में जावें। कोटिन जन्म महा दुख पावें
सर्पन के मुख में विष रहहीं। गरल रूप वेश्या तन कहहीं
सर्प डसे तिनके ढिंग आवे। इनको विष देखन चढ़ जावे
है प्रत्येक अंग विष खानी। जिहिं लखि मरें चतुर अज्ञानी
रोम रोम विष पूरित जानो। नखसिख विषका सिंधु पिछानो
एकहु अंग दृष्टि जो आवे। तुरतहिं विष तन माहिं समावे
जो कहुं हंसि के बचन सुनावें। ज्ञान बुद्धि सब सुधि बिसरावें
कविजन कहत मधुरता नीकी। सो अति विषयुत बैरिन जी की

वेश्या बचन मधुर मत जानो। विष को सार ताहि पहिचानो
अग्नि बान सम नयन दुगारे। नजत नाहिं विन जान निकारे
अग्निवाण निष्फल कहुंहोई। नयन बाण से बचे न कोई
करे क्षोभ चित में सबहीके। बचे वीर कोइ पूत सती के
चन्दनबन सम शुभकुलभारी। वेश्या ताहि जलावन वारी
परम शत्रु रोगन की क्यारी। धन छिनाय भट करत भिखारी
विद्या सुमति नशावन हारी। तीनों ताप तपावन भारी
सत्य शील सन्तोषनशावें। धर्म धैर्य्य शुभ शांति गमावें
चोरी ठगी जुआ खिलवावें। बड़े बड़े पातक करवावें

दोहा

जो इनके ढिंग आवहीं भट मोहित कर देयं
मीठे बचन सुनाय कें दृढ़ चेला कर लेयं

चौपाई

प्रेम पियाला प्रथम पिलावें। प्रीति सहितनिजभोज्यखिलावें
नर्क स्वर्ग को झूठ बनावें। सदाचार को कष्ट छुड़ावें।
मद्य मांस की ग्लानि मिटावें। निर्भय पद उपदेश सुनावें
भोगनमाहिं योग सधवावें। विधिवत नवधा भक्ति करावें

अथ नवधा भक्ति

श्रवणम् (१)

जब वेश्या इनको धुनकारें। कामातुर कटु बचन सँहारें
श्रवण करें सौभाग्य बिचारें। प्रथम अंग भक्ती का धारें

कीर्त्तनम् (२)

करें कीर्त्तन सन्मुख भारी। तुमहीं मेरी प्राण पियारी

स्मरणम् (३)

स्मरण भक्ति में दृढ़ता पूरी। घर के काज होहिं सब धूरी
ध्यान माहिं सब दिवस बितावें। सांझ होत जी में सुख पावें
क्षणभर बिना ध्यान नहिं रोवें। हो वियोग जब तक अति रोवें

पादसेवनम् (४)

जो कहुं रूसे प्राण पियारी। महा प्रलय सम होत खुआरी
पाद सेवनम् होवत नीके। चरण पलोटन गुरु पत्नी के

अर्चनम् (५)

अर्चन माहिं अधिक मन लावें। सुन्दर भूषण बस्त्र बनावें
अधिक दक्षिणा लेकर जावें। करि अर्चन गुरु पूज्य मनावें

बन्दनम् (६)

दोहा

करत बन्दना विनय युत बार बार कर जोर
क्षमा करो अपराध यह विनय सुनो अब मोर
और भूल नहिं होयगी करिहों सोच बिचार
सभी काज अब होयंगे तुम आज्ञा अनुसार

दास्यम् (७)

चौपाई

दास भाव मन में नित राखें। प्रति उत्तर कबहूं नहिं भाखें
आज्ञा में सब जन्म बितावें। इष्ट देव कहुं रूठ न जावें
कहत नित्य में दास तिहारो। तुमरी झूठन खावन हारो
मोहि दास को नाहिं बिसारो। जैसे बने करो निस्तारो

सख्यम् (८)

प्रेम सिंधु जब नाहिं समावें। लोक लाज कुल कान डुबावें
सखा भाव तब अति बिस्तारें। स्वांग तमाशे संग सिधारें

आत्म निवेदनम् (९)

जुआ खेल चोरी कर लावें। अथवा धन उधार कहुं पावें
घर नहिं देयं आप नहिं खावें। इष्ट देव की भेट चढ़ावें

दोहा

पीकदान लेकर चलें नंगे पैरों जायं
तदपि संग नहिं छोड़हीं जूते ठोकर खायं
रंडी के टुकड़े भखें भीख न देवै कोय
पड़े रहें दरबार में आत्म निवेदन होय
इनके शिष दृढ़ भक्त हैं तन मन देयं गमाय
नवधा भक्ती साधते प्रीति सहित मन लाय
नवधा भक्ति कराय के योगी देयं बनाय
योग सधावें शिष्य को सहज मुक्ति हो जाय

अथ वेश्या सम्बधी योगाभ्यास

चौपाई

घर बिन बानप्रस्थ कहावें। द्रव्य छिनाय बिरक्त बनावें
मात पिता को नेह छुड़ावें। गुरु समीप रहि घर नाहिं जावें
इन्द्रिय शिथिल करें तत्काला। रोगन की पहिरावें माला
निर्बलता बश दण्ड सँभारें। गुरु बच सहें क्षमा मन धारें
भर के पेट मिले नहिं भिक्षा। अन्न बस्त्र बिन सहें तितिक्षा
फटे पुराने बसन उढ़ावें। जिन से अंग ढकन नाहिं पावें
रंडी सिर में जूत लगावें। सिर के बाल रहन नाहिं पावें
जूते से जब मूंड़ मुंड़ाये। फिर बाबा जी बने बनाये

दोहा

स्वांस रोग में प्रति घड़ी करते प्राणायाम

भये नपुंसक रोग में मानों जीत्यो काम ॥

चौपाई

मरघट माहिं परम पद पावें । जहां गये फिर लौट न आवें
यह विधि वेश्या ऋषी बनावें । निज शिष्यन को योग सधावें
शृंगी ऋषि वेश्या हरि लीने । लाखन वीर धूरि कर दीने ॥
तुम्हरे सुत अत्यन्त अनारी । इनहिं जीतिबो कितनो भारी॥

वेश्या से अबलाओं पर अन्याय अर्थात् स्त्री हत्या

दोहा

परम हानि इक और है सोभी सुनिये मित्र।
घरकी अबला बिपति में भई दुःखको चित्र।
जो अबला शुभ कुलवती सदा श्रेष्ठ आचार।
तिनहिं वस्त्र भोजन नहीं भोगत कष्ट अपार।
जो पति तजि वेश्या वनीं धर्म लाज कुल खोय
ते जगमें गुरु सम पुजें धर्म वृद्धि किमि होय।

चौपाई

जो अबला अर्द्धांग कहावें । पति व्रता जगमें दुख पावें ॥
कहुं वस्त्र भूषण नहिं होवें । कितनी अन्न बिना नित रोवें
जिनके पति सठ ढिंग नहिं आवें। ते संतति बिन अति पछितावें।
शोक माहिं निज देह सुखावें। रंडिन को सब दोष बतावें ॥
पराधीन निज मन सन्तोषें । पुरुष तथा रंडिन को कोसें।
कात पीस निज पुत्रन पालें। रूखा सूखा निज मुखमें डालें।
रहने को नाहिं ठौर ठिकाना। नारिन दुख नाहिं जात बखाना।
मरण हेत बिषहू नाहिं पावें । हाय हाय कर जन्म बितावें।

कुल वन्ती अति कष्ट उठावें । वेश्या जगमें बहु सुख पावें।
तुमरे धनसे मौज उड़ावें । भूषण बसन भुवन बन वावें।

दोहा

वेश्या लेवें द्रव्य बहु किंचित हाथ नचाय
पति व्रता भूखी मरें यह तुम्हरो अन्याय
सो सो मुद्रा नाचमें देय नरक के हेत ॥
निज कुलमें अबला दुखी तिनहिं न कौड़ी देत
ऐसो क्या गुण रंडुमें कुछ तो देउ बताय ॥
शिर चूतड़ मद कायके द्रव्य लूट लेजाय।
वेश्या धनकी मीत है क्यों तुम रहे भुलाय।
धनबिन बात न पूछहीं गाली देत सुनाय।
जिनके वश धन धाम सुख संतति धर्म नशात
ते मति दिन गुरुवत पुजें श्रेष्ठ नारि दुखपात
शास्त्र विहित अर्द्धांगिना रहत सदा आधीन
आज्ञा माने भय करें गृह कारज लव लीन।
पति सेवा अति धर्म रति रहें दुःख में साथ।
तिसको यह विपरीत फल भोगें बिपति अनाथ
नारि सदा जीमें भुनें शोक अग्नि भड़ काय।
सब जग को जल तो लखें विना प्रेम पति पाय
नारि नित्य मृत्यू चहैं बिना पाय सनमान।
मरघट सम घर देखहीं जीवन नरक समान
जो अबला अति धर्म दृढ़ संकट सहे न जाय
गिरें कूप के विष भखें देवें प्राण गमाय ॥
जिन को मन निज धर्ममें अति दृढ़तर नहिं होय

तिनकी गति सुनि लीजिये भाग सके नहिं खोर्

चौपाई

धर्म माहिं अति संकट पावें । अन्न वस्त्र बिन दुःख उठावें।
तुम बिन शरण कौन को लेवें। तुम्हरी कृपा धर्म तजि देवें॥
पति बिन धीरज कौन धरावै। अन्तस को दुख कौन मिटावै
अति दुख पाय धर्म निज खोवें। तीनों कुल की लाज डुबोवें॥
पुरुष कभी सत्संग सिधारें । धर्म शास्त्र कुछ सुनें विचारें।
तदपि चित्त बश में नाहिं आवे। अशुभ मार्ग में तुम्हें लगावे।

दोहा

नारिन को सत्संग नाहिं नहिं कुछ शास्त्र अधार
किहि विधि रोकें नारि चित सज्जन करो विचार

चौपाई

जस मन इन्द्रिय देह तिहारे । तस नारिन के सब बिस्तारे।
जस तुम चित सब सुख हित भावे। नारिन को सब भांति सतावे।
जौन बस्तु के तुम अभिलाषी। नारी भी सब ही की प्यासी॥
तुम सब विधि सुख के अधिकारी। केवल दुःख सहैं सब नारी॥
आप खाउ रंडिन को देवो । नारिन की कुछ सुध नाहिं लेवो
नारिन पै अन्याय बढ़ावो । जस तुम करो ताहि फल पावो

दोहा

खान पान भूषण बसन इन बिन नारि दुखाय।
पति प्रेम बिन अति दुखी युग समान छिन जाय
शुभ विचार कब लौं रहै कब लों धीरज होय।
करन लगें व्यभिचार रति लाज धर्म सब खोय
जिस घर में अबला दुखी होय नहीं सन्मान।

ताको मुनि जन कहत हैं सो घर नरक समान।

श्लोक

ऋतु कालाभिगामी स्यात स्वदारानिरतःसदा
पर्ववर्जंव्रजेच्चैनां तद्व्रतो रति काम्यया ॥१॥
पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः २
यत्र नार्यस्तु न पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः ३
शोचन्ति जामयो यत्र विनश्यत्याशु तत्कुलम्।
नशोचन्ति तु यत्रैता वर्द्धते तद्धि सर्वदा ॥४॥

मनुस्मृति अध्याय ३

यह मनुजी महाराज के कहे श्लोक हैं इनका क्रमसे यह अर्थ है

भावार्थ

ऋतु काल में स्त्री संयोग अवश्य करे यदि न करे तो पातकी होता है और सदा अपनी ही स्त्री से प्रसन्न रहना चाहिये और पर स्त्री की अभिलाषा कभी न करे इत्यादि॥१॥ पिता भ्राता पति आदि जो सुख की इच्छा करें तो वस्त्राभूषण से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खें॥२॥ जिस कुल में स्त्रियों का यथावत सत्कार होता है अर्थात स्त्रियों को वस्त्रा भूषण खान पान सन्मान कर पति आदि प्रसन्न रखते हैं उस कुल में देवता रमण करते हैं और जिस कुल में स्त्रियों का खान पान वस्त्राभूषणादि से सन्मान नहीं होता उस कुल में धर्मादि कार्य सब निष्फल होते हैं॥३॥ जिस कुल में स्त्रियों को क्लेश होता है वह कुल शीघ्रही नष्ट हो जाता है अर्थात् सन्तान तथा धन आदि पदार्थों से हीन होकर अ

पत्तियों से पीडित होता है और जिस कुल में स्त्रियां प्रसन्न रह-ती हैं वह धन सन्तानादि सम्पत्तियों से नित्य बढ़ता है ॥५॥

इन चारों श्लोकों का तात्पर्य यह है कि स्त्री लोग वस्त्रा भूष-ण खान पान से सन्तुष्ट रहेंगी तो उनका चित्त दूसरों के सुख को देखकर चलायमान न होगा और स्त्री पुरुष के प्रेम होने से घ-र में निर्दोष सन्तान होकर कुल वृद्धि होगी यदि उनका सन्मा-न न होगा तो प्रति दिन शोक सन्ताप कलह होने से धन आदि-की हानि ही होवेगी और खान पानादि का सन्मान होने से दूसरे स्त्री पुरुष का सुख देखकर स्त्रियों का चित्त चलेगा यदि कोई-महाशय कहें कि निर्द्धन पुरुषों की स्त्रियां क्योंकर सन्तोष कर-ती हैं इसका उत्तर यह है, निर्द्धन की स्त्रियां सन्तोष दरिद्रता के ऊपर करती हैं परन्तु प्रमादी पुरुषों की स्त्रियां प्रत्यक्ष देखती-हैं कि हमारे पति आदि सहस्त्रों रुपया नाच कूद में वेश्याओं को देते हैं हमको दुखी करते हैं फिर सन्तोष नहीं हो सक्ता अवश्य-क्लेश की वृद्धि होगी और स्त्री पुरुष में प्रेम न होने से प्रथम तो-सन्तान हीन होकर कुल नष्ट होगा कदाचित् सन्तान हो भी ग-ई तो माता के शोकातुर होने से सन्तान निर्दोष वा निरोग न होगा इससे भी कुल नष्ट होगा अतएव सर्वदा स्त्रियों को प्रसन्न रख-ना चाहिये परन्तु वर्त्तमान में इसके विरुद्ध सब काम हो रहे हैं जो घर की स्त्री हैं उनको भोजन वस्त्रा भूषणादि से कष्ट देते हैं-और वेश्याओं को एक २ रात्रि में नाच के लिये सौ २ दो २ सौ रु-पये वा हज़ार २ झट दे देते हैं शोक! शोक!! महा शोक!!!

वेश्या नृत्यसे नारियों में धीठता

दोहा

श्रौर हानि अति शोक मय बाढ़ी महा कुरीति।
नारिन में अति धीठता छाई अधिक विनीति॥
रंड नचें जिस ग्राम में होवत तहां कुसंग॥
सुता होंय चपला अधिक नारिन को चित भंग
इन दुष्टा के स्वांग लखि चले और पहराव॥
नारिन को भूषण बसन भये रजो गुणभाव॥
शब्द जनक भूषण गहे निकसी चाल नवीन॥
साबुन मल तन धोवहीं पहरें वस्त्र महीन॥
पिता भ्रात के सामने गावें तजि भय लाज।
सबै कथा अब मत सुनो बदले सबही साज॥

धन देने से वेश्याओं की वृद्धि अर्थात पुत्री हत्या

बड़ी हानि यह और है सुनिये ध्यान लगाय।
जिहि देखत चित जलन अति भारत दियो डुबाय॥
रंडिन को धन के दियें इनकी वृद्धी होय।
यदि इन को धन ना मिले वेश्या बने न कोय॥
रंडिन की कहुं खानि नहिं सोचो चतुर सुजान।
यही देश की नारि हैं त्याग दई कुल कान॥
द्रव्य अधिक मिलने लगा वेश्या बढ़ीं अपार।
अन्य नारि साहस करें यह अच्छा रुज़गार॥
लज्जा छांड़े घर तजें वश कुसंग दिन चार।
फिर पीछे वेश्या बने करत यही व्यापार॥

तरुणाई जबलों रहे तब लों लूटत खात।
रंडी वृद्धा होत जब कोउ न पूछत बात॥
और कछू गुण है नहीं नाहिं इनके संतान।
कौन भांति रीझें पुरुष किहि विधि हो सन्मान॥
लड़किन को चेली करें चंचलता सिखलात।
खोटे कर्म करायकें चेलिन को धन खात॥
उत्तम कुल नव कामिनी लेयं कुसंग फँसाय।
कुटनी भेज बुलावहीं वेश्या लेयं बनाय॥
अथवा छोटी लड़कियां मोल लेयं मंग वाय।
दुष्ट जाय परदेश को लावें सुता चुराय॥

चौपाई

रूपवती कन्या कहुं पावें। दुष्ट लोभ वश तुर्त चुरावें॥
अति छोटी लड़किनिले आवें। द्रव्य हेत रंडिन दे आवें॥

दोहा

पाल लेत वेश्या तिनहिं निज परिवार बढ़ात।
बड़ी होत सीखें वही जो कछु गुरू सिखात॥

चौपाई

कन्या या विधि जन्म बितावें। घर में मात पिता दुख पावें॥
जो कोइ रंडिन को धन देवें। लड़किन की हत्या सिर लेवें॥

दोहा

पराधीन दुष्कर्म कर होवहिं सुता खुआर।
श्रेष्ठ वंश की बालिका यह निंदित आचार॥
हाय शोक समझें नहीं महा मूढ़ अज्ञान।
इतने हू पर करत हैं वेश्या का सन्मान॥

अपने हित फांसी रची जान बूझ निज हाथ।
महा विपति में फंसत हैं अबला सुता अनाथ॥
सन्तति को दुख देख कर हृदय विदारण होय।
महा निर्लज्ज समझें नहीं डूब मरें विन तोय॥

अथ वेश्या से गो हत्या

सभी हानि की खानि यह पातक होय महान।
वेश्या के नच वाय से जात गाय के प्रान॥

चौपाई

रंडी तुमरो धन ले जावें। घोर पाप में द्रव्य लगावें।
गाय मास नित लेकर खावें। मद्य पियें अंडे चुसकावें।
पीर मौलवी की सिंह मानी। गैया की होवे कुर बानी।
जो वेश्या का नृत्य करावें। निज धन दे गैया कटवावें।
पुरखा सब गो भक्त कहाये। धर्म काज में प्राण गंवाये।
तन मन धन गो हेत लगाये। गो माता के प्राण बचाये।
त्याग राज बहु विपति उठाई। गैया की दुर्दशा हटाई।
और कहा तुम करि हो भाई। तुम से वेश्या तजी न जाई।
तुम उनके कुल काहिं लजावो। धन देकर गो घात करावो।
वेश्या को धन देत बुलाई। गाय घात में होत सहाई।

दोहा

शोभा लगी पिसाचिनी भई बुद्धि सब छीन।
तुम शोभा में मगन हो गाय कटत अति दीन॥
शोभा हित धन हार के तुम मन होत निहाल
तुमरी शोभा अति बुरी गोवन को है काल॥
गोमन पै चालै छुरी तुम शोभा अभिलाष।

शोभा ही तिन करत है सब गोवन को नाश

चौपाई

सब से गो हत्या अति भारी। वेद शास्त्र सब कहत पुकारी
गोघाती ढिग बैठन हारे। यह भी होवत गो हत्यारे
गोघाती से प्रीति लगावें। तो भी गोघाती हो जावें
अब तुम देखो सोच विचारी। वेश्या प्रतिदिन गो हत्यारी
जब तुम उनका नाच करावो। तब तिनको निज ढिग बैठावो
अति पातक ढिग बैठे होई। धर्म शास्त्र आज्ञा नहिं गोई

श्लोक

सम्वत्सरेण पतति पतितेन सहाचरन्। मनु॰ अ॰ ११

भावार्थ – पतित के साथ यदि दूसरा मनुष्य संसर्ग करे अर्थात् उसके साथ उठना बैठनादि व्यवहार करे तो वह बर्ष भर पीछे पतित होजाता है। यह साधारण पातकी का बर्णन है तो हत्यारे आदि पातकी के ढिग बैठने उठने से तत्काल ही पतित हो जाता है, सो वेश्या तो परम गो घातिनी बाल घातिनी तथा स्त्री घातिनी कन्या घातिनी ब्रह्म घातिनी है। तात्पर्य यह है कि वेश्या सब हत्याओं की करने वाली है परन्तु किस प्रकार से है इसका वर्णन पृथक ग्रन्थ में प्रमाण सहित लिखा जाय तब आनन्द आवे। जब यह बात सिद्ध है कि वेश्या गुरु हत्या आत्महत्या पर्यन्त करने वाली है तो इससे बर्त्ताव (नचानादि) करने वाले भी सभी हत्याओं में साझी होते हैं॥

श्लोक मनु॰ अ॰ ११

एनस्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थं किंचित्सहाचरेत्।

भावार्थ - इसका आशय यह है, जिस पातकी ने प्रायश्चित्त

नहीं किया अर्थात् पाप होने पर शुद्धि के अर्थ जिसने शास्त्रोक्त रीति से उसका उपाय नहीं किया उसके साथ कोई प्रकार का व्यवहार (उठना बैठना आदि) न करें।

आप जानते ही हैं, हज़ारों गाय कटवा कर वेश्यायें ने खातीं प्रायश्चित्त तो जानती भी नहीं फिर उनके साथ व्यवहार करना बुलाना नचाना धन देनादि महा पाप क्यों नहीं? अवश्य है।

वेश्या से विश्व की हत्या

दोहा

वेश्या का इस देश में जब से भया प्रचार
प्रगट भये सब रोग आनि नष्ट कियो संसार

चौपाई

कौन कुरोग अनन्त चढ़ाई। बवासीर गठिया अधिकाई
बद्दा सुज़ाक आतिशक आई। सबहि प्रमेह सनातन चाई
नूतन रोग झुंड चलि आया। जीवन सुख आरोग्य नशाया

वेश्या कुल घातिनी

धातुज रोग हानि बहु कीनी। कुल अनेक सन्तति से हीनी

दोहा

वीर्य्य विगाड्यो रोग ने शुभ सन्तति को मूल
पुत्र न होवें रोग बश भये वंश निर्मूल

भावार्थ यह है कि वेश्या के प्रताप से सहस्त्रों रोग ऐसे फैल गये कि पुरुषों के वीर्य भस्म होगये कितनों के पतले पड़ गये गंदे होगये तथा वे ही पुरुष अपनी २ स्त्रियों के समीप गये उन से स्त्रियों को भी खोटे रोगों ने घेर लिया बल्कि वे रोग किसी किसी कुल में पूरित होगये इसका फल यह हुआ कि अनेक कुल

निर्बंश (सन्तानहीन) होगये, वेश्या संसर्गी पुरुष के सन्ता न होती ही नहीं यदि हो भी जावे तो जानना कि स्त्री के व्यभिचार से अर्थात पर पुरुष से हुई और वेश्या प्रथम तो अपने माता पितादि का ही कुल नष्ट करती हैं पीछे पुरुषों का कुल नष्ट करती है इससे यह सिद्ध हुआ वेश्या कुल घातिनी है जो पुरुष इनका संसर्ग करते हैं वे भी कुल घाती हो जाते हैं कुल घातियों की वृद्धि करना बुद्धिमानों का काम नहीं ॥

वेश्या से आत्म हत्या

वेश्यागामी निर्द्धन होने पर चोरी ठगी आदि द्वारा धन लाते हैं यदि कहीं पकड़े गये या माता पिता से धन भूषणादि मांगा, न मिला अथवा स्त्री ने कामातुर हो कुछ दुराचार किया तो झट बिषादि भक्षण कर आत्म घात कर डालते हैं या स्त्री के प्राणघात कर गये अथवा स्त्री स्वयम् आत्म घात करती है अथवा इन को निर्द्धन देख अन्य धनाढ्य के साथ में वेश्या प्रीति करने लगे तो भी आप उसके वियोग में आत्म घात करते हैं ॥

वेश्या से गुरु हत्या

वेश्या की कृपा से गुरू में प्रीति नहीं रहती यथा "लोकलाज्ज गुरुभक्त कहाहीं। गुरु सों अधिक नेह इन माहीं" जब गुरु जी में भक्ति ही न हुई तो डुबने में क्या सन्देह है? द्वितीय विमुख होने से कृतघ्नता दोष भी उन पर चढ़ता है, तृतीय महाभारत करण पर्व में श्री १०८ कृष्णचन्द्र जी का वचन अर्जुन प्रति है कि श्रेष्ट पुरुषों की अवज्ञा करना शीस काटने के तुल्य है। अब सोचिये जो सच्चे गुरु हैं वे अवश्य वेश्यादि दुराचार से निरोध करते हैं वेश्यागामी पुरुष गुरु जी की आज्ञा का उ

ल्लंघन करते हैं तो गुरु का घातही करते हैं, यदि आप महा भारत में श्री १०८ कृष्णचन्द्र जी का वचन सत्य मानते हैं तो आप को अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा कि वेश्या गुरुहत्या की करने वाली है और वेश्यानुगामी गुरुघाती हैं ॥

वेश्या से भक्ति वा योग की हानि

वेश्या के सहवासी पुरुष भक्ति के निकट होकर नहीं फटक ते वरन उलटे शत्रु होकर उस की निंदा करते हैं और अपने सह चारी पुरुषों को वा लड़कों को यही उपदेश करते हैं कि भक्ति इसी का नाम है अर्थात इश्क बाज़ी का नाम योग और भक्ति है बिना इश्क के किसी ने कुछ नहीं पाया, वैकुंठ स्वर्ग मोक्ष जो कुछ है सो इश्क बाज़ी में है इसी से सब प्राप्त होते हैं। इस का का रण यह है कि वेश्या भी अपने शिष्यों को पहले से यही उप देश सुनाया करती हैं कि जो कुछ है सो भोग में ही है जिस भड़वे को दुनियां के मज़े नहीं मिले वह कम नसीब कमबख्ती का मारा जंगल में जाकर खाक लगावे या घर में माला लेकर बैठे या जो नामर्द होवे वो जोगी बने वा भक्ती साधे जो मर्द हैं वे तो इश्क क रते हैं आगे बड़े २ मौलवी पंडित योगी सन्यासी हो गये वे भी भोग के वास्ते तड़पते थे सब ने स्त्री घेरी थीं, इत्यादि झूंठी गप शप उड़ा के मूर्खों को बहकाती हैं ॥

श्लोक

निन्दन्त्य धर्मिणो धर्मम्मूर्खा निन्दान्ति पण्डितम्
योगं निन्दन्ति वेश्या वै चन्द्रन्निन्दान्ति तस्कराः

यह किसी कवि का बचन है कि अधर्मी पुरुष धर्म को, मूर्खलोग विद्वान् को और वेश्या योग को बुरा कहती है जैसे चोर चन्द्रमा को

बुरा कहते हैं।

तात्पर्य यह कि वेश्या को लाभ तो व्यभिचार ही से हो सकता है इसी से वे सर्वदा भक्ति की तथा योग की निन्दा करती हैं॥

वेश्या धर्म शास्त्र तथा ईश्वर में श्रद्धा खोती है

प्रायः व्यभिचारियों से सुना है कि शास्त्र में वेश्या की वा शराब मांसादि की निन्दा जो लिखी है तो जंगली लोगों ने लिखी है वे इस मज़े को जानते ही नहीं थे जैसी जिसकी मर्ज़ी है वैसी पुस्तक बनाता है और ईश्वर किस ने देखा है, वेश्या में और शराब मांस में मज़ेदारी सामने ज़ाहिर है। इत्यादि ईश्वर की तथा शास्त्र तथा धर्म शास्त्र कर्त्ता ऋषियों की निन्दा करके जन्म बिगाड़ते हैं और जो उनके साथी हैं उनको भी ले डूबते हैं अनुमान से जाना जाता है कि वेश्यागामी पुरुषों को ये सिद्धान्त वेश्याओं ने ही सिखाये होंगे अर्थात् वेश्या धर्म शास्त्र तथा ईश्वर से विमुख करके नास्तिक बना देती है॥

वेश्या से सत्संग की हानि

इस बात को प्रायः सब महाशय स्वीकार करेंगे कि संसार में मनुष्य को सुधारने वाला अच्छे पुरुषों का सत्संग ही है इसके बिना सुधार होना असम्भव है और परम दुखदायक नष्ट भ्रष्ट करने वाला है तो सब से अधिक कुसंग ही है जैसे श्री गुसाईं तुलसी दास जी का बचन है कि "दुष्ट संग जिन देउ बिधाता। भल बर बास नरक सुर ज्ञाता" अर्थात दुष्ट संग से नरक का बास श्रेष्ठ है, और भी "बसि कुसंग चाहत कुशल तुलसी यह अफसोस। महिमा घटी समुद्र की रावण बसा परोस" तात्पर्य यह है कि वेश्यागामी पुरुष सत्संग में कभी नहीं बैठते, जब बैठेंगे तब श

राबी कबाबी जुआरी चोर वेश्या दास जी के निकट दाल गले गी अन्यत्र सत्संग में उनका जी जलता है बात हीं नहीं सु हाती कभी भूल में चले भी गये तो दूसरी बार जाने की रुचि नहीं होती अब कहिये अच्छे पुरुषों से (जो कि सर्व प्रकारहि तकारी हैं उन से) डर कर भागना और खोटे पुरुषों के निकट बैठना सिवाय हानि के लाभ कभी हो सक्ता है अर्थात् जो मनु ष्य खोटे पुरुषों को खोजता फिरे उसको दुःखों का क्या घाटा है पाव घड़ी का कुसंग सत्यानाश में मिला देता है वेश्या गामी तो रात्रि दिन कुसंग में रहते हैं॥

वेश्या से मित्रता की हानि

वेश्यागामी की मैत्री किसी से नहीं रहती चित्त तो एक ही है उसमें मित्रों की मित्रता रहेगी वा वेश्या की रहेगी॥

जब वेश्या से प्रीति होती है तो पहिले मित्रों को व्यभिचारी पुरुष भूल जाता है इसी से कृतघ्न भी गिना जाता है और जो व्यभिचारियों के मित्र कोई आप देखेंगे भी, तो वही शराबी क बाबी मिलेंगे जिनका सिद्धान्त है कि हराम का मिले वा हलाल का, घर का वा बाहर का, चोरी से वा ठगी से वा झूठ से जैसे मि ले धन ठगना, वे इसी बात के मित्र हैं कि उल्लू मल्ल को शराब मोल ला दी अथवा कबाब बनाकर अपने घर में खिला दिया और उन्हीं के सिर आप भी अमल पानी कर लिया जिस दिन पैसा नहीं मिला चार जूते लगा दिये इनकी मित्रता का फल अ त्यन्त बुरा है॥

श्लोक

दुराचारी दुराहष्टि र्दुरावासी च दुर्जनः
यन्मैत्री क्रियते पुम्भिर्नरः शीघ्रं विनश्यति

भावार्थ– जिन का आचरण बुरा है जिन की दृष्टि पाप में रहती है बुरे स्थल बुरे संग में रहने वाला और दुर्जन इन पुरुषों की मैत्री जिस के साथ हो वह नर शीघ्र ही नष्ट होता है॥

वेश्या से ब्रह्म हत्या

प्रथम तो वेश्या के प्रताप से श्रेष्ट (धर्म शास्त्र के ज्ञाता और सदाचारी) ब्राह्मणों में श्रद्धा नहीं रहती यह भी ब्राह्मणों की हानि है द्वितीय वेश्या तथा वेश्यागामी प्राय: ब्राह्मणों से द्वेष रखते हैं कि ये लोग वेद शास्त्र सुना कर मनुष्यों को व्यभिचार तथा मद्य मांस से हटा कर हमारी हानि करते हैं इसी से कितने राजाओं के पंडित मारे गये, तृतीय कभी २ ऐसा भी होगया है कि कोई ब्राह्मण कुसंग में फँस कर वेश्यानुरागी हो गये हैं तो व्यभिचारी लोग वेश्या की प्रीति से एक दूसरे को मार भी डालते हैं ऐसा बीसियों वार सुनने में आया है, व्यभिचारी लोग इस बात को नहीं देखते कि ब्राह्मण वा क्षत्री है क्रोध आने पर दूसरे के प्राणघात कर ही डालते हैं, चतुर्थ यह भी कारण है, सुनिये

श्लोक

ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं गुर्वंग नागमः
महान्ति पातकान्याहुः संसर्गश्चापि तैः सह
मनु० अ० ११

इस का अर्थ यह है कि ब्रह्म हत्या का करने वाला मदिरा अर्थात् शराब पीने वाला चोरी करने वाला और गुरु की स्त्री में गमन करने वाला ये चार महा पातकी हैं और जो इन (ब्रह्मघाती और शराब पीने वालों) के साथ संसर्ग लेना देना बोल चाल उठना आदि करना है वह भी पांचवां महा पातकी होता है।

अर्थात् शराब पीना भी ब्रह्महत्या ही है और यावत् वेश्या हैं शराब पीती हैं और जो वेश्यागामी हैं वे शराब मांस अवश्य भक्षण करते हैं वेश्या तथा वेश्यागामी पुरुष ब्रह्मघाती हैं और जो मनुष्य इनका संसर्ग करते हैं वे भी महापातकी (ब्रह्मघाती) हैं अब कहिये सभा में वेश्या आप के निकट नाचती हैं लेन देन बात चीत देखना दिखानादि संसर्ग अवश्य होता है यदि आप धर्मशास्त्र को सत्य मानते हैं तो आप विचार कर लीजियेगा कि ब्रह्मघाती का संसर्ग करके हम क्या हुए । इस से यह तात्पर्य्य निकला कि वेश्या ब्रह्मघातिनी है और जो इन से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखता है उनको भी ब्रह्मघाती बनाती हैं ॥

(प्रश्न) वेश्या भी तो ईश्वर ने ही बनायी हैं यदि उनको व्याह बरात में न नचाया जाय तो इनका पालन कैसे होगा ॥

(उत्तर) ईश्वर ने जैसे अन्य हमारे आपके शरीर रचे वैसे ही वेश्या के देहमात्र की तो रचना की है परन्तु यह नहीं कहा कि दुराचार करो यह उनका प्रमाद है, चोर भी ईश्वर ने रचे हैं, सिंह सर्प आदि सभी ईश्वरसृष्टि है चोरों को धन लेने से क्यों रोकते हो, सिंह सर्प के डर से क्यों भागते हो तुम उनका आहार हो वे मनुष्यों को भक्षण करते हैं, जैसे प्रीति से वेश्या को धन देते हो यदि आप धर्मात्मा हैं तो वेश्या की तरह सिंह मगर मच्छादि क्रूर जीवों को अपना शरीर अर्पण कर दो, चोरों को धन धाम सब दे दो, धन्य है आपकी धर्मज्ञता को चित्त में तो आप के प्रमाद भरा है ऊपर ईश्वरसृष्टि की दया प्रगट करते हो प्रथम आप अपना और अपने कुटुम्ब का

तो पालन कर लो वेश्याओं की चिन्ता पीछे कीजियो और इनका पालन करना सम्पूर्ण संसार की पतिव्रता स्त्रियों को वेश्या बनाना है मैं ऊपर लिख चुका हूं कि इनको सुखी देख कर अन्य स्त्री भी वेश्या बन बैठती हैं इससे यह सिद्ध हुआ कि विश्व भर की स्त्रियों के पतिव्रत धर्म्म नष्ट करने का जो पाप है वही पाप वेश्या के पालन करने वालों को होगा और धर्मशास्त्र में ईश्वर यह आज्ञा देता है कि दुराचारी के निकट होकर मत चलो और विश्वास मत करो ॥

श्लोक

बालघ्नांश्च कृतघ्नांश्च विशुद्धानपि धर्मत:
शरणागतहन्तॄंश्च स्त्रीहन्तॄंश्च नसं वसेत्
मनु० अ० ११

भावार्थ – बालक को मारने वाला और कृतघ्न (जो किये हुए उपकार को न माने) तथा शरणागत को मारने वाला और स्त्री को मारने वाला ये सब परम पापी पाप करने पर शुद्धि के अर्थ प्रायश्चित्त कर चुके हों तो भी इनका संसर्ग न करे ॥

देखिये वेश्या सैकड़ों स्त्रियों की हत्या करती है लाखों बालकों की हत्या गुरुहत्यादि कराती हैं और करती हैं और कृतघ्नता तो वेश्या में अत्यन्त ही है जब तक धन मिले तब तक की मित्र है। यथा "निर्द्धनं पुरुषं वेश्या प्रजा भग्नं नृपं त्यजेत" निर्द्धन होने पर वेश्या त्यागती है इतनी घोर पापिनी अवश्य त्याज्य है इसके अतिरिक्त धर्म शास्त्र में यह भी लिखा है कि,

श्लोक

गुरुं वा बाल वृद्धौ वा ब्राह्मणं वा बहुश्रुतम्
आततायिनमायान्तं हन्यादेवाविचारयन्
मनु॰ अ॰ ८

भावार्थ- गुरु, बालक, वृद्ध, विद्वान ब्राह्मण, ये सब आततायी हों तो इनको विना विचार किये बध अर्थात् प्राणघात करें तात्पर्य यह है कि गुरु बालक वृद्ध और ब्राह्मणादि के मारने का बड़ा भारी पातक है परन्तु ये आततायी हों तो इनके मारने में विलंब न करे क्योंकि आततायी मनुष्य महापातकी होता है॥

श्लोक

अग्निदो गरदश्चैव शस्त्र पाणि र्धनापहः
क्षेत्र दाराप हर्त्तान्च षडेते ह्यात तायिनः

भावार्थ- अग्नि लगाने वाला (१) विष देने वाला (२) शस्त्र (हथियार) हाथ में लिये मारने को उद्यत (३) पराया धन हरने वाला (४) स्त्री हरणे वाला (५) भूमि हरणे वाला (६) ये छः आततायी हैं। इनमें से एक लक्षण भी जिस मनुष्य में हो वह आततायी होकर मारने योग्य है परन्तु वेश्या में तो छहों लक्षण आततायियों के हैं, यथा अग्नि के समान संसार को भस्म करती है बरण अग्नि से कोटि गुण अधिक है, और विष तो ऊपर दिखा चुका हूं कि वेश्या की कृपा से स्त्री पुरुष बालक खा बैठते हैं वा स्त्री को पुरुष दे देते हैं शस्त्र भी चल जाते हैं, धन, भूमि, स्त्री इन सब को तो प्रत्यक्ष ही हरती है। यद्यपि धर्मशास्त्र में इनका मारना लिखा है तथापि हमारा यह तात्पर्य्य नहीं है कि वेश्याओं को मार डालो किन्तु इतना तो अ

वश्य चाहते हैं कि इनका तिरस्कार होवे सत्कार न होवे ॥

श्लोक

शकटं पञ्च हस्तेन दश हस्तेन वाजिनः

हस्ती हस्त सहस्त्रेण देशत्यागेन दुर्जनः

भावार्थ- बैलगाड़ी आती हो तो पांच हाथ दूर से बचे, घोड़े से दश हाथ, हस्ती से हजार हाथ दूर से बचे और दुर्जन का त्याग देश से करें अर्थात् जिस देश में दुर्जन हो उस देश में भी न रहें अथवा उस दुर्जन को उस देश से निकाल दें अर्थात् दुर्जन सबसे अधिक दुख दायी है यदि परम दुर्जनता की मूर्त्ति वेश्या को देश निकाला नहीं दे सके तो इतना तो अवश्य हो सका है कि अपने विवाहादि कार्यों में न बुलाई जावे।

(प्रश्न) वेश्या आकर दश बीस गालियां (सीठने) समधी को सुनाती हैं तो विवाह की शोभा बन जाती है।

(उत्तर) धिक ऐसी समझ को, रस्ता चलते मनुष्य से वार्तालाप करने पर उत्तम पुरुष उसकी बहिन बेटी तथा अनिष्ठा (इज्जत) को अपनी ही बहिन बेटी और प्रतिष्ठा समझते हैं भला जिन से बेटी बेटे का लेन देन परस्पर पूरा सम्बंध हो गया उनकी स्त्रियों को वा समधी को बुरा भला कहाना और उसको सुन कर प्रसन्न होना मनुष्यों का काम नहीं, पशुओं की लीला है वरन यह उचित है कि समधी तथा समधिन की अप्रतिष्ठा होती हो तो उस विघ्न को हटा कर प्रतिष्ठा की रक्षा करें इसके बिपरीत करना तो बड़ी भूल और अत्यंत कातमता निर्लज्जता है इसी के कारण स्त्रियां अत्यंत धीठ वे लि

हाज़ गाना बजानादि सीख गयीं।

(प्रश्न) वेश्या नृत्य से सभा (महफ़िल) की शोभा होती है दश भाई बैठे रहते हैं, निरालंब बैठा नहीं जाता इसीसे कौन आया कौन गया उसकी ख़बर नहीं होती।

(उत्तर) प्रथम तो यह बड़ी भारी भूल है कि एक किंचित् गुण के लिये सहस्रों प्रकार की बड़ी २ हानियां और महापातकी होने के कर्म का कुछ ध्यान न देना मूर्खता है द्वितीय दश भाइयों को एकत्रित बैठने का उपाय भी यह है कि कीर्तनी (ईश्वर सम्बंधी भजन गाने वालों) को बुला कर भजन गवाया कीजिये अथवा श्री १०८ रामचन्द्र जी तथा श्री १०८ कृष्णचन्द्र जी के विवाहोत्सव के भजन कीर्तनी पुरुषों से गवाया कीजिये उत्तम प्रकार के भजनादि बहुत बन गये तथा गाने वाले भी बहुत हैं। भजन गाने की आप रीति चला देंगे तो इन के गाने वाले भी अधिक मिलने लगेंगे।

(प्रश्न) मेल मुलाक़ात वाले अधिक कहा सुनी करते हैं वेश्या के बिना मज़ेदारी नहीं तुम कृपणता क्यों करते हो धन की यही शोभा है।

(उत्तर) प्रथम तो बुद्धिमान् ऐसा कहते ही नहीं किन्तु मूर्ख कहा करते हैं और प्रायः व्यभिचारी लोग (वेश्या के मित्र) विशेष कहते हैं उनकी बात्ती आप कौन २ सी मानेंगे जब तक मूर्खों के समस्ताचरण धारण न करोगे तब तक तुमसे वे सम्यक प्रसन्न कदापि न होंगे। और फिर अनेक प्रकार के मूर्ख हैं उनके आशय भिन्न २ हैं अनेक जन्मों में तथा पृथिवी भर की सम्पत्ति लुटाने से भी उनके अभिप्राय की पूर्त्ति न

हीं हो सकती उचित यही है कि मूर्खों की बड़बड़ाहट पशु तुल्य समझ कर ध्यान न दें क्योंकि पीछे दुःख निकलता है।

श्लोक

यस्यार्थास्तस्य मित्राणि यस्यार्थास्तस्य बान्धवाः
यस्यार्थाः स पुमान् लोके यस्यार्थाः स च पण्डितः

इसका तात्पर्य यह है कि संसार में एक द्रव्य ही पदार्थ मुख्य है जिसके पास धन है तिसके मित्र भी सब बन जाते हैं बान्धव भी नातेदारी प्रगट करते हैं धन की कृपा से वह बड़ा प्रतिष्ठित तथा पंडित समझा जाता है, धन लुटने पर खुशामदी वा बान्धव वा मूर्ख समीपवर्ती कोई नहीं कहता कि आपने हमारे कहने से वेश्यादि में बहुत धन लगाया था तुम बिपत्ति में हो हमसे सहायता ले लो बरन सहायता की जगह उलटा मूर्ख बतावेंगे वा आंख बचा कर चले जायंगे आप वा आप की सन्तान ही के ऊपर वह बिपत्ति रहती है यदि कोई विशेष हठ वेश्या के लिये करे तो उससे कह दो कि तुम हीं दो घड़ी के लिये जनाने कपड़े पहर लो तुम को दो रुपये दे देंगे।

(प्रश्न) कितने आदमियों में यह भी रीति है कि बेटे वाला वेश्या को धन नहीं देता किन्तु इष्ट मित्र मेल मुलाकात वाले एक २ दो २ रुपया सभी आकर देते हैं तो उनका यह कथन है कि हमारा धन तो लगता ही नहीं निर्यत्न शोभा हो जाती है।

(उत्तर) जिनके कार्यों में तुम सैकड़ों रुपये दे चुके होंगे अथवा जिन को आप से यह आशा है कि ये भी हमारे कार्यों में (वेश्या नृत्यादि में) रुपया देंगे वे ही लोग आपके विवाह में रंडी को दे देते हैं। फिर क्या हुआ अलट पलट के आपही का धन

गया वीस भाइयों से पहिले दिखाया फिर वीस के तुम देने गये।

(प्रश्न) जो लोग धनी हैं उनका उत्साह कहां पूरा हो।

(उत्तर) अपनी २ बिरादरी की पञ्चायत करके यह नियम करलें कि जो धन आतिशवाज़ी फुलवाड़ी वेश्यादि में लगता है वह इन कार्यों में से छुड़ा कर प्रत्येक विवाह में जैसा अधिक न्यून द्रव्य से विवाह हो तदनुसार पांच रुपये सैकड़ा वा जैसा उचित समझें पंचायत में जमा कराया जाय उस चंदे से प्रथम बिरादरी के बालकों को पढ़ाने के अर्थ पाठशाला बनायी जाय द्वितीय निर्धन भाइयों की कन्याओं का विवाह कराया जाय जिस से कि निर्धनता के कारण कन्या वाला समधी से धन न लेने पावे तृतीय बिरादरी में जो लूली लँगड़ी अपायज अनाथा (लावारिस) विधवा स्त्री हैं उनका पालन करना चाहिये जिस से कि विधवा अनाथा स्त्रियों को दुराचार की सम्भावना न हो आपका यश भी जन्मभर तथा अनेक पीढ़ी तक रहे और परलोक में अक्षय पुण्य हो अथवा धर्म का काम न हो सके तो अपने २ पुत्र तथा पुत्रवधू आदि को भूषण अधिक बनवा दो वक़ बे वक़ काम आवे चीज़ घर की घर में रहे नाम भी हो, सहस्रों मनुष्यों को देखा है घर की झोंपड़ी भी नहीं, आतिश बाज़ी रंडी आदि कुरीतियों में ऋण निकाल के धन लगाते हैं उनको उचित है अपने घर की टूटी फूटी झोंपड़ी तो बना लें॥

(प्रश्न) वेश्या का नृत्य कराना अति हानि कारक है परंतु अत्यन्त आश्चर्य है कि हमारे पूर्व ऋषियों ने इस का प्रथा

र क्यों किया।

(उत्तर) वेश्या नृत्य, फुलवारी, आतिशबाज़ी आदि कुरीति मुसलमानी राज्य के समय से प्रचलित हैं पहिले इस देश में इन कुरीतियों की चर्चा भी नहीं थी मैं आपको एकही उदाहरण से समझाता हूं कि आतिशबाज़ी छुड़ाना मुबरात दि मुसलमानों का त्यौहार है आप लोगों के किसी त्यौहार में इसका विधान नहीं इसी से प्रायः मुसलमानों के विवाह में भी इस की रीति है अविद्या के प्रताप से अपनी हानिलाभका बिचार तो रहा ही नहीं जब से मुसलमान आये उनको देख २ आतिशबाज़ी वेश्या इत्यादि भेड़िया चाल से आपलोगों में भी प्रचलित होगये और हमारे पूर्वज महात्माओं ने तो वेश्या को अत्यंत ही बुरा कहा है॥

श्लोक

धर्मारण्य दवानलो धनपयो राशेरगस्त्ये यशः
स्तोमेन्दुग्लपनैकराहुरनिशं स्वान्तद्विपानालिका
सन्तानोभ हरिः सुवंशवनिता रम्भाहिमानी निभः
तस्माद्वारवधूकटाक्ष विशिखो यत्नाद्विहातव्यनाम।१

भावार्थ- धर्म मनुष्य के लिये उभयलोक सुखकारक परम शान्तिदायक सुन्दर बन के समान है जिस धर्म रूपी वन के दाह करने को वेश्या दावानल (वन की आग्नि) के समान अर्थात् धर्म को तत्काल ही भस्म करती है (१) धन रूपी समुद्र को शोषण के लिये अगस्त है अर्थात् समुद्र के समान धन भरा हो तो उसको भी नष्ट भ्रष्ट करा के तत्काल दरिद्री बना देती है (२) यश का जो समूह वही हुआ एक चन्द्रमा तिस को क्षीण करने के लि

ये निरन्तर अद्वितीय राहु के समान है अर्थात् राहु जो प्रसिद्ध है कि चन्द्रमा को ग्रहण करता है वह राहु तो सुना ही है परन्तु यश रूपी परम मनोहर चन्द्रमा को नाश करने वाली वेश्या प्रत्यक्ष राहु है अर्थात् पुरुष को तत्काल ही अपयश का पात्र बना देती है (३) अन्तःकरण (मन) रूपी हस्ती के पकड़ने को खाई (गढ़ेला) के समान है अर्थात् जैसे हस्ती खाई में गिर कर पराधीन हो जन्म भर अंकुश खाता है तद्वत् पुरुष के चित्त को वेश्या बड़ी भारी खाई है वेश्या के आधीन होकर (पराधीन स्वप्ने सुख नाहीं) के अनुसार जन्म भर दुःख पाता है अन्य कार्यों में चित्त नहीं लगता उन्हीं के दास होकर सर्वोत्तम मनुष्य जन्म वृथा खोते हैं (४) और सन्तान रूपी जो हस्ती तिसको मारने वाली सिंह के समान है जैसे सिंह हस्ती को मार के नष्ट कर डालता है तैसे वेश्या सन्तान को सत्या नाश में मिलाती है (५) और श्रेष्ठ कुल की स्त्री कदली (केले का वृक्ष) के समान है उस को नष्ट करने के लिये हिम (बर्फ) के समान है इससे वेश्या के कटाक्ष रूपी बाण को यत्न पूर्वक रोकना उचित है॥

(प्रश्न) एक दो के बन्द करने से वेश्या नृत्य की रीति सर्वथा बन्द नहीं हो सकती क्या एक चना भाड़ को फोड़ सक्ता है।

(उत्तर) तुम तो छोड़ो तुम्हें तो अत्यंत लाभ होगा सहस्रों हानियों से पाप से बचोगे अब रहा यह कि बिरादरी मात्र के घरों में बन्द कैसे हो यह तो हम भी मानते हैं कि एक दो के करे बिरादरी का प्रबंध नहीं हो सक्ता तथापि अच्छी बातों का प्रचार धीरे २ होवेहीगा आप कुरीति को छोड़िये आप को देख कर अन्य दश छोड़ेंगे उनको सुखी देख अन्य सौ भाई समझेंगे॥

श्लोक

श्रुत्वा धर्मं विजानाति श्रुत्वा त्यजति दुर्मतिम्
श्रुत्वा ज्ञानमवाप्नोति श्रुत्वा मोक्षमवाप्नुयात

अर्थात् सुन के धर्म को जानता है सुन कर ही दुर्मति को मनुष्य त्यागता है इत्यादि। जब आप लोग स्वयम् सुरीति को वर्तेंगे औरों को शिक्षा करेंगे तो वे भी कुरीति को अवश्य छोड़ेंगे वीर पुरुष वही हैं जो सब से प्रथम श्रेष्ठाचार में प्रवृत्त होवें तथा अन्य महाशयों को अच्छे मार्ग पर चलावें ॥

श्लोक

एकेनापि सुवृक्षेण पुष्पितेन सुगन्धिना
वासितं तद्वनं सर्वं सुपुत्रेण कुलं यथा

अर्थ – सुगन्धि वाला वृक्ष एक ही समस्त बन को सुगन्धित कर देता है तैसे श्रेष्ठ पुत्र एक ही अच्छा उसके श्रेष्ठाचार से सम्पूर्ण कुल की शोभा तथा सब को सुख होता है अतएव स्वयम कुरीति को छोड़ो और अन्य भाइयों को समझा कर छुड़वाने का प्रयत्न करो यही आपका कर्त्तव्य है। और यदि आप इस वेश्या का निवारण न करोगे तो आपको तथा आपकी सन्तति को बहुत बुरा फल होगा हमारा सिद्धान्त यह है कि अपनी संतान की शरीर रक्षा उनका जीवन सुधारने का यत्न करो तथापि जो पुरुष इसका बंद होना नहीं चाहते और अपनी सन्तान (पुत्र पुत्री) कुटुम्ब स्त्री धर्म धनादि से रुष्ट होकर इन को नष्ट करना चाहते हैं तो वेश्या की अपेक्षा अग्नि में सन्तान को भस्म करना श्रेष्ठ है विष पिलाना उत्तम है पृथिवी में जीवते ही दबा देना हितकारी है सर्पों से कटवा देना थोड़े दुःख का कारण है

परन्तु वेश्या का नृत्य सन्तान के लिये कोरानि कोरि अग्नि के समान है और सर्प विष से अधिक दुख दायक है॥

श्लोक

दुर्जनस्यच सर्पस्य वरं सर्पोन दुर्जनः
सर्पो दंशति कालेन दुर्जनस्तु पदे पदे

अर्थात् सर्प यद्यपि प्राणघातक है तथापि दुर्जन के संसर्ग से सर्प उत्तम है क्योंकि सर्प कभी काटता है और खोटेजन बार २ काटते हैं उनके संग से जन्म भर दुःख भोगना पड़ता है धर्म नष्ट होकर परलोक भी खो बैठते हैं। हाय कितने शोक की बात है कि जिन पुत्र पुत्री के लिये जन्म से सहस्त्रों कष्ट उठाते हैं जो पुत्रादि अपने प्राण प्यारे हैं उनके ऊपर किंचित् भी दया नहीं आती, शोक! शोक!! महाशोक!!!

दोहा

जो सन्तति से रुष्ट हो दीनो नेह बिसार
परम दंड देवो चहो देउ कूप में डार
काले सर्प मंगाय के घर में दो छुड़वाय
नौका पै बैठाय के जल में देउ डुबाय
बहुत काष्ठ में अग्नि दे देवो तुर्त जलाय
अथवा बिष मंगवाय के सब को देउ पिलाय
सो उपाय कर लीजिये तुमरी रिस मिट जाय
प्राणदंड देवो भलो वेश्या बुरी बलाय
ये उपाय सबही भले प्राण तुर्त कढ़ि जाहिं
परन्तु वेश्या अति बुरी नाहिं बुलावो नाहिं
बिष देवो अति बुरो है यह जानत सब कोय

कोरि गुणी वेश्या बुरी तिहि सम बिष नाहिं होय
तन धन कुल सब नष्ट कर जीवन करत खुआर
कोरिन दुःख भुगाय के देयं नरक में डार
कोरिन युग भोगहिं नरक वेश्या नृत्य प्रताप
ताते बिष देवो भलो तनक होय सन्ताप
वेश्या है अवगुण भरी सब दोषों को सिन्धु
अल्प दोष वर्णन किये लखो सिंधु में बिन्दु

अथ आतिशबाज़ी की हानि

दोहा

आतिशबाज़ी अति बुरी महा पाप की खानि
याकी क्या लीला लिखूं करत सैकड़ों हानि
पशुवन की झिल्ली लगे प्रथम पाप यह जान
सो हिंसा तव शिर परे जानत नाहिं अजान

चौपाई

याहि नीच यवनादि बनावें । पशु की झिल्ली सभी लगावें
लगे अग्नि चिरंद उठावे । रोग जनक दुर्गन्धि बढ़ावे

दोहा

आतिशबाज़ी को जबै छोड़त अग्नि लगाय
फैल जाय दुर्गन्ध बहु रोगहि देत बढ़ाय

चौपाई

कौन अविद्या जग में छाई । अति निन्दित यह रीति चलाई
घृणित कार्य में प्रीती दूनी । सूंघें सब चमड़े की धूनी

दोहा

आतिश बाज़ी छूटती देखत चित्त लगाय
पशुअन का चमड़ा जले धुआं मग़ज़ में जाय
हम बनिये ब्राह्मण बड़े करत सभी अभिमान
चर्म धुआं जब सूंघते कहां तिहारो ज्ञान

चौपाई

परम हानि कर आतिशबाज़ी। देखत होयं मूर्ख जन राज़ी
देखत नयन कछुक सुख पावे। धुआं नयन की ज्योति घटावे
जबही ता में अग्नि लगावें। लाखन जीव तहां चलि आवें
मक्खी मच्छर जरें अनन्ता। धनी लोग हैं तिनके हन्ता
इसने कितने ग्राम जलाये। नगर माहिं बहु गृह फुंकवाये
अग्नि घरों में जबही लागे। बहुत जीव तब जलहिं अभागे
जो मूरख जन अग्नि लगावें। ते जग आततायी[१] कहिलावें
अग्नि लगे का पातक भारी। ताको समझत नाहिं अनारी
सुन्दर वस्त्र बहुत जल जावें। कितने मूरख आंख फुड़ावें
बहुत पुरुष घायल हो जावें। अंग भंग हो घर को आवें

दोहा

कितने मानुष मर गये इस बबाल में आय
जो विश्वास न आवही निश्चय देउं कराय
पगिया भूषण भीड़ में चोर छीन ले जायं
लड़कन के भूषण छिनें फिर पीछे पछितायं

१ छः आततायियों में अग्नि लगाने वाला है और अग्नि लगानादि छहों पाप महा बज्र हैं धर्म शास्त्र में इनके मारने की आज्ञा लिखी है यह श्लोक इसी पुस्तक के पृष्ठ २६ में लिखा है देख लो।

चौपाई

बहुत हानि लड़कन की होवें। खेल जान इसमें धन खोवें
खेल माहिं बहु समय गमावें। कबहूं हाथ पैर जल जावें

दोहा

आतिशबाज़ी देखि सुन सदा करत अभ्यास
कितनों के तन जल गये कितने भये विनाश

चौपाई

भूखे की नहिं भूख मिटावे। ना प्यासे की प्यास बुझावे
लागत अग्नि भस्म हो जावे। वृथा नष्ट कुछ काम न आवे

दोहा

या से क्या सुख होत है फूंके द्रव्य लगाय
आतिशबाज़ी आग लग तुर्त खाक हो जाय
राख होय तो भी भली आवे काहू काम
याकी राख न पावही वृथा जात सब दाम
अग्नि लगे घर में कभी बचें कोयला राख
धन लगाय फूंके सभी याकी रहे न राख

सिद्धान्त यह है कि आतिशबाज़ी अनेक हत्या की जड़ है झगादरी में एक मनुष्य मर गया (१) कलकत्ते में कितने ही घायल हो चुके (२) दानापुर के निकट एक ग्राम में अनेक मनुष्य घायल होगये कितनों का प्राणान्त हो गया कितने ही घर जल गये (३) वृन्दावन में सेठ जी के मेले में बीसियों आदमी घायल होगये थे सैकड़ों जगह अग्नि लग चुकी है विस्तार भय से अधिक उदाहरण नहीं लिखे॥

अथ फुलवारी की हानि

दोहा

हानि बहुत फुलवारि की किंचित कहूं सुनाय
प्रथम हानि यह जानिये वृथा द्रव्य लुट जाय

चौपाई

जब चाले घर से फुलवारी। बड़े यत्न होवे रखवारी
पुलिस माहिं वह खर्च करावे। तब समधी के घर तक जावे
मार्ग माहिं कबहूं लुटि जावे। चित में बड़ो शोक उपजावे
जेहि कारण फुलवारि मंगाई। समधी के घर तक नाहिं आई
जब लूटें लुच्चे फुलवारी। धक्का मुक्का होवत भारी
कितने मानुष कुचले जावें। हाथ पैर मुख दन्त तुड़ावें
होत परस्पर मार धिटाई। बहुत ठौर हो चुकीं लड़ाई
लूट माहिं तस्कर चलि आवें। भूषण बस्त्र छीन ले जावें

दोहा

वृथा खेल फुलवारि में खोवें द्रव्य लगाय
काहू काज न आवही टूक टूक उड़ जाय

आप लोगों को स्मर्ण होगा कि इसी आगरा नगर निवासी लाला हरजीत मल माथुर वैश्य की बरात में फुलवारी लुटते समय लड़ाई होने से कितने मनुष्य घायल होगये और एक पुरुष का प्राणान्त होने से कितने पुरुषों को दश २ बर्ष की क़ैद हुई हज़ारों रुपया खर्च हुआ अब कहिये प्रथम द्रव्य लुटाया फिर हज़ारों रुपया खोया सैकड़ों की खुशामद करनी पड़ी॥

ऐसे ही बखेर की लीला है कि जिस धन को लक्ष्मी जान कर पूजते हैं उसको हाथ से फेंक कर अनादर तथा अपशगुन कर

ना मूर्खता के सिवाय क्या सिद्ध होता है जो लोग बरेबर करते हैं उनका दिवाला अवश्य निकलते देखा है ॥

अथ आतिशबाज़ी और फुलवारी में महापाप

दोहा

सब पापों का बाप यह सुनिये ध्यान लगाय
इन कुरीति का धन सभी परम नीच घर जाय

सवैया छन्द

आतिश बाज़ी को नीच बनावत म्लेच्छ बनावत हैं फुलवारी
बाजा बजावत नीच सभी जन ये सब होवत मांस अहारी
गाय को मांस भखें धन पायके पीवें शराब महा व्यभिचारी
जो जन देवत हैं इनको धन गोवध पाप करावत भारी

चौपाई

आतिश बाज़ी नीच बनावें। ते सब गाय मांस नित खावें
प्रायः म्लेच्छ बजावत बाजा। गाय मांस इनका नित खाजा
इन कुरीति में जो धन जावे। सो धन हिंसा पाप बढ़ावे
तुमरा द्रव्य नीच ले जावें। घर में गाय मांस ले खावें
सर्व पाप तुमरे सिर आवे। तुमरा धन अति पाप करावे
जो तुमसे वे धन नहिं पावें। धन बिन गाय मांस नहिं खावें
कर अनर्थ जो द्रव्य कमावें। तिनको द्रव्य नीच ले जावें
महा पाप का जो धन आवे। सो धन इसी पाप में जावे
जिसका धन अनर्थ में लागा। तिन सम जग में कौन अभागा
इन कुरीति में बहु धन खोवें। नूतन बीज पाप के बोवें

श्लोक

चाण्डालानां सहस्रैश्च सूरिभिस्तत्त्वदर्शिभिः

एकोहि यवनः प्रोक्तो न नीचो यवनात्परः
अर्थात् तत्व दर्शी विद्वानों ने यह निश्चित किया है कि यवन लोग हज़ारों चाण्डालों के तुल्य हैं इनसे परे नीच नहीं।

ईर्षा से बाजा आदि कुरीति वृद्धि

चौपाई

इन कुरीति अभिमान बढ़ाये। महा फूट के वृक्ष लगाये
सब को इस दुर्मति ने घेरा। सब से अधिक होय यश मेरा
मूढ़ धनी कारज विस्तारें। दश मूरख तेहि भलो पुकारें
बुद्धिहीन कछु नाहिं विचारें। यशहित सब अनुचित कर डारें
मूर्ख किसी को यश सुनि पावें। उनहूं के मन झट लल चावें
तिहिसम हमहूं बड़े कहावें। रिसयुत बचन कहें गर्बावें
उसने कितना द्रव्य लगाया। मैं वा से सब करूं सवाया
उसने क्या फुलवारि मंगाई। हम उनसे ले चलें सवाई
उनकी फुलवारी है खाली। मैं उनमें चिपकाऊं थाली
उसने दो हाथी बन वाये। कागज़ के घोड़े सज वाये
बड़े बड़े हाथी बन वाऊं। फुलवारी की लैन लगाऊं
दिल्ली की रंडी मंग वाऊं। जब्बलपुर के भांड़ बुलाऊं

दोहा

देशी दप किस काम के सब शोभा से हीन
अंगरेज़ी बाजा बजे निकली चाल नवीन

चौपाई

देशी बाजा नाहिं सुहावें। अंगरेज़ी बाजा ले जावें
हमरे धन की चिन्ता नाहीं। शोभा अधिक होय जग माहीं

दोहा

कहत दूसरे बुद्धि रिपु यह बाजा नहिं ठीक
अंगरेज़ी की नक़ल है हमहिं न लागे नीक
या को सब ले जात हैं हम लायक़ यह नाहिं
असली अंगरेज़ी बजे तब शोभा जग माहिं
सिक्खन की पलटन चले देख लेयं सब कोय
पलटन का बाजा बजे नवी मोर यश होय
कहत तीसरे द्रव्य रिपु अभी ग्वालियर जाउं
चाहि जितो मम धन लगे पलटन लेकर आउं
राजा की पलटन सजे बाजे बजें विशाल
शोभा बने बरात की तब हम होयं निहाल
कहत चतुर्थ धर्म रिपु अनि मूढन के भूप
गोरन की पलटन चले बाजे बजें अनूप
जमा करूं सरकार में एक दिवस की फ़ीस
गोरे लाउं लिवाय के कौन करे मम रीस
घर पै गोरे आवहीं प्रथम पिलाउं शराब
उनका भोज्य मंगाय हूं पूरी और कबाब
गोरन को मदिरा मिले पियत मस्त होजायं
तब नीकी गति बाजही प्रेम रंग दर्शायं
पीछे जब खुश्की बढ़े शर्बत देउं पिलाय
दे इनाम राज़ी करूं सबी ठाठ बन जाय
धन की कछु चिंता नहीं सब घर डारूं खोय
सुत विवाह ऐसो करूं आगे भयो न होय
बार बार नहिं पुत्र सम बार बार नाहिं जन्म
व्याह करूं अनि धूम से यही पिता को कर्म

चौपाई

आयु विगत भई मम सारी। यह अभिलाषा रही हमारी
यश को काज कोउ नहिं कीनो। चार दिवस को जग में जीनो
सुत विवाह नहिं वार न्यारा। लहूं सुयश जग एकहि बारा
घर दुकान सबही बिक जावे। नाम मोर जग में रह जावे
राजन के हाथी मंगवाऊं। नगर २ में धूम मचाऊं
मुहर मंगाय बखेर कराऊं। जग में परम उदार कहाऊं
या विधि मूरख चहत बड़ाई। ताते सब कुरीति अधिकाई
यही ईर्षा घर घर छाई। इन कुरीति बहु फूट बढ़ाई
और सहस्र कुरीति चलाई। ते सब मो पै गिनी न जाई
मूरख इनकी करत बड़ाई। जिन को फल जग में दुखदाई
दुख की अवधि नहीं निरधारी। सदा विपति की देवन हारी
दुष्ट रीति यह परम कुठारी। उभय लोक तरु छेदन हारी
प्रथम हर्ष फिर संकट भारी। जिमि दुख सहे प्रसूता नारी
प्रथम मूर्खजन बड़ो बतावें। पीछे सब मिल हंसी उड़ावें
जिहि धन हित बहु कष्ट उठावें। सो धन मूरख वृथा लुटावें
धर्म काज सुनि जीव चुरावें। पैसा देत महा दुख पावें
वही द्रव्य शुभ हेत लगाओ। निज सन्तति को शास्त्र पढ़ाओ
विद्यालय वा कूप बनाओ। धर्म हेत कहुं ताल खुदाओ

दो० धर्म हेत नहिं दे सको भूषण लेउ बनाय
घर को धन घर में रहे कभी काम आ जाय
नारि पुत्र हित वस्त्र लो उत्तम भोजन खाउ
अथवा याही द्रव्य से अपनो घर बनवाउ
घर को नाहीं झोंपड़ी अन्न वस्त्र विन दीन

धन लुटाय दुख पावहीं महा मूढ़ मति हीन

अथ अति व्यय अर्थात् फ़ज़ूल ख़र्च

चौपाई

ख़र्च फ़ज़ूल बढ़े अति भारी। केते धनपति भये भिखारी
अनुचित ख़र्च देत दुख नाना। जानत हू न तजत अज्ञाना
सम्पति सुख की खानि नशाई। निर्धनता घर घर में छाई
प्रतिदिन बढ़त दरिद्र अपारा। यत्न अनेक टरत नाहिं टारा
भारी भूप धनाढ्य नशाये। इन कुरीति वश राज्य गमाये
धीर वीर सब ही घबराये। ख़र्च बढ़ाय बहुत पछिताये
अति दुख पावें तुमरे भाई। जिनकी विपति कही नहिं जाई
प्रतिदिन भोगत अति कठिनाई। दुसह दुःख नाहिं देखा जाई

दो० अधिक ख़र्च दुखरूप है महा विपति आगार (घर)
पिता पुत्र सम्बन्धि पुनि होवत सभी ख़ुआर

अथ विवाह महात्म

ब्याह भये पीछे धनी धन मांगत सब आय
नारिन के भूषण बसन सबही लेत छिनाय
घर की कुरकी होत जब भरु डौंडी पिट जात
अद्भुत बाजे बाजहीं शोभा अधिक लखात
पिटत मनादी नगर में जान लेय सब कोय
यह बाजा रमणीक अति शोभा अद्भुत होय

चौपाई

लेनदार नित घर पै आवें। घर दुकान नीलाम करावें
नगर नगर डौंड़ी पिटवावें। मूर्ख जनन की कीर्ति बढ़ावें
बजे डुगडुगी उत्तम बाजा। जान लेत सब रैयत राजा

मूसबमल ने व्याह रचायो। अंगरेज़ी बाजा बजवायो
पुनि नाच करायो। महा मूर्ख सर्वस्व गमायो।
निज दुर्मति के ये फल पावें। घर लुटाय मूरख कहलावें
निन्दावश परदेश सिधारें। किलनं आत्मघात कर डारें
गिरें कूप अथवा विष खावें। महा घोर यह पाप कमावें
दो॰ फुलवारी बाजा सभी कछु नाहिं करत सहाय
मान बड़ाई जगत की सभी धूर मिल जाय
झूंठे मूर्ख खुशामदी ढिग नाहिं आवत कोय
परम सहाई द्रव्य है सो तुम दीनो खोय
धर्मलोक परलोक तन नष्ट करत मति हीन
पुत्र पौत्र ऋण फांस में आप नरक लव लीन

चौपाई

जिहि सन्तति हित जन्म गमायो। पालन हेत धर्म बिसरायो
जिन पुत्रन हित कष्ट उठाये। तिनके हित विप वृक्ष लगाये
बर्ते हार्द्ध कुरीति अपारा। तिनका फल भोगे परिवारा
बहुत विपति पुत्रादि उठावें। ऋण हत्या में जन्म बंधावें
दो॰ इन कुरीति वश जगत में फूटहि फूट दिखात
भारत को गारत कियो विपति बढ़ी दिन रात

चौपाई

फूट गंड़ का बजा ढंढोरा। भारत कष्ट सिंधु में बोरा
घर की फूट महा दुख दाई। प्रेम रीति सुख खानि गमाई
भारत को विध्वंस करायो। सर्व सुखों का सिंधु सुखायो
दारुण दुःख मूल यह जानो। सर्व नाश का कारण मानो
दुष्ट रीति फल कछुक बतायो। भय विस्तार न अधिक सुनायो

दुख को अंत न देत दिखाई। सिंह सर्पवत तजें भलाई
कहं लो इनकी कहूं कहानी। है प्रत्येक विपति की खानी
जिनके सब कुरीति मन भाई। तिनकी गति कछु कही न जाई
एक एक ने जगत नशायो। तुमरे गृह सब दल चलि आयो
चहुं दिशि से अब कीन्ह चढाई। तुमको निद्रा बहुत सदाई
कौन भांति तुम कुशल विचारी। किहि कारण निज चित विसारी
क्या भरोस जिय माहिं समायो। किसके बल उद्यम विसरायो
सागर सम यह कष्ट तिहारा। सभा बिना नहिं होय उबारा
बहुत सुजन मिल यही बिचारा। कीजे सभा होय निस्तारा
दो० अग्रबंश हित कारिणी थापी सभा बिसाल
यथायोग्य सब सुजन मिल सदा करो प्रतिपाल

चौपाई

एक मात्र यह रक्षक जानो। या बिन जीवन दुर्लभ मानो
ज्ञातिसभा सर्वस्व निहारो। अवर नहीं दुख मेटन हारो
समझ सोच देखो मन माहीं। इसकी उन्नति विन सुख नाहीं
चहुं दिशि दुःख सिंधु दर्शावे। वार पार कहुं दृष्टि न आवे
अपनो उदर भरे संसारा। पशु पक्षी सब करें अहारा
है दुर्लभ जन पर उपकारी। सो कुल धन्य पिता महतारी
अधिक नारि नाहीं जग ऐसी। जासु पुत्र जग होय हितैषी
सो जननी जो अस सुत जावे। तन मन धन परहित लगावे
जिहि नारी अस सुत नहिं जायो। वृथा गर्भ निज रूप गमायो
ताते बांझ भली जग नारी। कुल दूषण नाहिं होय अनारी
जन्म धार उपकार न कीनो। पर हित विन धिक जग में जीनो
दुःख व्यर्थ माता को दीनो। रूप मनोहर बल हर लीनो

जिस जननीके पुत्र ने निज कुल हित नहिं कीन
वृथा गर्भ नौ मास वसि जननी को दुख दीन

चौपाई

जो तुम जान लियो हिय माहीं। जाति सभा बिन सुख कहुं नाहीं
तो कत हेत छिपे घर जाई। धर्म युद्ध ते पीठ दिखाई

दो० तीन भेद हैं जनन के पृथक पृथक गुण गाव
उत्तम मध्यम नीच पुनि सब के सुनो स्वभाव

चौपाई

विघ्न भीत शुभ काज न करहीं। ते निकृष्ट जग में दुख भरहीं
मध्यम रुचि सों काज बनावें। विघ्न परे फिर ढिग नहिं आवें
उत्तम जन की सुनो कहानी। यद्यपि दुःख सहें अति हानी
बिना किये कारज नहिं छोड़ें। कष्ट सहें पर मुख नहिं मोड़ें
बार बार नित विघ्न सतावें। कारज बीच छोड़ नहिं जावें
कोटि २ संकट चलि आवें। तदपि काज शुभ पार लगावें
जिस कारज को हाथ लगावें। अन्तिम फल करके दिखलावें
धीरज धर शुभ काज बनावें। ते जन जग में श्रेष्ठ कहावें
श्रेष्ठ कार्य से पीठ दिखावें। ते जग में नामर्द कहावें
सभ्य जनों में हंसी करावें। उभय लोक में सुख नहिं पावें
कायरता निज मन से छोड़ो। धर्म युद्ध से मुख मत मोड़ो
सन्मुख होय लड़ो रण धीरा। सभा प्रेम नहिं छांडो बीरा
प्रथम जगत में सिंह कहाये। पीछे क्यों कायर ठहराये
बार २ नर तन नहिं पावो। जग में पर उपकार कमावो
मार पीट का युद्ध न जानो। ज्ञान उन्नती युद्ध बखानो
स्वार्थ कपट आलस्य अभिमाना। द्वेष ईर्षा रिपु बलवाना

बैर बिरोध कुरीति अपारा। परम शत्रु दल यही तुम्हारा
डाइन क्रूर महा हत्यारी। शत्रुन की जानो महतारी
चहो सब सुख तुम जग माहीं। इन बश कीन बिना सुख नाहीं
विद्या सुमति शस्त्र तन धारो। आलस आदि शत्रु हन डारो
ध्यान धरो पुरखन की करणी। जिनकी शोभा जाय न बरणी
दशरथ सगर शिवी अमरीशा। श्रीयुत रामचन्द्र अवधीशा
द्रोणाचार्य्य भीष्म बलवंता। अर्जुन भीमसेन रिपु हन्ता
करण दधीच हरिश्चन्द्र राऊ। धर्म युधिष्ठिर सत्य सुभाऊ
ऋषि मुनि धनपति भूपति नाना। जिनका यश सब जग ने जाना
परहित में निज तन दे डारे। दीनन के शुभ काज समारे
पुत्र नारि निज राज्य लुटाये। धर्म हेतु बहु कष्ट उठाये
शरणागत निर्भय कर दीने। बचन कहे सो पूरे कीने
पर उपकार कदापि न छोड़ा। प्राण दिये पर सत्य न छोड़ा
धर्मयुद्ध नाहिं कबहूं त्यागा। उन बिन भारत भया अभागा
उनके कुल में अस सुत जाये। हाय शोक निज बंश नशाये
जन्मत ही जो काल न खाये। जिये जगत कुल नाम डुबाये
जन्मत क्यों न मुई महतारी। कुल कलंक अब भये अनारी
जन्मत ही कायर मर जाते। पुरखन का नाहिं बंश लजाते
इस जीवन से मरणो नीको। पर उपकार बिना सब फीको
पशू मरे सो काज चलावे। मानुष तनु कछु काम न आवे
जीवित भला करो सब कोई। उभय लोक अस्य सुख होई
अग्रवंश की सार न जानी। तो व्यर्थ तुम आयु सिरानी
अग्रवंश उन्नति नाहिं कीनी। सब ही बात डोब तुम दीनी
जो तुमरे मन आलस आयो। वृथा अग्रकुल नाम धरायो

बड़ी छोरि जग जाति अनेका। प्राय: सबने कीयो एका।
निज निज जाति उन्नती कीनी। हानि जनक रीती सब दीनी।
अग्र वंश केहि कारण सोयो। क्यों आलस वश सर्वस खोयो।
बना बनाया काज डुबोयो। सभा प्रेम बिन करत बिगोयो।
जग विख्यात अग्र कुल भारी। निज उन्नति में रहे पिछारी।
अग्रवंश जग नाम कहायो। रहे पिछारी नाम लजायो।

दो० अग्रवंश शुभ नाम तव सब जानत जग माहिं
रहे पिछारी सबन सों तनक लजावो नाहिं
हृढ़ उन्नति करि जाति की नाम सफल कर लेउ
अथवा पिच्छू कुल कहो अग्र नाम तजि देउ

चौपाई

उठो वीर उद्यम मन धारो। हानि लाभ जातीय विचारो।
सभा प्रेम कर फूट निवारो। सन्तति के हित रीति सुधारो।
भ्रातृ गणन को कष्ट विडारो। पुरखन की कीरति बिस्तारो।
सो उपाय सब मिल निर्धारो। जेहि विधि हो कल्याण तिहारो।
यत्न अनेक करो सुघराई। जाति सभा बिन विपति न जाई।
जो तुम निज सन्तति हित कारी। जाति सभा निज लेउ उबारी।
दु:ख सिन्धु से बचवो चाहो। जाति सभा को पार लगाओ।
सो आचार करो सब कोई। अग्रवंश हितकारक होई।
गृह कारज में ज्ञान गमावें। सभा नाम सुन जीव चुरावें।
कौन विपति ईश्वर ने डारी। दो घंटे का जाना भारी।

दोहा

सुनत नाम शनिवार को तन मन होत मलीन
हाय दैव कैसी भई कौन विपति यह दीन